जैं

जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर

✻ लेखक ✻

सुरेश जैन (आई.ए.एस.)

30 निशांत कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) 462003
मो. 9425010111

✻ प्रकाशक ✻

श्री दिगंबर जैन युवक संघ

केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- 0731-4003506, मो.: 8989505108, 6232967108

- जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर
- आशीर्वादः **परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज**
- लेखक – **सुरेश जैन (आई.ए.एस)**
  30, निशांत कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) 462003, मो. 9425010111
- प्रथम आवृत्ति – 2021
- संस्करण : 2200

प्रकाशक : **श्री दिगंबर जैन युवक संघ**
केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- 4003506, मो.: 8989505108, 6232967108

प्राप्ति स्थान :

1) **श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर**
विद्यासागर नगर, बॉम्बे हॉस्पिटल के पास
ए.बी. रोड, इंदौर (म.प्र.) 0731-4003506, मो.: 8989505108

2) **श्री जयकुमार जैन, मंत्री**
जैन तीर्थ नैनागिरि जिला छतरपुर (म.प्र.)
मो : 9827273810

3) **श्री मोतीलाल जैन सांधेलीय**
नैनागिरि भवन, दलपतपुर जिला सागर (म.प्र.)
मो. 9407013711

4) **श्री शिखरचन्द्र जैन, प्रबंधक**
जैन तीर्थ नैनागिरि जिला छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9407533103

5) **श्री सुमति प्रकाश जैन, प्राचार्य**
सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
नैनागिरि जिला छतरपुर (म.प्र.) मो. 9424366732

न्यौछावर राशि : सौ रूपये मात्र

अक्षर रूपाकंन : **आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060**

मुद्रक : **मोदी प्रिन्टर्स**, 76-बी पोलोग्राउण्ड इण्डस्ट्रीयल इस्टेट,
पत्रिका प्रेस के पीछे, इंदौर मो. 9826016543

*सर्वाधिकार सुरक्षित प्रकाशकाधीन

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ क्रंमाक
01.	आत्मीय आशीर्वाद- मुनि प्रमाणसागर	04-05
02.	आमुख- सुरेश जैन	06-11
03.	प्रकाशकीय - ब्र. जिनेश मलैया जी	12-12
04.	जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर	13-17
05.	नैनागिरि तीर्थ पर निर्मित समवसरण मंदिर और आचार्य विद्यासागर	18-23
06.	मूकमाटीः प्रशासनिक एवं न्यायिक दृष्टि	24-28
07.	मुनिवर समयसागर जी और योगसागर जी बने निर्यापक मुनि	29-35
08.	मुनिवर योगसागर जी नैनागिरि स्थित सिद्धशिला पर विराजे	36-36
09.	मुनिवर श्री समयसागर जी की नैनागिरि यात्रा	37-38
10.	जैन तीर्थ नैनागिरि में संस्थापित संयमकीर्ति स्तंभ	39-42
11.	प्रशासन एवं प्रबंध में अध्यात्म का अवदान	43-48
12.	आचार्य विद्यासागर जी के निर्यापकत्व में नैनागिरि से संबद्ध साधकों और नैनागिरि में हुई समाधियाँ	49-53
13.	समग्र के चौथे भाग का प्रकाशकीय	54-55
14.	आमुखः समग्र का तृतीय संस्करण	56-58
15.	बड़े बाबा की प्रतिमा का संस्थापन	59-62
16.	तीर्थंकर विशेषांक- नैनागिरि तीर्थ और आचार्य विद्यासागर, 1978	63-68
17.	आचार्य श्री के नैनागिरि के तेरह प्रेरक प्रसंग	69-79
18.	विलक्षण सूझबूझ के धनी सुरेश जैन आई.ए.एस श्री राघव जी भाई	80-83
19.	सुरेश जैन द्वारा विदिशा में किये गये कार्य- डॉ. पंकज जैन	84-86
20.	जीवन परिचय	87-87

आत्मीय आशीर्वाद

मुनि श्री प्रमाणसागरजी महाराज

भोपाल नगर के जैन मंदिरों की यात्रा करते समय 7 जनवरी, 2020 को हमने विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट का अवलोकन किया। संस्थान के संस्थापक प्रबंध संचालक श्री सुरेश जैन ने संस्थान के आकल्पन, संस्थापन, सफल संचालन और चतुर्मुखी विकास के लिये अनेक अवसरों पर हमसे आशीर्वाद प्राप्त किया। दो दशकों बाद संस्थान की वर्तमान प्रगति देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। गत 25 वर्षों में श्री सुरेश जैन के सक्षम और कुशल नेतृत्व, उनके सतत कठिन परिश्रम और संस्थान के न्यासी मण्डल के सतत सहयोग से संस्थान के ऊँची सफलतायें प्राप्त की है। संस्थान को सूतवाला परिवार ने 20 एकड़ भूमि प्रदान की। बैनाड़ा परिवार, आगरा ने सर्वप्रथम रूपये पचास लाख का दान दिया। सुरेश जी ने विदेश से एक करोड़ से अधिक दानराशि प्राप्त कर शांति भवन का निर्माण कराया। देश के विभिन्न व्यक्तियों से बड़ी दानराशि प्राप्त कर ज्ञानोदय भवन एवं त्रिशला भवन का निर्माण कराया। पूरे संस्थान परिवार को संगठित रखा। भोपाल के हृदय स्थल में स्थित इतनी बड़ी संपत्ति को सुरक्षित रखा। अतः उन्हें आत्मीय आशीर्वाद।

यह उल्लेखनीय है कि विदिशा नगर में स्थित विशाल सूर्य मंदिर (बीजा मण्डल) को औरंगजेब ने सन् 1682 में ध्वस्त कर ईदगाह की स्थापना कर दी थी। 310 वर्षों के पश्चात् 23 जनवरी, सन् 1992 को हमारे प्रवास के समय विदिशा के तत्कालीन कलेक्टर सुरेश जी ने विशाल ईदगाह के नीचे से 500 से अधिक हिन्दु देव प्रतिमायें निकलवाई थी। इसी प्रकार उन्होंने दिनांक 17 मार्च, 1992 को पारित आदेश द्वारा 16 एकड़ निजी भूमि, जिस पर मेला

भरता था, सरकार के स्वामित्व और आधिपत्य में लेकर श्री रामलीला मेला समिति को सौंप दी तथा इसके बदले पारस्परिक सहमति में भूमि स्वामियों को उतनी ही अन्य शासकीय भूमि हस्तांतरित कर दी। अतः पुरी के शंकराचार्य जी ने सुरेश जी का सम्मान करते हुये उन्हें प्रशस्ति पत्र भेंट किया था।

हमें यह भी स्मरण है कि उदयगिरि में सुरेश जी की प्रेरणा से 30 एकड़ निजी भूमि प्राप्त कर शीतल विहार न्यास की स्थापना की गई। भूमि प्राप्त करने और न्यास के गठन में श्री जैन का आधारभूत और सराहनीय सहयोग रहा। श्री जैन इस न्यास के संस्थापक संचालक है। श्री जैन की इन उपलब्धियों के कारण उन्हें विधायक का चुनाव लड़ने के लिये भी आमंत्रित किया गया था। किन्तु उन्होंने यह प्रस्ताव विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया था।

समाज से मेरा आग्रह है कि सामाजिक कार्य करना बहुत कठिन होता है। अतः सामाजिक कार्य करने वाले सुरेश जी जैसे अच्छे अधिकारियों के इतने बड़े ऐतिहासिक कार्यों की सराहना करें और उनहें आगे बढ़ने के लिये प्रेरणा दें। उन्हें स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये अपनी मंगलकामनायें प्रदान करें।

यह प्रसन्नता दायक है कि वरदत्तादि मुनिवरों की सिद्धभूमि, भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भवधारी-गजराज बज्रघोष, जो नैनागिरि से स्वर्ग पधारे थे, की तपोभूमि, भगवान पार्श्वनाथ की समवसरण भूमि जैन तीर्थ नैनागिरि और हमारे दीक्षा गुरु आचार्य श्री विद्यासागर जी पर केन्द्रित **नैनागिरि जैन तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर** पुस्तिका प्रकाशित हो रही है। इसके लेखन के लिये सुरेश जी को मंगल आशीर्वाद।

आमुख

भगवान नेमिनाथ के काल से नैनागिरि जैन तीर्थ मानवता की शांति और आध्यात्मिक क्रांति का सुप्रसिद्ध, प्रभावी एवं प्रमुख स्त्रोत रहा है। आचार्य विद्यासागर जी ने इसके उद्‌गम स्थल सिद्धशिला पर बैठकर अनुपम एवं अपरिमित आध्यात्मिक ऊर्जा अपने व्यक्तित्व में आत्मसात की। नैनागिरि में सुप्रसिद्ध मुनिवरों और आर्यिकाओं को दीक्षा देकर वे आध्यात्मिक क्रांति के जनक बने। मूकमाटी गुनगुनाकर उन्होंने असाधारण शांति प्राप्त की उन्होंने नैनागिरि से मोक्ष पधारे आचार्य वरदत्तादि से विशाल शालि संपदा एकत्रित की। नैनागिरि में अपने शिष्यों को दीक्षित करते हुये इस विशाल शालि-संपदा के पांच-पांच बीज प्रत्येक शिष्य को प्रदान किये। इनमें से कुछ मुनिवरों और आर्यिका-श्रेष्ठियों ने अपनी उत्कृष्ट तपस्या और प्रतिभा के द्वारा इन दानों को सिंचित, पल्लवित और पुष्पित कर पूरे राष्ट्र में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में बिखेर दिया है। इन बीजों के सुगंधित फूल एवं सुंदर फल अब जन-जन को प्राप्त हो रहे है।

नैनागिरि की सिद्धशिला पर बैठकर कन्नड़, हिन्दी, प्राकृत और संस्कृत भाषा के सुप्रसिद्ध विद्वान गुरुवार ने जागरूकता पूर्वक पुरानी चेतना को रूपांतरित कर प्रगतिशील नवचेतना का रूपांकन किया। प्रबंधन, चिकित्सा और शैक्षणिक क्षेत्रों में महाविद्यालय स्थापित करने के विचार पर अपने चिंतन को केन्द्रित किया। भगवान महावीर की प्राकृत और संस्कृत भाषा में प्रसारित दिव्य ध्वनि को हिन्दी और हिंदी की प्रमुख बोली बुन्देलखण्डी में प्रचारित एवं प्रसारित किया।

सह्यादि और विन्ध्यगिरि के बीच विशाल सेतु का निर्माण करते हुये आचार्य प्रवर ने नैनागिरि पर्वत पर स्थित वनस्पतियों और बहती वायु की उपचारात्मक शक्तियों की पहचान की। बड़े कूप के जल के जीवाणु प्रतिरोधक तत्वों की शोध की। इस जल में विद्यमान खनिजों के संतुलित संघटन और घुली हुई प्राण वायु का आसेवन कर अपनी भीषणतम बीमारी पर विजय प्राप्त की। पवित्रीकरण

की प्रक्रियाओं के माध्यम से जन-जन के शरीर और मन को पवित्र किया।

आचार्य विद्यासागर जी के नैनागिरि में सर्वप्रथम चातुर्मास 1978 के अवसर पर हमने नैनागिरि का संक्षिप्त परिचय लिखा था। हमारे पिता सिंघई सतीशचन्द्र और माता केशरदेवी ने इस पुस्तिका की दो हजार प्रतियाँ प्रकाशित कर भेंट की थी। इस पुस्तिका में से हमें निम्नांकित पद उद्धरित कर प्रसन्नता हो रही है।

''दिगंबर-मुनि-कुल-कमल-दिवाकर नैनागिरि के सुरम्य अध्यात्म क्षितिज पर अपनी जाज्वल्यमान किरणें प्रकीर्ण कर रहा है। श्रद्धेय श्री दौलतराम जी वर्णी तथा प्रातः स्मरणीय गणेशप्रसाद जी वर्णी द्वारा बरसायें गये ज्ञान कण आज विद्यासागर बनकर चतुर्दिक फैल रहे हैं। चतुर्थकाल के वरदत्तादि पंच ऋषिराजों की मोक्षभूमि के बीहड़ वन के आच्छादन को तोड़कर पंचम-काल के महान महर्षि की पगरज से यह तीर्थ विकसित तथा सुरभित हो रहा है। प्रतीति हो रही है कि नैनागिरि में एकत्रित जन-समूह चतुर्थकाल के महर्षियों की विद्यारश्मियों का स्वागत कर रहा है।''

इसी अवसर पर नैनागिरि में जन्मे श्रद्धेय पण्डित दरबारीलाल जी कोठिया की प्रेरणा से हमारे जनक-जननी ने आचार्य विद्यासागर द्वारा बसन्ततिलका छंद में संद्यः विरचित हिन्दी पद्यानुवाद के साथ द्रव्य संग्रह की पांच हजार प्रतियाँ सर्वप्रथम प्रकाशित कर जन-जन को भेंट की थी। इन दोनों पुस्तिकाओं में प्रकाशित आचार्य श्री के युवा जीवन के चित्र पुनः-पुनः दर्शनीय है।

यहाँ यह उल्लेखित करना उपयुक्त होगा कि नैनागिरि में बैठकर बाबा दौलतराम वर्णी ने सन् 1902 में छंदोदय काव्य की रचना की थी। इसी अनुक्रम में सन् 1904 में नैनागिरि पूजन सहित 15 अन्य छोटी-छोटी पूजन लिखी थीं। हमने सभी सोलह रचनाओं की हस्त लिखित प्रतियां खोज कर उनका संपादन किया और भारतीय ज्ञानपीठ ने सभी रचनायें दो स्वतंत्र खण्डों में प्रकाशित की हैं।

नैनागिरि में प्रवेश के अवसर पर सन् 1978 में आचार्य श्री के तीन शिष्य थे।

तीव्र गति से बढ़ते हुये शिष्यों/ शिष्याओं की संख्या 1987 में 45 हो गई। नैनागिरि में ही 1987 में 11 आर्यिकाओं और 12 क्षुल्लकों की दीक्षा संपन्न हुई। देश में सर्वप्रथम इतनी बड़ी संख्या में आर्यिका दीक्षा हुई। इस प्रकार दस वर्षों (1978 से 1987) की अवधि में संघ की सदस्य संख्या में 15 गुनी वृद्धि हो गई।

सिद्धशिला पर सुरेश जी और उनका परिवार

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी के द्वारा मूकमाटी का लेखन पिसनहारी मढ़िया जबलपुर म.प्र. में षटखण्डागम द्वितीय वाचना प्रसंग पर बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दीक्षा कल्याणक दिवस वीर निर्वाण संवत् 2510, विक्रम संवत 2041, वैशाख कृष्ण दशमी, बुधवार (25 अप्रैल सन् 1984) को प्रारंभ किया गया। इस महाकाव्य का समापन आचार्य श्री द्वारा श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि, जिला छतरपुर म.प्र. में आयोजित श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक एवं त्रि-गजरथ महोत्सव के अवसर पर केवलज्ञान कल्याणक दिवस, माघ शुक्ल त्रयोदशी वीर निर्वाण संवत् 2513, विक्रम संवत् 2043, बुधवार (11 फरवरी सन् 1987) को किया गया।

मूकमाटी के प्रस्तवन मानस तरंग में गुरुचरणारविन्द चंचरीक विशेषण से गुरुदेव ने नैनागिरि की अपनी ऐतिहासिक आध्यात्मिक सांस्कृतिक और साहित्यिक उपलब्धियों का निम्नांकित शब्दों में वर्णन किया है :-

मढ़िया जी (जबलपुर) में द्वितीय वाचना का काल था

सृजन का अथ हुआ और नयनाभिराम-नयनागिरि में पूर्ण पथ हुआ
समवसरण मंदिर बना जब गजरथ हुआ।

पर्वत के पीछे वरदत्त वन में स्थित चालीस हजार वर्ष प्राचीन सिद्ध शिला पर बैठकर गुरूवर ने अपने मधुर कण्ठ से मूकमाटी की पंक्तियॉ सुनाई और बारह पदों में विरचित और निर्बंध गुरु के छंद में प्रकाशित आध्यात्मिक भक्तिगीत ''अहो यही सिद्ध शिला'' के द्वारा सिद्ध शिला का गुणानुवाद किया। मूकमाटी को चिरस्थायी स्वरूप देने के लिये नैनागिरि में मूकमाटी भवन का विकास किया जा रहा है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी के आशीर्वाद से जबलपुर में भारतवर्षीय प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्था की स्थापना की गई । हमें इस संस्थान की परिकल्पना करने, इसका संविधान बनाने और इसके संस्थापक संचालक के रूप में अपनी सेवायें प्रदान करने का सौभाग्य मिला। यह अभिनव प्रयोग था। इसकी जानकारी मिलते ही हमारे यौवनकाल के साथी रहे आचार्य पद्मसागर जी के शिष्य आचार्य नय पद्मसागर जी ने हमें मुम्बई आमंत्रित किया । उनके संकेतानुसार हमने प्रशिक्षण संस्थान के संबंध में उनसे विस्तृत चर्चा की तथा उन्हें ऐसा ही संस्थान राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिये योजना बनाकर दी। इसके परिणाम स्वरूप जीतो का जन्म हुआ। जबलपुर की इस संस्था और जीतो से प्रशिक्षित अनेक युवक और युवतियाँ अब प्रत्येक वर्ष लोक सेवा आयोग तथा विभिन्न राज्यों के सेवा आयोगों के माध्यम से भारतीय प्रशासनिक सेवा एवं अन्य सेवाओं में प्रवेश पाकर पूरे राष्ट्र में अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं।

मुनिवर क्षमासागर द्वारा विरचित और अपने गुरुदेव विद्यासागर जी के जीवन पर केन्द्रित आत्मान्वेषी एक शिशु की सिद्ध यात्रा है। विद्याधर से विद्यासागर बनने की कहानी है । शरद पूर्णिमा के सिद्धाचल तक जाने की यात्रा है । आत्मान्वेषी के पठन से ज्ञानसागर जी के अहं के निःशेष विसर्जन, सम्पूर्ण

समर्पण और वीतरागता की पराकाष्ठा की पावन ध्वनि सर्वत्र प्रगट होती है। सुप्रसिद्ध और सशक्त गीतकार मुनि क्षमासागर ने आत्मान्वेषी में गुरुदेव के 18 वर्षों (1978-1995) के 45 प्रेरक प्रसंग सम्मिलित किये है। बुन्देली बोली की लोच और लोक स्पर्श से भरपूर मंजी हुई भाषा में लिखे सभी प्रसंगों में से हमने नैनागिरि से संबंधित 13 प्रसंग, जिनकी संख्या विभिन्न स्थलों की तुलना में सर्वाधिक है, लेकर इस पुस्तिका में सम्मिलित किये है। प्रथम प्रसंग का बच्चा विकास सिंघई अपने सहयोगियों के साथ अब लंदन में जैन मंदिर का निर्माण करा रहा है। नैनागिरि में संचालित जैन विद्यालय को भरपूर सहयोग दे रहा है। अनुभूति की आर्द्रता से ओतप्रोत सभी प्रसंग जन-जन की आध्यात्मिक प्रगति के लिये प्रासंगिक, पठनीय और सतत स्मरणीय है।

हमने गत अर्द्ध शताब्दी में हिन्दी तथा अंग्रेजी में जैन तीर्थ नैनागिरि, गुरुदेव और उनके संघस्थ मुनिवरों के आध्यात्मिक, सामाजिक और शैक्षणिक अवदानों पर केन्द्रित शताधिक लेख लिखे है । सभी आलेख राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किये गये है। इन लेखों में से चयनित बारह आलेख **नैनागिरि जैन तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर** में संकलित कर प्रकाशित किये जा रहे है।

नैनागिरि में दीक्षित वरिष्ठ मुनि समतासागर जी और ब्रह्मचारी अवस्था में सिद्धशिला पर बैठकर घनघोर तपस्या करने वाले मुनिवर प्रमाणसागर जी को शत-शत नमोस्तु। दोनों सुप्रसिद्ध श्रमण अपने प्रवचनों में नैनागिरि तीर्थ, हमारे और न्यायमूर्ति विमला जी के जीवन की घटनायें सुनाकर हमें उपकृत करते रहते हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी यह कृपा सिद्ध पथ पर बढ़ने में हमें सहायक हो।

पूज्य ऐलक सिद्धांतसागर जी की प्रेरणा से वरिष्ठ, अनुभवी और अत्यधिक परिश्रमी संपादक ब्र. श्री जिनेश मलैया के द्वारा इन्दौर से देश की सुप्रसिद्ध पत्रिका संस्कार सागर नियमित रूप से गत पच्चीस वर्षों से प्रकाशित हो रही है।

आमुख

नैनागिरि जैन तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर के प्रकाशन के लिये हमें सिद्धांतसागर जी तथा भैया जी के आत्मीय स्नेह के प्रति हम अनुगृहीत है। भगवान से प्रार्थना है कि वे सदैव द्वादशांगवाणी का प्रचार-प्रसार करते हुए मोक्ष के पथ पर आगे बढ़ते रहे। हमें विश्वास है कि पाठक इस पुस्तिका से जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर जी के विविध पक्षों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे और अपने जीवन का विकास कर सकेंगे।

प्रकाशकीय

रैशिंदगिरि मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले का अत्यन्त रमणीय तीर्थ है प्रकृति के सुरम्य वातावरण में भगवान पार्श्वनाथ का कभी समवशरण वैभव इस तीर्थ पर अपनी शोभा बिखेर चुका था साथ ही आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के तीन वर्षायोग इस पावन तीर्थ पर व्यतीत हो चुके है बुन्देली की माटी त्याग तपस्या की भूमि नैनागिरि तीर्थ पर भगवान पार्श्वनाथ के समवशरण रचना को देखकर किस भव्य आत्मा का मन ऐसे तीर्थ पर रूकने का नहीं होगा वरदत्त आदि मुनि जहां से निर्वाण को प्राप्त हुये हैं ऐसे नैनागिरि सिद्धक्षेत्र की महिमा देव भी गाते हैं।

गणेश प्रसाद वर्णी जी एवं क्षुल्लक चिदानन्द सागर जी ने नैनागिरि को शिक्षा का केन्द्र बनाया था और दौलतराम वर्णी जी ने ग्रंथ लेखन का कार्य किया था। आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने भी कई ग्रंथों का लेखन इस सिद्ध क्षेत्र पर किया है।

नैनागिरि सिद्ध क्षेत्र के भक्त एवं समर्पित सतीशचंद जैन ने इस तीर्थ की सेवा करके क्षेत्र को कई दृष्टियों से उन्नति शील बनाया है तथा इन्हीं सतीशचंद जी के सुयोग्य पुत्र सुरेशचंद जैन (आई.ए.एस) ने अपने साथ नैनागिरि शब्द जोड़कर खूब प्रचार प्रसार दिया एक आई.ए.एस अधिकारी होने के बावजूद भी आपने कभी नैनागिरि को नहीं भुलाया आपकी धर्मपत्नी विमला जैन उच्च न्यायालय की न्यायाधीश बनने के उपरांत भी अपने त्यौहारों को नैनागिरि में ही मनाया है। नैनागिरि में विद्यासागर पुस्तक लिखकर सुरेश जैन (आई.ए.एस) ने धूमिल स्मृतियों को स्पष्ट करने का गंभीर प्रयास किया है, एतदर्थ आप अनेक सः साधुवाद के पात्र हैं यह लघु पुस्तिका पाठकों को नैनागिरि सिद्ध क्षेत्र के प्रति श्रद्धा स्थापित करने में उपयोगी होगी एवं इस पुस्तिका के संस्मरण श्रावकों के लिये उचित मार्गदर्शन करेंगे।

सुरेश जी की गत हीरक जयंति पर उनके अवदान को रेखांकित करते हुये अनेक लेख विभिन्न राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पत्रिकाओं मे प्रकाशित किये गये है। इनमें से निम्नांकित दो आलेख इस पुस्तिका में प्रकाशित किये जा रहे हैं :-

1. विलक्षण सूझबूझ के धनी सुरेश जैन आई.ए.एस--- श्री राघव जी भाई
2. सुरेश जैन द्वारा विदिशा में किये गये कार्य--- डॉ. पंकज जैन

जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर

पुरातत्वविदों द्वारा घोषित चालीस हजार वर्षो से अधिक प्राचीन नैनागिरि जैन तीर्थ हम सब की आस्थाओं का प्रमुख केन्द्र हैं। यह तीर्थ भगवान नेमिनाथ के समवसरण में विराजमान रहे आचार्य वरदत्त और उनके साथी चार मुनियों की सिद्धभूमि है। भगवान पार्श्वनाथ की समवसरण भूमि है। प्राचीनतम सिद्धक्षेत्रों में अपना विशिष्ट महत्व रखने वाले नैनागिरि तीर्थ के प्राचीनतम मंदिरों के गर्भगृह से निकलती आध्यात्मिक शुचिता की तरंगे हमारे मानस को पुलकित और प्रफुल्लित कर देती हैं। इन मंदिरों में विराजमान मूर्तियों के प्रक्षालन से उत्पन्न दिव्य ध्वनियाँ श्रद्धालुओं को चमत्कृत कर देती है। इन मूर्तियों के दर्शन से उत्पन्न अद्‌भूत धार्मिक उत्साह हमें अभिभूत कर देता है। इस तीर्थ पर विराजमान रहे भगवान पार्श्वनाथ, आचार्यों और मुनिवरों की गतिविधियाँ हमें प्रोत्साहित कर देती है। श्रद्धा के मोती बिखेरते हुए भक्ति की किरणें हमें प्रकाशित कर देती है। इस तीर्थ पर समय-समय पर आयोजित आचार्यों और मुनिवरों के समागम उत्सव हमारे मन को उल्लसित कर देते है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी केवल जैन समाज के ही संत नहीं है अपितु उनके चिंतन की व्यापकता में पूरे भारत का हित समाहित है। सहस्त्रों वर्ष पूर्व गुजरात से अपने चार मुनियों के साथ पधारे आचार्य वरदत्त की भाँति राजस्थान में आचार्य बनते ही गुरुदेव समयसागर जी और योगसागर जी के साथ वर्ष 1978 में नैनागिरि पधारे। नैनागिरि में बुन्देलखण्ड के स्वर्णिम आध्यात्मिक इतिहास की रचना करते हुए उन्होंने अनेक क्षुल्लकों, ऐलकों, मुनियों, क्षुल्लिकाओं और आर्यिकाओं को दीक्षा दी। आध्यात्मिक जगत में उन्हें पुनर्जन्म दिया। गुरुवार आध्यात्मिक क्रांति के जनक बने। गुरुदेव ने धार्मिक पवित्रीकरण की प्रक्रियाओं के माध्यम से नवदीक्षित साधुओं के तन और मन को पवित्र किया।

भगवान पार्श्वनाथ का यह समवसरण स्थल गुरुदेव के लिये गत शताब्दि के

सत्तर/अस्सी के दशक में अनजान और अपरिचित था। अतः विद्या के सागर भीतर से सतर्क और सजग रहते हुए इस क्षेत्र के कण-कण को ध्यानपूर्वक देखते थे और श्रोताओं को अपने प्रवचनों में नई-नई जानकारिया देते थे। सभी यात्री और दर्शक उनकी इस सजगता और सतर्कता से सीखते थे। आचार्य वरदत्त और भगवान पार्श्वनाथ की इस तपोभूमि पर आचार्य प्रवर अपने मन, सोच, अनुभव या नजरिये से नहीं अपितु इनसे ऊपर उठकर अपनी चेतना के आधार पर चलते थे। छोटे-छोटे पगों से आगे बढ़ते थे। अपने मन और मस्तिष्क की सीमाओं से परे जाकर श्रोताओं के अहं और भ्रम को तोड़ते थे। असाधारण संतों की भांति वे अपने मन और मस्तिष्क से नहीं अपितु अपनी चेतना से मार्गदर्शन प्राप्त करते थे। मन की उथल-पुथल को छोड़कर आध्यात्मिकता के दीप प्रज्ज्वलित करते थे। विन्ध्याचल की शिखर पर बैठकर आत्म चिंतन करते हुए विशुद्ध ऊर्जा प्राप्त करते थे। नैनागिरि पर्वत के कंकर को शंकर बनाकर अपने दर्शकों ओर श्रोताओं को सहजता और सरलता पूर्वक भेंट करते थे। जल मंदिर में प्रातः बैठे इस योगशास्त्र के पारदर्शी जीवंत महापुरुष का बाल सूर्य की आभा से स्वर्णपुंज की भाँति प्रकाशित व्यक्तित्व जन-जन को अपनी और सहज ही आकर्षित करता था।

गत शताब्दि के सत्तर और अस्सी के दशक में आचार्य श्री के सान्निध्य में नैनागिरि में विशाल समवसरण मंदिर के निर्माण जैसी अनेक बड़ी उपलब्धियों की चर्चा अवश्य कम हुई है किन्तु यह उल्लेखनीय है कि नैनागिरि में उन्होंने युवक और युवतियों को मोक्ष पथ पर आगे बढ़ने के लिये अभिमंत्रित किया। नैनागिरि में बनी/गुंथी विद्यासागर माला के पुष्प आज देश को ही नहीं अपितु पूरे विश्व को अपनी कीर्ति की सुरभि से सुगंधित कर रहे है। आध्यात्मिक शिखर पहुंचकर पूरे देश में अपने यश की पताका फैला रहे है। सम्पूर्ण देश में प्रभावी ढंग से जैन संस्कृति का प्रचार प्रसार कर रहे है।

आचार्य श्री की सफल प्रेरणा और तत्कालीन होशंगाबाद कलेक्टर श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.) के संस्थापक-संचालक के रूप में सतत प्रयासों तथा

दानदाताओं के आर्थिक सहयोग से जबलपुर में अखिल भारतवर्षीय प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गई। इस संस्थान से प्रशिक्षित 300 से अधिक अधिकारी विभिन्न शासकीय विभागों में अपनी सेवायें प्रदान कर रहे है। यहाँ यह उल्लेख करना उपयुक्त होगा कि इस संस्थान का आकल्पन नैनागिरि में ही हो चुका था जब वर्ष 1978 में आचार्य श्री ने नीम के सबसे ऊँचे वृक्ष के नीचे स्थित चबूतरे पर बैठकर प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारियों को अपने सफल आशीर्वाद से अभिषिक्त किया। उनके इसी आशीर्वाद के परिणाम स्वरूप श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) और न्यायमूर्ति विमला जैन जैसे कुछ अधिकारी अपनी अपनी शिखर पर सुशोभित हो सके है।

विमला जी के न्यायमूर्ति बनने पर आचार्य श्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हुये

नैनागिरि की सिद्धशिला पर बैठकर गुरुवार ने जागरूकता पूर्वक पुरानी चेतना को रूपांतरित कर प्रगतिशील नवचेतना का रूपांकन किया और भगवान महावीर की प्राकृत और संस्कृत भाषा में प्रसारित वाणी को हिन्दी में प्रचारित एवं प्रसारित किया। आचार्य पद ग्रहण करने की तीन वर्ष की अल्प अवधि में ही एक कन्नड़ भाषी बालक हिन्दी,प्राकृत और संस्कृत भाषी आचार्य बन गया।

आचार्य प्रवर ने नैनागिरि पर्वत पर स्थित वनस्पतियों और बहती वायु की उपचारात्मक शक्तियों की पहचान की। बड़े कूप के जल के जीवाणु प्रतिरोधक पवित्र गुणों की पहचान कर इस जल में विद्यमान खनिजों के संतुलित संघटन और घुली हुई प्राण वायु का आसेवन कर अपनी गंभीर

बीमारी पर विजय प्राप्त की। पवित्रीकरण की प्रक्रियाओं के माध्यम से जन-जन के शरीर और मन को पवित्र किया।

यह सुखद है कि आचार्य विद्यासागर जी द्वारा प्रदत्त ज्ञानोदय और भाग्योदय के बपन किये गये बीज अब भारत सरकार द्वारा ग्रामोदय और भारत उदय के अभियान के रूप में सिंचित, पल्लवित और पुष्पित किये जा रहे है। आचार्य विद्यासागर के ज्ञानोदय की अनेक झलकियाँ हमें नैनागिरि में निकट से देखने और उनमें सहभागी होने का हमें अद्भुत अवसर प्राप्त हुआ। ऋषीन्द्रगिरि (रेशंदीगिरि) में ही उनके अंतर्मन की सजगता और जीवंतता का प्रत्यक्ष आनन्द प्राप्त करने का अनुपम सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके सामीप्य में रहकर प्रत्येक श्रोता ने अपने व्यक्तित्व के अहंकार की घटती व्यापकता का अनुभव किया।

गुरुदेव अपने मन की धारणा को मन में ही रखकर वास्तविकताओं के साथ-साथ सिद्ध शिला पर बैठकर मूकमाटी की रचना करते थे। हम सबको अपने मधुर कंठ और आल्हादित मुख मण्डल से सुनाते थे। उनकी स्मृतियाँ उनकी चेतना पर हावी नहीं हो पाती थी। वे विचार शून्य चेतना के साथ उठते, बैठते और विचरण करते थे। पूर्ण चेतना और सजगता से अपरिमित शांति का जीवन जीते थे। सिद्ध शिला पर उनके सान्निध्य में बैठकर ऐसे ही आनंद दायक क्षणों का लाभ हम सब प्राप्त करते थे।

आचार्य श्री के प्रभाव से बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सत्तर और अस्सी के दशक से नियमित रूप से युवा साधुओं की संख्या में हो रही अत्यधिक वृद्धि समाज को चौकाने वाली है। कुछ युवा साधुओं ने सफलतम उद्यमियों की भांति बड़ी-बड़ी योजनाओं को अल्पतम अवधि में ही सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर आध्यात्मिक क्षेत्र में वैज्ञानिक परिस्थितियों और आधुनिक पर्यावरण को सुस्थापित किया है। उनकी बहुआयामी सोच ने जैन संस्कृति को विश्वव्यापी सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया है। उनकी रचनात्मक और सृजनात्मक क्षमता से प्रसूत बड़ी-बड़ी आध्यात्मिक संस्थायें देखकर हमें सुखद आश्चर्य और गौरव होता है। अंतराष्ट्रीय और राष्ट्रीय आध्यात्मिक मंचों पर शालीनता पूर्वक

सुशोभित युवा आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर हम विश्व की आध्यात्मिक महाशक्ति बनने की दिशा में अग्रसर हो रहे है।

गत बीसवीं शताब्दि में आचार्य विद्यासागर जी ने मुनि पद पर केवल तीन वर्ष रहकर अपनी 26 वर्ष की युवावस्था में आचार्य पद ग्रहण किया। उनके नेतृत्व में युवा साधुओं ने जैन संस्कृति में नई चेतना और चमक पैदा की है। आध्यात्मिकता के सभी क्षेत्रों में नई पहचान बनाई है। आध्यात्मिक जगत में प्रौढ़ और वृद्ध साधुओं के स्थान पर युवा साधु अपने त्याग और ज्ञान का भरपूर कौशल दिखा रहे है। असंभव को संभव बनाने की सोच और सूझ बूझ से ओतप्रोत इन युवा साधुओं की प्रत्युत्पन्नमति और क्षमता ने प्राच्य परंपराओं को आधुनिक किन्तु विवेकपूर्ण स्वरूप प्रदान किया है। आई.टी.बैकिंग तथा वित्तीय संस्थाओं के कार्यपालिक अध्यक्षों की भांति उनकी नेतृत्व क्षमता युवावस्था में ही तीव्र गति से विकसित हो रही है। गुरुदेव के अप्रत्यक्ष प्रभाव से उनकी भांति युवावस्था में ही अनेक आचार्य बन गये है। उनकी आध्यात्मिक परिपक्वता में अपरिमित वृद्धि हुई है। युवा आध्यात्मिक शक्ति ने अपना चतुर्मुखी प्रभाव सुप्रतिष्ठित किया है।

अब आध्यात्मिक क्षेत्र में युवा साधुओं में अत्यधिक कार्य करने का जज्बा दिखाई दे रहा है। बिना हारे थके अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने की दृढ़ इच्छा शक्ति और पूरी रूचि सर्वत्र दिखाई दे रही है। इक्कीसवीं सदी में देश के सांस्कृतिक क्षेत्र के उज्जवल भविष्य का यह शुभ संकेत है।

आचार्य विद्यासागर जी महावीर के लघु नंदन है। महावीर केवल भगवान ही नहीं अपितु अहिंसा और अनेकांत पर आधारित सांस्कृतिक विचारधारा है। यदि आचार्य श्री और उनके शिष्यों के प्रवचनों से इस विचारधारा के कुछ अंश ही प्रत्येक नागरिक के मन में बैठ जाये तो भारत अवश्य ही विश्व गुरु बन सकेगा और सम्पूर्ण विश्व भारत के समन्वित सांस्कृतिक पथ पर आगे बढ़ने का प्रयास करेगा। महावीर द्वारा प्रदर्शित आध्यात्मिक सजगता, सतर्कता और राष्ट्रीय भावना की त्रिवेणी में स्नान कर सक्षम और पवित्र बनेगा।

नैनागिरि तीर्थ पर निर्मित समवसरण मंदिर और आचार्य विद्यासागर

मध्यप्रदेश में स्थित सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत श्रेणियां हिमालय से भी पुरानी है। विंध्याचल की पर्वत श्रेणियों में प्राचीनतम जैन तीर्थ क्षेत्र नैनागिरि (ऋषीन्द्रगिरि-रेशिन्दीगिरि) स्थित है। यह भारत की आरण्यक संस्कृति का महत्वपूर्ण केन्द्र है। नैनागिरि के प्राचीन मंदिर लोक स्थापत्य कला के श्रेष्ठ उदाहरण है। नैनागिरि तीर्थ पर पांच मुनिवरों ने शुक्ल ध्यान पूर्वक साधना करते हुये मोक्ष प्राप्त किया है। अतः यह सिद्ध क्षेत्र है। भगवान पार्श्वनाथ ने इस तीर्थ की यात्रा कर और यहाँ समवसरण आयोजित कर अपनी चरण रज से इसके कण-कण को पवित्र किया है। अतः यह समवसरण क्षेत्र है। इस तीर्थ के दर्शन करने से स्वर्ग के वैभव एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। समवसरण की स्मृति को चिरस्थायी स्वरूप देने के लिये यहां आचार्य विद्यासागर की प्रेरणा से विशाल समवसरण मंदिर का निर्माण किया गया है। गत सत्तर और अस्सी के दशक में आचार्य विद्यासागर जी अपने सतत संवर्द्धमान संघ के साथ इस तीर्थ पर तीन वार चातुर्मास, दो वार शीत और दो वार ग्रीष्म प्रवास के लिये पधारे।

आचार्य विद्यासागर के 50वें दीक्षा दिवस 28 जून 2017 के अवसर पर संयम स्वर्ण महोत्सव मनाया जा रहा है। इस महोत्सव के गौरव अध्यक्ष श्री अशोक जी पाटनी, किशनगढ़ अध्यक्ष श्री प्रभात जैन, मुम्बई एवं महामंत्री श्री पंकज जैन, दिल्ली है। इस महोत्सव को जैन विद्यापीठ, भाग्योदय तीर्थ, करीला, सागर, म.प्र. के द्वारा संयोजित किया जा रहा है। इसके लिये राष्ट्रीय पदाधिकारियों और संयोजकों को हार्दिक बधाई।

मध्यप्रदेश में विहार के प्रारंभिक वर्षों में आचार्य विद्यासागर जी वर्ष 1977 में 22 फरवरी को अपने संघस्थ तीन क्षुल्लकों-समयसागर, नियमसागर और योगसागर जी के साथ नैनागिरि पधारें थे। उन्होंने नैनागिरि में तीन चतुर्मास (1978,1981,1983) और चार शीत और ग्रीष्मकालीन

(1977,1979,1986,1987) वाचनायें की । आचार्य श्री ने अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से बुन्देलखंड के सहस्त्रों युवक/ युवतियों को आकर्षित किया और नैनागिरि में शताधिक साधुओं को दीक्षित और प्रशिक्षित किया। पूरे प्रदेश में ही नही अपितु पूरे देश में आध्यात्मिक क्रांति के जनक बने गुरुदेव द्वारा नैनागिरि में दीक्षित आचार्य पुष्पदंत सागर, उपाध्याय गुप्तिसागर, मुनिवर समयसागर एवं सुधासागर आदि अनेक मुनिवर एवं गुरुमति जी दृढ़मति जी, मृदुमति जी आदि अनेक आर्यिकायें पूरे राष्ट्र में अपने कीर्तिमान स्थापित कर रहें है।

आचार्यश्री की चिकित्सा, प्रबंधन और शैक्षणिक विद्यालयों का प्रतिवेदन दिखाते हुये वर्ष 1978 नैनागिरि

नैनागिरि में गुरुदेव ने सुदूर अतीत के नेमिनाथ कालीन आचार्य वरदत्तादि पांच मुनिवरों, जो नैनागिरि से मोक्ष गये हैं, की गूंजती प्रतिध्वनियों को सुनकर अनेक दिव्य अनुभव किये है । पवित्र पवन की भांति सर्वत्र सरसराती और गुंजायमान भगवान पार्श्वनाथ की जीवंत दिव्यध्वनि को सुना और अपने व्यक्तित्व में आत्मसात किया है। भगवान पार्श्वनाथ की दिव्य देशना के शब्दों को ग्रहण कर आध्यात्मिक संदेश और संकेत प्राप्त किये है। उनके ऐसे अनुभव और संदेश मूकमाटी में अनेक स्थलों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिध्वनित होते है। उनके प्रवचनों में गूंजते है।

आचार्य श्री ने नैनागिरि पर्वत के पीछे सर्वत्र फैली हरियाली, सौम्यता स्निग्धता और असीम शांति का पूरा आनन्द लिया है। सिद्ध शिला पर बैठकर नैनागिरि से सिद्धत्व प्राप्त कर मोक्ष गये आचार्य वरदत्तादि मुनिवरों एवं भगवान पार्श्वनाथ के सान्निध्य का अनुभव किया है। सिद्धवन की रहस्यमयी निस्तब्धता में बैठकर अपनी अंतरात्मा की ध्वनि को मूकमाटी के शब्दों में रूपांतरित किया है । इसी तपोवन में अपनी बंदूके नीचे रखकर दुर्दांत डाकुओं ने गुरुवर को साष्टांग प्रणाम किया है । नीलगाय और हिरण जैसे वनजीवों ने उनके समक्ष

घण्टों बैठकर ज्ञान प्राप्त किया है। कुछ सर्पों और कुत्तों ने उनके आगे पीछे चलकर उनसे धर्मलाभ प्राप्त किया है। आचार्य श्री द्वारा 5 साधु-संतों को प्रदत्त समाधि के कारण नैनागिरि तीर्थ तपोभूमि के साथ समाधिस्थल के रूप में प्रसिद्ध हो गया। यहां तक कि उन्होंने एक मरणासन्न कुत्ते को णमोकार मंत्र का पाठ सुनाकर समाधि प्रदान की।

आचार्य श्री के नैनागिरि प्रवास के अवसर पर श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) के विशेष प्रयासों से तीर्थंकर के तत्कालीन संपादक डॉ. नेमीचन्द्र जैन के द्वारा दिसंबर 1978 में श्री नैनागिरि तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर विशेषांक (130 पृष्ठ) प्रकाशित किया गया था। आचार्य श्री पर केन्द्रित यह इतिहास में प्रथम उच्च स्तरीय विशेषांक है। इस विशेषांक के मुखपृष्ठ पर युवा आचार्य का चित्र (दादा नीरज जैन, सतना) जिसमें आचार्य श्री की आध्यात्मिक मस्ती में आग में विदग्ध स्वर्णिम, छकाछक, खड़-खड़ काया, भोलपान निरीह निष्काम मुद्रा और अभय की जीवंत प्रतिमा दिखाई देती है, प्रकाशित किया गया है। इसी प्रकार प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन के दो चित्र प्रकाशित किये गये हैं। पृष्ठ 50 पर बालक विद्याधर का चित्र, जिसमें उसका गोल चेहरा, झब्बर केश, तंग निकर, अंग्रेजी काट की कमीज, कंधों के आर-पार टंगा बस्ता, पांव में जूते तथा हर कदम में दृढ़ता और गंभीरता दिखाई दे रही है, मुद्रित किया गया है। पृष्ठ 52 पर बालक विद्याधर के घर का चित्र प्रकाशित किया गया है जिसके द्वार पर खड़े है बालक विद्याधर के बड़े भाई श्री महावीर जी एवं पिता मलप्पा जी (मुनि श्री मल्लिसागर जी) यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 1978 में इस अंक की 5000 वसे अधिक प्रतियां पूरे देश में विद्वानों, श्रेष्ठियों और जन प्रतिनिधियों को प्रेषित की गई और उनके द्वारा इस विशेषांक की अत्यधिक सराहना की गई। इस विशेषांक के अनेक लेखों

नैनागिरि की झलक

और चित्रों को देश की सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं द्वारा पुनः पुनः प्रकाशित किया गया।

नैनागिरि में गत शताब्दि के अस्सी के दशक में आचार्य श्री के आशीर्वाद और प्रेरणा से उनकी प्रथम परियोजना के रूप में समवसरण मंदिर का निर्माण किया गया है। महावीर सरोवर के दक्षिणी तट पर 100 बाई 100 वर्गफीट के चबूतरे पर 70 बाई 70 वर्गफीट के क्षेत्र में 50 फीट ऊंचे इस समवसरण मंदिर के आकल्पन, भूमि पूजन, शिलान्यास निर्माण एवं मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा जैसे प्रत्येक अवसर पर आचार्य श्री का नैनागिरि तीर्थ को लाभ मिला है। नैनागिर तीर्थ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री नंदकिशोर लोहिया एवं मंत्री श्री सेठ शिखरचन्द्र जी के आमंत्रण पर इस मंदिर का झण्डारोहण और शिलान्यास 1 नवम्बर, 1981 को श्री निर्मल कुमार जैन सेठी, अध्यक्ष, भारत वर्षीय दिगंबर जैन महासभा द्वारा किया गया। नैनागिरि तीर्थ को वर्ष 1987 में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर आचार्य श्री का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ।

नैनागिरि में 1987 के पंचकल्याणक के अवसर पर सौधर्म इन्द्र और इन्द्राणी बने।

पार्श्वनाथ समवसरण मंदिर की 12 फरवरी, 1987 का प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस मंदिर के लिये श्रीमती सरस्वतीबाई धर्मपत्नी सेठ शिखरचन्द्र जैन, बण्डा, श्रीमती खिलौनाबाई धर्मपत्नि सेठ खेमचन्द्र जी ढोलक बीड़ी सागर, श्री दिगंबर जैन महिला समाज बण्डा, श्री रमेश जेजानी, प्रोपराईटर बनवारी लाल गिरधारीलाल जेजानी, नागपुर द्वारा मूर्तियां प्रदान की गई। सिंघई फूलचन्द्र जैन, महूना वाले बण्डा, श्रीमती क्षमाबाई जी थांदला, श्री अजित कुमार जी दिल्ली, श्री मोतीलाल डालचन्द्र जी पंचरत्न, बुढ़ार द्वार मानस्तंभ प्रदान किये गये। आचार्य श्री के आशीर्वाद से नैनागिरि में वर्ष 1978 में नीचे के मंदिरों के सामने विशाल प्रवचन मण्डप (108 बाई 30 फीट) का निर्माण किया गया।

नैनागिरि जैन तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर

नैनागिरि पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 1987 की रथयात्रा पूर्ण होने पर

यह सुखद एवं सत्य है कि जैसे-जैसे मंदिर का निर्माण अपनी प्रगति पर आगे बढ़ा, वैसे ही वैसे आचार्य श्री अपनी आध्यात्मिक प्रगति पर बढ़ते रहे। जैसे ही मंदिर के शिखर पर ध्वजा स्थापित की गई, वैसे ही आचार्य श्री की कीर्ति पताका पूरे देश में नही अपितु पेरे विश्व में फैल गई। आचार्य श्री का आशीर्वाद प्राप्त कर श्री अशोक पाटनी, किशनगढ़ जैसे अनेक छोटे व्यापारी और श्री सुरेश जैन, श्रीमती विमला जैन, नैनागिरि जैसे अनेक छोटे प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारी अपनी चतुर्मुखी प्रगति के पथ पर तीव्र गति से आगे बढ़े है। नैनागिरि तीर्थ के तत्कालीन मंत्री और समवसरण मंदिर के प्रमुख शिल्पी स्व. श्री सेठ शिखरचन्द्र जैन प्रबंध समिति के सभी साथियों के साथ उन्नति के शिखर पर पहुंचे है। इस पवित्र भूमि पर श्री सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया गया जिससे अभी तक गरीब से गरीब परिवारो के 1150 से अधिक छात्र बारहवी कक्षा उत्तीर्ण कर विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर अपना सफल जीवन यापन कर रहे है।

भोपाल में आचार्य श्री के सान्निध्य में सम्मान प्राप्त करते हुये श्री सुरेश जैन

नैनागिरि में बैठकर आचार्यश्री ने पूरी विनम्रता पूर्वक समाज के मूर्धन्य विद्वान श्रीमान् पण्डित कैलाशचन्द्र जी साहब, श्रीमान् पण्डित दरबारीलाल जी कोठिया बनारस, श्रीमान् पण्डित पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर, और श्रीमान् पण्डित गुलाबचन्द्र जी पुष्प प्रतिष्ठाचार्य प्रभृति वरिष्ठ विद्वानों से आध्यात्मिक दृष्टि का अन्वय, अर्थ, भावार्थ और मर्म को समझा। समाज के प्रमुख उद्योगपति श्रीमान् निर्मल कुमार जी सेठी लखनऊ सेठ डालचन्द्र जी सागर,

श्रीमान् सेठ अजित प्रसाद जी दिल्ली, श्रीमान सेठ खेमचन्द्र मोतीलाल जी सागर एवं श्रीमान् संतोषकुमार जय कुमार जैन बैटरी वाले सागर के सहयोग से अपनी वाणी का प्रचार प्रसार किया। पर्वत पर स्थित भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर में आचार्य श्री ने 5 घंटों तक लगातार खड़े रहकर अनेक मास घोर तपस्या की। नैनागिरि तीर्थ के स्थाई निवासी श्री सिंघई सतीशचन्द्र जैन, उनकी पत्नि श्रीमती केशरदेवी जैन, वरिष्ठ प्रबंधक पण्डित मणिकचन्द्र जी जैन और उनके तत्कालीन साथी और नैनागिरि परिचय पुस्तिकाओं के लेखक श्री कन्छेदीलाल जी इन घटनाओं के साक्षी रहे है।

नैनागिरि में विराजे सबसे बड़े पार्श्वनाथ

यह सुखद संयोग है कि गत शताब्दि के सत्तर और अस्सी के दशक में नैनागिरि की सिद्ध और समवसरण भूमि पर चलते-फिरते हमें चौथे काल के आचार्य वरदत्तादि पांच सिद्धों और तीर्थंकर पार्श्वनाथ की कृपा, नैनागिरि पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव में प्रतिष्ठित 185 मूर्तियों के दर्शन तथा पंचमकाल के युवा आचार्य का आशीर्वाद हम सबको प्राप्त हुआ और नैनागिरि के प्रत्येक दर्शक के जीवन में फलीभूत हुआ।

मूकमाटीः प्रशासनिक एवं न्यायिक दृष्टि

आचार्य विद्यासागर जी द्वारा विरचित महाकाव्य मूकमाटी भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर है। पारसधाम नैनागिरि की माटी में मूकमाटी महाकाव्य की पूर्णता की जानकारी पूर्णता के कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई। इसके पूर्व वरिष्ठ विद्वानों, साहित्यकारों एवं न्यायमूर्ति विमला जैन, तत्कालीन जिला एवं सत्र न्यायाधीश के साथ बैठकर इस लेखक ने नैनागिरि की सिद्ध शिला पर विराजमान आचार्य विद्यासागर जी के मधुर कण्ठ से इस महाकाव्य की अनेक पंक्तियां सुनने का अनुपम सौभाग्य प्राप्त किया है।

नैनागिरि में जन्मी यह मूकमाटी प्रत्येक मानव में शाश्वत जीवन मूल्यों की स्थापना कर संस्कृति के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान करती है। यह प्रत्येक व्यक्ति को संजीवनी शक्ति प्रदाय करती हुई अपनी उत्कृष्ट वैचारिक क्रान्ति द्वारा युगीन जीवनादर्शों की स्थापना करती है। पिसनहारी की मढ़िया में प्रारम्भ हुई तथा पारसनाथ की समवसरण भूमि में पूरी हुई यह मूकमाटी विश्व के प्रत्येक प्राणी को विकास के समान एवं समुचित अवसर उपलब्ध कराती है और प्रकाश स्तंभ की भांति उसे उत्कर्ष के सर्वोच्च शिखर का पथ प्रशस्त करती है।

मानवीय धर्म के बिना राजनीति, न्यायपालिका और कार्यपालिका पंगु होती है क्योंकि प्रत्येक व्यवस्था मानव को केन्द्र में रखकर ही निर्मित की जाती है। व्यवस्था का यह त्रिकोण समाज का आधारभूत एवं महत्वपूर्ण अंग है। आज राजनीतिक, न्यायिक एवं प्रशासकीय पंगुता अपनी शिखर पर है। हमें अपने राजनीतिज्ञों, न्यायविदों एवं प्रशासकों में मानवीयता के शाश्वत् मूल्य स्थापित करना आवश्यक है जिससे ऊँचे पद पर बैठकर उन्हें अपने बंधु/बांधवों एवं सामान्य व्यक्ति के साथ मानवीय व्यवहार करने में हीनता की भावना न हों। यदि राजनीतिज्ञ, न्यायविद और प्रशासक आचार्य श्री के चारित्रिक-साहित्यिक अवदान का शतांश भी अपने जीवन में उतार लें तो वे और हम लौकिक एवं आध्यात्मिक सम्पन्नता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच सकते है।

प्रत्येक प्रशासनिक इकाई के सर्वांगीण विकास में संलग्न प्रशासकों को उत्थान के लिये अहंकार शून्यता एवं ऐन्द्रिक संयम की अवधारणा मूकमाटी की इन पंक्तियों में साकार हो उठती हैं -

विकास के क्रम तब उठते हैं, जब मति साथ देती है,
तो मान से विमुख होती है, और विनाश के क्रम तब जुटते हैं,
जब रति साथ देती है, जो मान से प्रमुख होती है।
उत्थान-पतन का यही आमुख है।

प्रशासकों एवं न्यायिक अधिकारियों से रचनाकार ने महती अपेक्षा की है कि वे सिंह वृत्ति अपनायें। मानवीय हितों के विपरीत सिद्धांत विमुख होकर कोई समझौता न करें। मायाचार एवं कृत्रिम आडंबरों से स्वयं को अलग रखकर सदैव विवेकपूर्ण निर्णय लेकर समाज में उच्च कोटि के प्रशासनिक एवं न्यायिक मानदण्ड स्थापित करें। यथा संत कवि ने इन पंक्तियों में अभिव्यक्त किया हैं-

पीछे से कभी किसी पर धावा नहीं बोलता सिंह,
गरज के बिना गरजता भी नहीं , और/विना गरजे
किसी पर बरसता भी नहीं-
यानी मायाचार से दूर रहता है सिंह सिंह विवेक से काम लेता है,
सही कारण की ओर ही सदा दृष्टि जाती है सिंह की।

अधिकांश न्यायिक एवं प्रशासनिक अधिकारी अपने शारीरिक सुख, पदोन्नति एवं वेतनवृद्धि के चिंतन में अहर्निश संलग्न रहते है। उनके लिये निम्नांकित पंक्तियां वास्तविक जीवन लक्ष्य निर्धारित करने की प्रेरणा देती हैं -

भोग पड़े है यहीं/भोगी चला गया, योग पड़े है यही / योगी चला गया
कौन किसके लिये/ धन जीवन के लिये, या जीवन धन के लिये
मूल्य किसका/तन का या वेतन का, जड़ का या चेतन का

प्रत्येक अधिकारी को पुरुषार्थ एवं परिश्रम की प्रेरणा देते हुए पुरुषार्थ एवं परिश्रम के जीवंत शीर्ष पुरुष करते हैं -

बाहुबल मिला है तुम्हें, करो पुरुषार्थ सही, पुरुष की पहचान करो सही
परिश्रम के बिना तुम, नवनीत का गोला निगलो भले ही,
कभी पचेगा नहीं वह, प्रत्युत जीवन को खतरा है।

न्यायिक-प्रशासनिक अधिकारी का यह कर्तव्य है कि वह सही व्यक्ति पर अनुग्रह करें एवं समाज विरोधी आचरण को नियंत्रित करें-

शिष्टों पर अनुग्रह करना, सहज प्राप्त शक्ति का, सदुपयोग करना है धर्म है।
और दुष्टो का निग्रह नहीं करना, शक्ति का दुरुपयोग करना है, अधर्म है।

राज्य शासन द्वारा अपने अधीनस्थ अल्प वेतन भोगी कर्मचारियों की पर्याप्त वेतन एवं सुविधायें दी जावे और उन्हें विकास के अवसर उपलब्ध कराये जावे। इन सिद्धांतों का चित्रण निम्नांकित पंक्तियों में उत्कृष्ट ढंग से किया गया है :-

थोड़ी सी/तन की भी चिंता होनी चाहिये,
तन के अनुरूप वेतन अनिवार्य है ,मन के अनुरुप विश्राम भी।
मात्रा दमन की प्रक्रिया से कोई भी क्रिया, फलवती नहीं होती है।

शासन का महत्वपूर्ण कार्यक्रम है अल्प वचत के लिये प्रोत्साहन। आचार्य श्री यह तथ्य इन पंक्तियों में इस प्रकार पुष्ट करते हैं-

धन का मितव्यय करो, अति व्यय नहीं,
अपव्यय तो कभी नहीं भूलकर स्वप्न में भी नहीं।

देश तथा प्रदेश में फैलता हुआ आतंक सामान्य जन की सतत उपेक्षा, उपहास, शोषण और अपमान का परिणाम है। यह स्थापित करते हुए आचार्य श्री नीति-निर्धारकों को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन देते हुए कहते हैं कि-

मान को टीस पहुंचने से ही, आतंकवाद का अवतार होता है।
अति पोषण और अति- शोषण का भी यही परिणाम होता है तब
जीवन का लक्ष्य बनता है, शोध नहीं, बदले का भाव प्रतिशोध
जो कि महा अज्ञानता है, दूरदर्शिता का अभाव,
पर के लिये नहीं अपने लिये भी घातक।
नहीं-नहीं-नहीं/ अभी लौटना नहीं , अभी नहीं-कभी भी नहीं,
क्योंकि अभी/आतंकवाद गया नहीं, उससे संघर्ष करना है अभी
वह कृत संकल्प है/ अपने ध्रुव पर दृढ़।
जब तक जीवित है आतंकवाद शक्ति का श्वास ले नहीं सकती/धरती यह
ये आंखे अब/ आतंकवाद को देख नहीं सकती
ये कान अब/ आतंक का नाम सुन नहीं सकते,

यह जीवन की कृत संकल्पित है कि
उसका रहे या इसका यहां अस्तित्व एक का रहेगा।

आइये हम आचार्य श्री के दर्शन कर संयमित और संतोषी बनने की प्रेरणा लें तथा यथा उपलब्ध में सुखानुभूति करते हुये विकास के पथ पर आगे बढ़ें :-

संत समागम की यही तो सार्थकता है, संसार का अन्त दिखने लगता हे,
समागम करने वाला भले ही, तुरन्त संत संयत/बने या न बने
इसमें कोई नियम नहीं है/किन्तु वह संतोषी अवश्य बनता है।
सही दिशा का प्रसाद ही सही दिशा का प्रासाद है।

दण्ड संहिता का प्रमुख लक्ष्य अपराधी की उद्दण्डता का दूर करना है, उसे क्रूरता से दण्डित करना नहीं है। वे कांटो को काटने की नहीं बल्कि उनके घांवों को सहलाने की हमें शिक्षा देते है। वे पापी से नहीं पाप से, पंकज से नहीं पंक से घृणा करने की हमें सीख देते हैं-

प्राण दण्ड से। औरों को तो शिक्षा मिलती है, परन्तु।
जिसे दण्ड दिया जा रहा है,
उसकी उन्नति का अवसर ही समाप्त। दण्ड संहिता इसको माने या न माने
क्रूर अपराधी को, क्रूरता से दण्डित करना भी एक अपराध है,
न्याय मार्ग से स्खलित होना है।

न्याय शास्त्र का यह सर्वमान्य सिद्धांत है कि चोरी करने वाला तथा चोरी की प्रेरणा देने वाला समान रूप से दोषी है। आचार्यश्री इस सिद्धांत से भी आगे बढ़कर उदघोष करते हैं कि चोर की चोरी करने की प्रेरणा देने वाला व्यकित चोर से अधिक दोषी हैं-

चोर इतने पापी नहीं होते, जितने की चोरों को पैदा करने वाले।

राजनीति, प्रशासन और न्यायपालिका राज्य शक्ति के महत्वपूर्ण स्तंभ है। इन शक्ति स्तंभों के विभिन्न पदों पर पदस्थ व्यक्तियों को इन पदों पर सदैव बने रहने की तृष्णा घेर लेती है। यह तृष्णा अत्यधिक कष्ट दायक होती है। इस पद लिप्सा एवं प्रशासनिक न्यायिक अधिकारी की अंतिम आकांक्षा को स्पष्ट करते हुये वे कहते हैं :-

जितने भी पद हैं, वह विपदाओं को आस्पद है,

पद लिप्सा का विषधर वह
भविष्य में भी हमें न सूँघे, बस यही कामना है, विभो।

अरिहंत और जनसंत से हमारी यही याचना है कि वे हमें ऐसा विवेक दे कि हम राष्ट्र के उत्थान में सदैव संलग्न रहकर निम्नांकित पंक्तियों को अपने शेष जीवनकाल में जन-मन से गुनगुनाते रहें :-

धरती की प्रतिष्ठा बनी रहे, और हम सबकी, धरती में निष्ठा घनी रहे बस।

यह जानकार सभी पाठकों को प्रसन्नता होगा कि इस लेखक के प्रयास से बरकत उल्लाह विश्वविद्याय ने एम.ए. की हिन्दी परीक्षाओं के लिये मूकमाटी की संदर्भ पुस्तक के रूप में स्वीकृत कर लिया है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी ने मूकमाटी से प्रभावित होकर यह घोषणा की है कि यह पुस्तक मध्यप्रदेश में स्थित अन्य सभी विश्वविद्यालयों में पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकृत की जावे। पाठकों से विनम्र निवेदन है कि अपने-अपने प्रदेश के विश्वविद्यालयों में मूकमाटी को पाठ्यपुस्तक के रूप में सम्मिलित कराने के लिये ठोस प्रयास करें। इसकी प्रक्रिया की जानकारी यह लेखक सदैव देने के लिये सहमत हैं।

आचार्य विद्यासागर जी द्वारा विरचित महाकाव्य मूकमाटी भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर है। इस कृति का लेखन पिसनहारी मढ़िया जबलपुर, म.प्र. में षटखण्डागम वाचना प्रसंग पर बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दीक्षा कल्याणक दिवस वीर निर्वाण संवत् 2510 विक्रम संवत 2041, वैशाख कृष्ण दशमी, बुधवार (25 अप्रैल सन् 1984) को प्रारंभ हुआ। इस महाकाव्य का समापन श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि जिला छतरपुर म.प्र. में आयोजित श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक एवं त्रि-गजरथ महोत्सव के अवसर पर केवलज्ञान कल्याणक दिवस, माघ शुक्ल त्रयोदशी वीर निर्वाण संवत् 2513 विक्रम संवत् 2043, बुधवार (11 फरवरी सन् 1987) को हुआ। यह सुखद है कि सिद्ध शिला पर बैठे गुरुदेव के मधुर कण्ठ से विभिनन अवसरों पर हमें मूकमाटी की पंक्तियाँ सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ है और मूकमाटी से समापन के पवित्र क्षणों के हम साक्षी रहें हैं।

मुनिवर समयसागर जी और योगसागर जी बने निर्यापक मुनि

मुनि समयसागर जी और योगसागर जी को निर्यापक मुनि बनाने की औपचारिक घोषणा सोशल मीडिया द्वारा की गई है। उन्हें विशेष उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य सौंपे गये हैं। आचार्य श्री विद्यासागर जी द्वारा समयसागर जी को ललितपुर में 28 नवम्बर 2018 को और योगसागर जी को 8 मार्च 2019 को जैन तीर्थ बीना (बारहा) में निर्यापक मुनि के पद प्रदान किये गये हैं। उन्हें निर्यापक मुनि की उपाधि प्रदान की गई है और उन्हें संघ संचालन से संबधित महत्वपूर्ण अधिकार सौंपे गये हैं। यह उल्लेखनीय है कि मुनिवर योगसागर जी गत चार दशकों से सहयोग दे रहे है। उनकी प्रशासनिक क्षमता और प्रबंधन पटुता सराहनीय रही है। चार दशकों बाद उनकी असाधारण योग्यता को औपचारिक और सामाजिक मान्यता दिये जाने के अवसर पर चालीस वर्षो से उनके निकट रहे हम सब बड़े प्रसन्न है।

वरदत्तादि पंच ऋषिराजों की निर्वाण भूमि, भगवान भगवान पार्श्वनाथ की समवसरण स्थली एवं बुंदेलखंड प्रांत के प्राचीनतम जैन तीर्थ नैनागिरि में दिनांक 06 मार्च 2018 को आचार्य विद्यासागर जी के वरिष्ठतम शिष्य मुनि श्री समयसागर जी महाराज 30 वर्ष बाद अपने संघस्थ तीन मुनियों के साथ नैनागिरि पधारे। श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) के नेतृत्व में जैन तीर्थ के पदाधिकारियों, सदस्यों, क्षेत्रीय जैन समाज और सभी ग्राम वासियों ने सहस्त्रों की संख्या में एकत्रित होकर मुनि श्री की भव्य आगवानी की। मेघों ने हल्की-हल्की बूंदों से मुनिवर का स्वागत किया।

मुनिश्री ने नैनागिरि को प्राचीनतम तथा शांति प्रदायक तीर्थ क्षेत्र बताते हुये आत्म कल्याण का श्रेष्ठ स्थान घोषित किया। वरदत्तादि पंच ऋषिराजों की निर्वाण भूमि के स्मृति में बन रहे सिद्ध मंदिर का अवलोक किया एवं शीघ्र कार्य पूर्ण होने का आशीर्वाद प्रदान किया।

7 मार्च 2018 को प्रातः मुनि संघ ने तीर्थराज पर स्थित 56 जिनालयों की वंदना की एवं चौबीस जिनालय में बड़े ही भक्ति भाव से अभिषेक एवं शांतिधारा को मंगलमय सान्निध्य प्रदान किया। मुनिश्री समयसागर जी का 39वाँ दीक्षा दिवस बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया गया जिसमें समीपस्थ नगरों, ग्रामों एवं कस्बों के लगभग 1500 लोगों ने सहभागिता की। मुनि श्री समयसागर जी को बाबा दौलतराम वर्णी जी द्वारा नैनागिरि में सन् 1902 में विरचित गोम्मटसागर छंदोदय जो कि श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) द्वारा संपादित और भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है, भेंट किया गया। संध्याकालीन वेला में सभी ने मुनि संघ की आरती की।

आचार्य विद्यासागर जी द्वारा विरचित मूकमाटी महाकाव्य वर्ष 1987 में नैनागिरि में पूर्ण हुआ था। उसकी स्मृति को स्थाई स्वरूप देने के लिये पूरे राष्ट्र में निर्मित गीता और मानस भवनों की भांति इस अवसर पर नैनागिरि में मूकमाटी भवन बनाने की घोषणा की गई। सभी उपस्थिति महानुभावों ने इस निर्णय की सराहना की। मुनिसंघ ने अपना आशीर्वाद दिया। मूकमाटी भवन का निर्माण प्रगति पर है।

वरिष्ठ मुनिवर योगसागर जी और उनके साथी मुनिवर 18 नवम्बर 2018 को नैनागिरि पधारे। उन्होंने नैनागिरि तीर्थ की वंदना की। सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन विद्यालय में पहुंचकर छात्रों को अपना आशीर्वाद दिया। मुनिवर प्रमाण सागर जी की प्रेरणा से बैनाड़ा ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज आगरा के सहयोग से पर्वत पर संस्थापित संयम कीर्ति स्तंभ का अवलोकन कर भरपूर शब्दों में उसकी लोकेशन , ऊंचाई और गुणवत्ता की सराहना की।

सिद्ध शिला से मोक्ष गये आचार्य वरदत्त की जय बोलकर 19 नवम्बर को प्रातः मुनि योगसागर जी सिद्धशिला पर विराजमान हुये। सिद्धशिला की गुफा में बैठकर उन्होंने और उनके संघस्थ साधुओं ने सामायिक की। विभिन्न शिलाओं पर विद्यमान अकृत्रिम चरण चिन्हों के दर्शन किये। चालीस हजार साल पुरानी इस जैन सांस्कृतिक विरासत की सराहना करते हुए समाज को सिद्धशिला के

समीपस्थ अकृत्रिम चरण चिन्हों के दर्शन के लिये प्रेरित किया। अनेकों व्यक्तियों ने विशाल जलकुण्ड में स्नान कर प्रसन्नता प्राप्त की। इस समय गुरुदेव और उनके साथी मुनिवरों की प्रसन्न मुखमुद्रा देखकर जन-जन को बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। गहन वन में पर्वत के पीछे सेमरा पठार नदी के उत्तर में स्थित भगवान नेमिनाथ के काल की चालीस हजार साल पुरानी सिद्धशिला का संरक्षण करने और उसके प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से योगसागर जी की सिद्धशिला यात्रा सराहनीय और सभी मुनिवरों के लिये अनुकरणीय है।

मुनि समयसागर जी का पूर्व नाम श्री शांतिनाथ जैन अष्टगे, पिता का नाम श्री मलप्पा जी अष्टगे और माता का नाम श्रीमती श्रीमंती अष्टगे है। जन्म के क्रम से उनके बड़े भाई श्री महावीर प्रसाद जी प्रथम, आचार्य विद्यासागर जी (विद्याधर जी) द्वितीय और अनंतनाथ जी (मुनि श्री योगसागर जी) तृतीय है। उनका जन्म 26 अक्टूबर 1958 को ग्राम सदलगा में हुआ था। उन्होंने मराठी माध्यम से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की है। उनकी क्षुल्लक दीक्षा सोनागिरि में 18 दिसंबर 1975 को उनकी ऐलक दीक्षा 31 अक्टूबर 1978 को जैन तीर्थ नैनागिरि में और उनकी मुनि दीक्षा 8 मार्च 1980 को सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि में हुई थी। उनके दीक्षा गुरु आचार्य विद्यासागर जी महाराज है।

मुनि योगसागर जी का पूर्व नाम श्री अनंतनाथ जैन अष्टगे, पिता का नाम श्री मलप्पा जी अष्टगे और माता का नाम श्रीमती श्रीमंती अष्टगे है। जन्म के क्रम से उनके बड़े भाई श्री महावीर प्रसाद जी प्रथम और आचार्य विद्यासागर जी (विद्याधर जी) द्वितीय है। उनके छोटे भाई श्री शांतिनाथ जैन अष्टगे (मुनि समयसागर) चतुर्थ है। उनका जन्म 26 सितम्बर 1956 को ग्राम सदलगा में हुआ था। उन्होंने मराठी माध्यम से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की है। क्षुल्लक दीक्षा 18 दिसंबर 1975 को सोनागिर में, ऐलक दीक्षा 19 नवम्बर 1977 को कुण्डलपुर में और उनकी मुनि दीक्षा 15 अप्रैल 1980 को सागर में हुई थी। उनके दीक्षा गुरु आचार्य विद्यासागर जी महाराज है। इन दोनों मुनिवरों के पिता श्री मल्लिसागर जी महाराज और माता आर्यिका समयमती माता जी थी।

उनकी दोनो बहिने शांता जी और सुवर्णा जी बाल ब्रम्हचारिणी है।

समयसागर जी का समयोचित मौन और मंद-मंद मुस्कुराहट तथा योगसागर जी की मुखरता और स्पष्टवादिता हम सबको आकर्षित और प्रभावित करती है। इन दोनों अनुभवी संतों से मिलना और चर्चा करना बहुत सहज और सरल है। नैनागिरि प्रभृति अनेक स्थलों पर बैठकर उनसे चर्चा करने, उन्हें आहार देने और उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये हमें और पूरे परिवार को अनेक सौभाग्यशाली अवसर प्राप्त हुये हैं।

पंचकल्याणक आध्यात्मिक जगत का महापर्व होता है। वरिष्ठ मुनिवर समयसागर और योगसागर जी के स्वतंत्र सान्निध्य में गत वर्षों में बुन्देलखण्ड में अनेक पंचकल्याणक आयोजित किये गये हैं। दक्षिण भारत में जन्म लेकर वे उत्तर भारत में वे वर्ष 1976 से जैन संस्कृति का ध्वज दण्ड सम्हालें हुये आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। वे बुन्देलखण्ड में प्रखर आध्यात्मिक क्रांति की बहार बहा रहे हैं। उन्होंने हमारे आचार्य प्रवर की विजय वैजयंती अपने हाथों में थामकर जैन संस्कृति के संप्रसारण और परिप्रसारण में महती भूमिका का निर्वाह किया है।

योगसागर जी ने अपने संघ का संचालन अलिखित किन्तु कालजयी आध्यात्मिक संविधान के सूत्रों के अनुरूप किया। उन्होंने आत्मानुशासन और संघ के अनुशासन के बीच आदर्श समन्वय और संतुलन स्थापित किया। संघ की स्वतंत्रता और नियंत्रण के बीच आदर्श सेतु का निर्माण किया। संघ को वैचारिक समृद्धि प्रदान की। नगर, रथ और चक्र की भांति संघ का सतत संचालन अत्यधिक कठिन कार्य है। उन्होंने संघ के सभी आधारभूत अंगो को पूरा सम्मान दिया। एक ओर आचार्य, मुनि, आर्यिका, ब्रम्हचारी और दीदियों को पूरा सम्मान दिया तथा दूसरी ओर सभी श्रावक और श्राविकाओं को आत्मीय स्नेह दिया। वे सदैव संघ में पूरा अनुशासन बनायें रखकर संघ के सभी सदस्यों में रचनात्मक दृष्टिकोण और विनय के गुण विकसित करते रहे। जिनवाणी का स्वाध्याय, सामायिक, ध्यान और योग की सभी प्रक्रियाओं का

नियमित रूप से अनुसरण करते रहे। नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ से प्रार्थना है कि उनका संघ चिरायु हो।

आचार्य विद्यासागर जी के संघ की आध्यात्मिक आस्था, आचार्य निष्ठा, अनुशासनबद्ध एकसूत्रता तथा समर्पणशीलता सराहनीय है । यह बहुत ही शक्तिशाली, चारित्र और अनुशासन प्रिय संगठन है। इस संघ में इन गुणों को विकसित करने में दोनों निर्यापक मुनिवरों की महत्वपूर्ण भूमिका का सराहनीय योगदान रहा है। आचार्य श्री के साथ ही दोनों मुनिवरों ने हमारे तथा हमारी पत्नि न्यायमूर्ति विमला जी के जीवन को असाधारण सारवत्ता एवं गुणवत्ता से आप्लावित किया है।

मध्यप्रदेश में विहार के प्रांरभिक वर्षों में आचार्य विद्यासागर जी वर्ष 1977 में 22 फरवरी को अपने संघस्थ तीन क्षुल्लकों-समयसागर, नियमसागर और योगसागर जी के साथ नैनागिरि पधारें थे । उन्होंने नैनागिरि में तीन चातुर्मास (1978,1981,1983) और चार शीत और ग्रीष्मकालीन (1977,1979,1986,1987) वाचनायें की । आचार्य श्री ने अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से बुन्देलखण्ड के सहस्त्रों युवक/युवतियों को आकर्षित किया और नैनागिरि में शताधिक साधुओं को दीक्षित और प्रशिक्षित किया। पूरे प्रदेश में ही नही अपितु पूरे देश मेंआध्यात्मिक क्रांति के जनक बने गुरुदेव द्वारा नैनागिरि में दीक्षित आचार्य पुष्पदंत सागर, उपाध्याय गुप्तिसागर, मुनिवर समतासागर एवं सुधासगर आदि अनेक मुनिवर एवं गुरुमति जी, दृढ़मति जी, मृदुमति जी आदि अनेक आर्यिकायें पूरे राष्ट्र में अपने कीर्तिमान स्थापित कर रहें है।

नैनागिरि में भगवान पार्श्वनाथ की दिव्य देशना के शब्दों को ग्रहण कर आचार्य श्री ने आध्यात्मिक संदेश और संकेत प्राप्त किये है। उनके ऐसे अनुभव और संदेश मूकमाटी में अनेक स्थलों पर प्रत्यक्ष ओर अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिध्वनित होते हैं । उनके प्रवचनों में गूंजते है । उन्होंने नैनागिरि में अपने आचार्यत्व को सार्थकता प्रदान की है । अपने आचार्यत्व को असाधारण आयाम दिये है।

आचार्य श्री के नैनागिरि प्रवास में अवसर पर श्री सुरेश जैन, तत्कालीन अपर कलेक्टर, इन्दौर के विशेष प्रयासों से तीर्थंकर के तत्कालीन संपादक डॉ. नेमीचन्द्र जैन के द्वारा दिसंबर 1978 में श्री नैनागिरि तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर विशेषांक (130 पृष्ठों) प्रकाशित किया गया था। आचार्य श्री पर केन्द्रित यह इतिहास में प्रथम उच्च स्तरीय विशेषांक है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1978 में इस अंक की 5000 से अधिक प्रतियां पूरे देश में विद्वानों, श्रेष्ठियों और जन प्रतिनिधियों को प्रेषित की गई और उनके द्वारा विशेषांक की अत्यधिक सराहना की गई। इस विशेषांक के अनेक लेखों और चित्रों को देश की सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं द्वारा पुनः प्रकाशित किया गया।

यह सुखद एवं सत्य है कि जैसे-जैसे मंदिर का निर्माण अपनी प्रगति पर आगे बढ़ा, वैसे ही वैसे आचार्य श्री अपनी आध्यात्मिक प्रगति पर बढ़ते रहे। जैसे ही मंदिर के शिखर पर ध्वजा स्थापित की गई, वैसे ही आचार्य श्री की कीर्ति पताका पूरे देश में नही अपितु पूरे विश्व में फैल गई। वृद्धिंगत हो गई।

मुनिवर समयसागर जी अधिकांश समय मौन रहकर अपनी गहन साधना करते रहें। मुनिवर योगसागर जी एक और अपनी सतत साधना करते रहे तथा दूसरी और संघ का सुसंचालन और सुव्यवस्थापन करते रहे । पूरे संघ का जिनवाणी की साधना कराते रहे। आचार्य की सर्वोपरी मान्यता को सुस्थापित करते हुये मुनिवरों और आर्यिकाओं को आवश्यक महत्ता और स्वतंत्रता प्रदान करते रहे। उन्होने पूरे संघ को जीवंत और अनुशासित बनाये रखा है। पूरा संघ आचार्य कुन्द कुन्द की शाश्वत विचारधारा पर चल रहा है। आध्यात्मिक प्रगति पथ पर आगे बढ़ रहा है। पूरी समाज का चतुर्मुखी विकास कर रहा है। उनकी क्षमता, समता और ममता को शत-शत प्रणाम। प्रभु से प्रार्थना है कि उनके संघस्थ दीपकों और ज्योतियों का प्रकाश हम सबको सदैव आलोकित करता रहे।

सत्तर और अस्सी के दशक में आचार्य विद्यासागर जी ने इन दोनों मुनिवरों तथा अन्य संघस्थ साधुओं के साथ नैनागिरि में तीन चातुर्मास और चार शीत/ग्रीष्मकालीन प्रवास किये। इस अवधि में अनेक नेतृत्व में पूरे संघ ने सतत

रूप से सिद्धों की वंदना की। पार्श्वनाथ भगवान के समवसरण का निर्माण कराया। नैनागिरि प्रवास की इस अवधि में गुरुदेव विद्यासागर जी विश्व विश्रुत हो गये। आचार्य विद्यासागर जी के चरण चिन्हों पर चलते हुये मुनिवर समयसागर जी 6-7 मार्च, 2018 को नैनागिरि पधारे। उन्होंने नैनागिरि से मोक्ष पधारे सिद्धों और भगवान पार्श्वनाथ की वंदना की और 9 माह से कम की अवधि में ही वे निर्यापक मुनि बन गये। इसी प्रकार योगसगर जी ने 18-19 नवम्बर 2018 को नैनागिरि की वंदना की और वे भी तीन माह से कम की अवधि में निर्यापक मुनि बन गये।

आचार्य विद्यासागर जी के संघस्थ सभी वरिष्ठ मुनिवरों से हमारी प्रार्थना है कि वे भी निकट भविष्य में नैनागिरि की वंदना करें और नैनागिरि से मोक्ष पधारें सिद्धों और नैनागिरि के समवसरण में विराज रहे भगवान पार्श्वनाथ से आशीर्वाद प्राप्त कर निकट भविष्य में इसी प्रकार की सर्वोच्च आध्यात्मिक सफलतायें प्राप्त करें।

❖❖❖

मुनिवर योगसागर जी नैनागिरि स्थित सिद्धशिला पर विराजे

वरिष्ठ मुनिवर योगसागर जी और उनके साथी मुनिवर 18 नवम्बर 2018 को नैनागिरि पधारे। उन्होंने नैनागिरि तीर्थ की वंदना की। सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन विद्यालय में पहुंचकर छात्रों को अपना आशीर्वाद दिया। पर्वत पर गत माह में ही मुनिवर प्रमाण सागर जी की प्रेरणा से बैनाड़ा ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज, आगरा के सहयोग से संस्थापित संयम कीर्ति स्तंभ का अवलोकन कर भरपूर शब्दों में उसकी ऊंचाई और गुणवत्ता की सराहना की। 19 नवम्बर को प्रातः तीन दशक बाद सिद्ध शिला से मोक्ष गये आचार्य वरदत्त की जय बोलकर वे सिद्धशिला पर विराजमान हुए। सिद्धशिला की गुफा में बैठकर सामायिक की। विभिन्न शिलाओं पर विद्यमान अकृत्रिम चरण चिन्हों के दर्शन किये। चालीस हजार साल पुरानी इस विरासत की सराहना करते हुये समाज को सिद्धशिला और सिद्धशिला के समीपस्थ अकृत्रिम चरण चिन्हों के दर्शन के लिये प्रेरित किया। अनेको व्यक्तियों ने विशाल जलकुण्ड में स्नान कर प्रसन्नता प्राप्त की। इस समय गुरुदेव और साथी मुनिवरों की प्रसन्न मुखमुद्रा देखकर जन-जन को बड़ी प्रसन्नता हो रही थी।

वर्तमान काल में गहन वन में सेमरा पठार नदी के उत्तर में स्थित भगवान नेमिनाथ के काल की चालीस हजार साल पुरानी सिद्धशिला जैसी महत्वपूर्ण विरासत के दर्शन करने ओर उसका संरक्षण करने के उद्देश्य से योगसार जी की सिद्धशिला यात्रा सराहनीय और सभी मुनिवरों के लिये अनुकरणीय है।

मुनिवर श्री समयसागर जी की नैनागिरि यात्रा

वरदत्तादि पंच ऋषिराजों की निर्वाण भूमि पार्श्वनाथ की समवशरण स्थली एवं बुंदेलखंड प्रांत के प्राचीनतम जैन तीर्थ नैनागिरि में दिनांक 06 मार्च 2018 को आचार्य विद्यासागर जी के वरिष्ठतम शिष्य मुनि श्री समयसागर जी महाराज 30 वर्ष बाद ससंघ नैनागिरि पधारे। उनके संघस्थ मुनि प्रशस्तसागर, मल्लिसागर एवं आनन्दसागर भी नैनागिरि पधारे। जैन तीर्थ के पदाधिकारियों, सदस्यों, क्षेत्रीय जैन समाज और सभी ग्रामवासियों ने मुनि श्री के आगमन के लिये बड़े ही हर्षोल्लास के साथ तैयारियां की थी किसी ने अपने घर के सामने रंगोली बनाई तो किसी ने चौक पूराये एवं किसी ने पाद प्रक्षालन हेतु आसन बनाये। मुनि श्री की भव्य आगवानी में सहस्त्रों की संख्या में जन- समुदाय सम्मिलित हुआ।

7 मार्च 2018 को प्रातः मुनि संघ ने तीर्थराज पर स्थित 56 जिनालयों की वंदना की एवं मंदिर नं. 40 चौबीसी जिनालय में बड़े ही भक्ति भाव से अभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न हुई। दोपहर में महाराज श्री के अमृत वचनों को श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ। मुनि श्री 108 समयसागर जी का 39वां दीक्षा दिवस बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया गया जिसमें समीपस्थ ग्रामों एवं कस्बों के लगभग 1500 लोगों की उपस्थिति थी। इस अवसर पर नैनागिरि तीर्थ के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन द्वारा नैनागिरि में मूकमाटी भवन बनाने की घोषणा की गई। आचार्य विद्यासागर जी द्वारा विरचित मूकमाटी महाकाव्य वर्ष 1987 में नैनागिरि में पूर्ण हुआ था। इसी स्मृति को स्थाई स्वरूप देने के लिये नैनागिरि तीर्थ के न्यासी मण्डल और प्रबंध समिति द्वारा मूकमाटी भवन का निर्माण शीघ्र ही पूर्ण किया जावेगा। सभी उपस्थिति

समयसागर जीः पड़गाहन और आहार

महानुभावों ने इस निर्णय की सराहना की। मुनिसंघ ने अपना आशीर्वाद दिया।

मुनि श्री समयसागर जी के 39वें दीक्षा दिवस के अवसर पर महाराज श्री को 39 शास्त्र भेंट किये गये जिसमें प्रथम शास्त्र के रूप में सन् 1902 में बाबा दौलतराम वर्णी जी द्वारा नैनागिरि में रचित गोम्मटसार छंदोदय जो कि श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.) द्वारा संपादित और भारतीय ज्ञानपीठ ज्ञानपीठ, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है, भेंट किया गया। संध्याकालीन वेला में सभी ने मुनि संघ की आरती की।

दिनांक 8 मार्च 2018 को प्रातः से ही मौसम धीमी-धीमी बारिश से खुशनुमा हो गया था। मुनि संघ के सान्निध्य में श्री अशोक पाटनी, किशनगढ़ ने पर्वतराज पर भगवान स्वामी का अभिषेक किया। सामायिक के बाद पूज्य मुनि श्री समयसागर जी महाराज तलहटी में निर्मित 13 जिनालयों के विशाल सभागार में विराजमान हुये। सभी ने मुनि संघ का आशीर्वाद एवं अमृत वचन श्रवण करने का अवसर प्राप्त किया एवं महाराज श्री ने नैनागिरि को प्राचीनतम तथा शांति प्रदायक तीर्थ क्षेत्र बताते हुये आत्म कल्याण का श्रेष्ठ स्थान घोषित किया। इसके पश्चात् वरदत्तादि पंच ऋषिराजों के निर्वाण भूमि के स्मृति में बन रहे सिद्ध मंदिर का अवलोकर किया एवं शीघ्र कार्य पूर्ण होने का आशीर्वाद प्रदान किया।

यह उल्लेखनीय है कि मुनिवर प्रमाणसागर जी की प्रेरणा से श्री पन्नालाल जी बैनाड़ा, द्वारा नैनागिरि में विशाल संयम कीर्ति स्तंभ की स्थापना की जा रही है।

मुनिवर समयसागर जी के इस त्रिदिवसीय प्रवास में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) समिति के अध्यक्ष श्री झलकनलाल लोहिया, मंत्री श्री दमोदर सेठी, जी संयुक्त मंत्रीगण श्री राजेश रागी, श्री मोतीलाल सांधेलिया एवं श्री कल्लू बरेठी तथा श्री मुन्नालाल खटौरा आदि, सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ने उपस्थित रहकर मुनि संघ का पड़गाहन किया। उन्हें आहार दिया और ग्रीष्मकालीन वाचना के लिये प्रार्थना की। तीसरे दिन अपरान्ह में मुनि संघ का कुण्डलपुर के लिये विहार हो गया।

जैन तीर्थ नैनागिरि में संस्थापित संयम कीर्ति स्तंभ

श्री मन्नाकनरेन्द्र वन्दित पदः श्री पार्श्वनाथः प्रभु,
र्यत्रागत्य शशास भव्यनिकरं सद्धर्मतत्वं चिरम् ।
तप्त्वा यत्र तपः प्रतिग्ममचिरं याताः शिवं शाश्वतं,
वरदत्तादि मुनीश्वरा गुंणधरा ध्वस्ताष्टकर्मव्रजाः ।।
नमामो रेशन्दी गिरि मघविघाताय खलु तम् ।।

नैनागिरि स्तुतिः पण्डित पन्नालाल जैन

लक्ष्मी से युक्त इन्द्रों तथा चक्रवर्तियों से जिनके चरण वन्दित थे ऐसे पार्श्वनाथ भगवान ने जहाँ आकर बहुत समय तक भव्य जीवों के समूह को समीचीन धर्म की देशना दी और जहाँ कठिन तप तपकर गुणों के धारक इन्द्रदत्त, गुणदत्त, वरदत्त, सायरदत्त और मुनीन्द्रदत्त मुनिराज अष्टकर्मों के समूह को नष्ट कर शीघ्र ही अविनाशी मोक्ष को प्राप्त हुये थे। निश्चय से पाप नष्ट करने के लिये उस नैनागिरि (रेशन्दीगिरि) जैन तीर्थ को हम प्रणाम करते हैं ।

दीक्षासुशिक्षाप्रमुखैः प्रयत्नैः, संपोषितानां सुतनिर्विशेष ।
निर्गंथ प्रियिशिष्यकल्याणभूमिः, नैनागिरिं तं तीर्थं नमामि ।।

नैनागिरि वंदनाः पण्डित शिवचरणलाल जैन

दीक्षा, श्रेष्ठ कल्याणकारी शिक्षा आदि प्रयासों द्वारा निर्ग्रंथ आचार्यों ने जिन प्रियशिष्यों का पुत्रवत् संपोषण किया है, उनकी कल्याणकारी भूमि श्री नैनागिरि तीर्थ की मैं वन्दना करता हूँ।

गत शताब्दि में आध्यात्मिक क्रांति के जनक आचार्य विद्यासागर जी के बुन्देलखंड के हृदय स्थल में स्थित नैनागिरि (रेशंदीगिरि) तीर्थ पर तीन चातुर्मास तथा चार शीत और ग्रीष्म कालीन प्रवास हुये है। उन्होंने नैनागिरि में 25 से अधिक मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक एवं क्षुल्लिकाओं को दीक्षा प्रदान की है और शताधिक युवक/युवतियों को आजीवन बह्मचर्य व्रत दिये हैं। उनके संयम दीक्षा वर्ष में विशाल कीर्ति स्तंभ स्थापित किया गया है।

आचार्य श्री के वरिष्ठ शिष्य मुनिवर प्रमाणसागर जी ने गत दशब्दि के अस्सी के दशक में ब्रह्मचारी और ऐलक के रूप में नैनागिरि में रहकर असाधारण साधना की हैं। उनके दार्शनिक चिंतन का सूत्रपात नैनागिरि की वरदत्त गुफा में और समीपस्थ सिद्ध शिला पर बैठकर हुआ है। उन्होंने पूरे देश में शताधिक कीर्ति स्तंभों की स्थापना के माध्यम से जैन संस्कृति को चिरस्थायी स्वरूप प्रदान किया है और अपने गुरु की कीर्ति में शताधिक गुनी वृद्धि की है। हमने और हमारे साथी, नैनागिरि तीर्थ के न्यासी तथा सुप्रसिद्ध पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. एस.के. जैन ने प्रमाणसागर जी से नैनागिरि में संयम कीर्ति स्तंभ स्थापित करने के लिये निवेदन किया और उन्होंने तुरंत ही सहर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान की। उनकी प्रेरणा तथा हमारे आग्रह से हमारे अभिन्न मित्र और देश के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री पन्नालाल जी बैनाड़ा आगरा द्वारा इस समुन्नत संयम कीर्ति स्तंभ की स्थापना की गई हैं। निश्चित ही यह स्तंभ गुरुदेव विद्यासागर जी की मुक्त हँसी, खुशी और यादों की खुशबू पेरे देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में सहस्त्रों वर्षों तक फैलाता रहेगा।

यह उल्लेखनीय है कि संयम कीर्ति स्तंभ का भूमि पूजन 7 मई 2017 को आर्यिका तपोमूर्ति जी के सान्निध्य में श्री अशोक कुमार जी जैन, ठेकेदार बण्डा और उनके साथियों द्वारा किया गया हैं। उन्होंने तथा बण्डा की पूरी जैन समाज ने कीर्ति स्तंभ के स्थल को विकसित करने के लिये और संबधित कार्य संपन्न कराने हेतु पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया है। अतः उन सबको हार्दिक साधुवाद।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के अध्यक्ष तथा बैनाड़ा जी के समधी माननीय श्री निर्मल जी सेठी ने नौका में बैठकर सरोवर के दक्षिण तट पर 1 नवम्बर 1981 को नैनागिरि में आचार्य श्री की प्रेरणा से समवसरण मंदिर का शिलान्यास किया था। शिलान्यास के कुछ समय बाद अस्सी के दशक में ही समवसरण मंदिर के निर्माण के लिये श्री निरंजनलाल एवं श्री रतनलाल जी बैनाड़ा ने बड़ी राशि प्रदान की थी। आपके द्वारा श्री सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नैनागिरि को भी सहयोग प्रदान किया गया था।

भूतल पर स्थित इस कीर्ति स्तंभ से जैन संस्कृति की कीर्ति थल के साथ-साथ जल और नभ में भी फैलेगी । हमारे मुनिवरों, प्रतिष्ठाचार्यों और विद्वानों की राय के अनुसार पूरे देश में निर्मित कीर्ति स्तंभ में भगवान पार्श्वनाथ समवसरण क्षेत्र के केन्द्र बिन्दु पर स्थापित इस कीर्ति स्तंभ की लोकेशन सर्वोत्तम है। विशाल चौबीसी मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की विशाल खड्गासन मूर्ति के बाई और स्थापित यह स्तंभ वरदत्त वन के उत्तरी प्रवेश तथा महावीर सरोवर के दक्षिणी तट की पहाड़ी पर स्थित है। हमारे खगोल वैज्ञानिकों और ज्योतिर्विदों ने बताया है कि जब सूर्य दक्षिणायन होगा तब पूरा कीर्ति स्तंभ महावीर सरोवर में प्रतिबिंबित होगा। सूर्य के उत्तरायण होते ही सूर्य की पूरी किरणों से कीर्ति स्तंभ आलोकित ही उठेगा। गत शताब्दि के सत्तर और अस्सी के दशक में नैनागिरि में चलते-फिरते विद्यासागर जी की स्मृति को जीवंत करेगा। इस परिसर के सौन्दर्यीकरण के सभी कार्य तीव्रगति से शीघ्र ही पूर्ण किये जा रहे हैं।

यह संयम कीर्ति स्तंभ अक्षांश 24 डिग्री 18 मिनिट 22 सेकेण्ड एवं देशांश 79 डिग्री 7 मिनिट 7 सेकेण्ड के बीचोबीच समुद्र की सतह से 470 मीटर (1542 फीट) ऊँचाई पर स्थित है। विन्ध्याचल की प्राचीनतम पर्वत श्रेणियों में सेमरा पठार नदी के उत्तरी तट पर स्थित नैनागिरि पर्वत पर मकराना मार्बल से बना श्वेत रंग का यह स्तंभ 31 फीट ऊँचा है। इस विशाल स्तंभ में

आचार्य श्री की दीक्षा से लेकर अब तक की साधना यात्रा को आकर्षक चित्रों और संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के चुने हुये सुन्दर शब्दों और वाक्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। इस कीर्ति स्तंभ में आचार्य श्री के आध्यात्मिक जीवन की पूरी झलक दिखाई देती है।

नैनागिरि में स्थापित यह विशाल संयम कीर्ति स्तंभ जैन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को नई ऊँचाई दे रहा है। यह स्तंभ आचार्य श्री की ऊँचाई से 6 गुना ऊँचा है। विन्ध्याचल की नैनागिरि पहाड़ी पर स्थित यह स्तंभ तेज हवाओं को झेल सकता है। भूकंप को सहन कर सकता है । यह स्तंभ राजस्थान के कलाकारों द्वारा वर्तमान कालीन कला के अनुरूप मार्बल स्टोन से बनाया गया है । यह स्तंभ हमारी राष्ट्रीय और वैश्विक महत्वाकांक्षा का प्रतीक है। जैन संस्कृति में बढ़ती आध्यात्मिकता के स्वाभिमान की प्रतीक है। इस स्तंभ के दर्शन करते हुये दर्शक नैनागिरि पहाड़ी की प्राकृतिक शीतल बहार का आनंद लेते हैं। सिद्ध शिला की पावन माटी को अपने माथे पर लगाते हैं।

नैनागिरि असीम प्राकृतिक ऊर्जा का केन्द्र है। यहाँ विद्यमान शक्ति संपन्न ऊर्जा के कण हमारी कष्टदायक और नकरात्मक तरंगों को नष्ट कर देते हैं। अतः इस आलेख के पाठकों से विनम्र आग्रह है कि वे नैनागिरि पधारें। भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर आत्मिक शांति तथा आनन्द प्राप्त करें और अपने जीवन का चतुर्मुखी विकास करें।

प्रशासन एवं प्रबंध में अध्यात्म का अवदान

हमारे समाज में बड़ी संख्या में उद्योगपति हैं, व्यवसायी हैं, डॉक्टर हैं, इंजीनियर हैं एवं वकील है। यह आवश्यक है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, प्रादेशिक प्रशासनिक एवं न्यायिक सेवा में भी हमारे नवयुवक अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। हमारी पवित्र वसुंधरा ने बीसवीं सदी में भारतीय संस्कृति के धुरंधर विद्वान प्रदान किये । चारित्रिक जगत के जाज्वल्यमान सूर्य, चन्द्र एवं नक्षत्रों को जन्म दिया। आज आवश्यकता है कि हम कुशल प्रशासक, प्रबंधक एवं न्यायिक अधिकारी राष्ट्र को सौपे।

बीसवी शताब्दी के तपोनिधि, आचार्य विद्यासागर जी महाराज एवं उनके संघ का चिन्तन सदैव आधुनिकता, एवं समाज के सर्वतामुखी विकास से प्रेरित एवं प्रभावी रहा है। इसी सोच के फलस्वरूप आज भारतीय संत परम्परा में उनका शीर्षस्थ स्थान हैं । उन्होंने समाज के सर्वतोमुखी विकास के लिये सामाजिक चेतना को अत्यधिक प्रभावित किया और मानव सेवा के उच्चतम मानदण्ड स्थापित किये। उन्होंने जैन समाज के युवक युवतियों को संस्कारित किया और समाज के प्रतिभाशाली एवं मेघावी छात्र/छात्राओं को आधुनिक प्रतियोगत्मक परीक्षाओं में अग्रसर होने के समुचित अवसर प्रदान करने हेतु जैन समाज को प्रेरित किया है। साधनों के अभाव में उपेक्षित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभा सम्पन्न युवक एवं युवतियों को समुचित सहायता एवं प्रशिक्षण प्रदान कर उनको सफलता की मंजिल तक पहुँचाया है।

हम अत्यधिक प्रसन्नता के साथ आपको स्मरण कराना चाहेंगे कि पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के आशीर्वाद से जबलपुर नगर में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गई है। हमें इस संस्थान की परिकल्पना करने, संस्था की संविधान बनाने और इसके संस्थापक संचालक के रूप में अपनी सेवायें प्रदान करने का अवसर मिला है। यह प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान परम्परागत संस्था नहीं हैं। सामान्य परम्पराओं के

आधार पर स्थापित संस्थाओं से इस संस्थान के उद्देश्य-कार्यकलाप भिन्न है। इस संस्थान का प्रमुख उद्देश्य प्रतिभाशली एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को केन्द्रीय एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोग द्वारा प्रशिक्षित करना एवं राष्ट्र और समाज के लिये कर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ और चरित्रनिष्ठ अधिकारी तैयार करना है । इस संस्थान का उद्देश्य ऐसे दूरगामी परिणामयुक्त कार्य करना है जो कार्य सामान्य कल्याणकारी संस्थाओं की क्षमता के बाहर हो। इस संस्था को प्रभावी स्वरूप देने के पावन उद्देश्य से आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने प्रशासन एवं न्याय के क्षेत्रों तथा सामाजिक संदर्भों में सच्चरित्र नागरिक की भूमिका पर आधारित सारगर्भित प्रवचन दिये और सतत रूप से अपना वात्सत्यपूर्ण आशीर्वाद एवं ओजपूर्ण प्रेरणा संस्थान एवं प्रशिक्षणार्थियों को प्रदान की है।

प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना एक अभिनव प्रयोग था। अब यह संस्थान अपनी शैशव अवस्था पूरी करते हुये यौवन की देहरी पर स्थापित हो गया हे। इस संस्थान द्वारा प्रशिक्षित प्रत्याशी मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर शासन की सेवा कर रहे है।

यह निर्विवाद तथ्य है। आप भी सोच सकते है कि हमारी सांस्कृतिक एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान केवल इतने से नवयुक/छात्र नहीं कर पायेंगे किन्तु यह एक लाभप्रद एवं प्रभावी जनोपयोगी शुरुआत है। यह संस्था अल्पकाय है किन्तु इसे महान व्यक्तियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त है। अतः यह संस्थान आपके जीवन का महत्वपूर्ण अंग बने यही हमारी हार्दिक कामना है। हम सभी का यह महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि इस संस्थान के चतुर्मुखी विकास हेतु विशिष्ट सहयोग प्रदान करें ।

आचार्य श्री सदैव आत्मकल्याण के साथ समाज कल्याण एवं राष्ट्र के अभ्युत्थान में सहभागी होने की मंगल प्रेरणा करते है। भारतीय लोक प्रशासन में कर्तव्य परायण, चारित्रनिष्ठ, ईमानदार एवं भारतीय संस्कृति के संस्कारों से सम्पन्न कुशल-प्रशासनिक अधिकारी हों, इस लोक मंगलकारिणी-भावना से गुरुवार आचार्य विद्यासागर महाराज के मंगल शुभाशीष एवं सद्प्रेरणा प्राप्त कर

इस संस्थान द्वारा प्रशिक्षित अधिकारी प्रशासन के विविध क्षेत्रों में चतुर्मुखी प्राप्त कर प्रशासन के स्वस्थ मानदण्ड स्थापित कर रहे है।

आचार्य विद्यासागर जी के आशीर्वाद एवं उनके परम शिष्य मुनि श्री क्षमासागर जी, मुनिश्री समता सागर जी तथा मुनि श्री प्रमाणसागर एवं ऐलक निश्चय सागर जी की पावन प्रेरणा से एवं उनके सान्निध्य में भोपाल नगर में उत्कृष्ट एवं आधुनिकतम शैक्षणिक एवं सेवा संस्थान आचार्य विद्यासागर प्रबंध विज्ञान संस्थान की स्थापना की गई है। वर्तमान में इस संस्थान द्वारा विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, ज्ञानोदय विद्यापीठ एवं ज्ञानोदय लिम्ब्स संचालित किये जा रहे है।

आचार्य विद्यासागर प्रबंध विज्ञान संस्थान द्वारा सुविकसित 20 एकड़ के विशाल माणिक- शकुन परिसर में रूपये 50 लाख की लागत से विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट के विशाल भवन एवं रूपये 45 लाख की लागत से बालक छात्रावास के भवन एवं इस वर्ष रूपये 70 लाख की लागत से नवीन महिला छात्रावास के भवन का निर्माण किया जा चुका है परिसर में जैन मंदिर की स्थापना भी हो चुकी है। हमें इस संस्थान के आकल्पन, संस्थापन और 25 वर्षों तक सफल संचालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हम नवीन जैन, यू. एस.ए. जैसे बड़े दानदाताओं के आभारी है जिन्होंने हमारी बेटी विद्युत-नितिन जैन की प्रेरणा से छात्रावास निर्माण के लिये हमें एक करोड़ से अधिक धनराशि प्रदान की। मुनिवर प्रमाणसागर जी बड़ी लंबी अवधि के बाद फरवरी 2020 को विद्यासागर इंस्टीट्यूट में पधारे। उन्होंने अपनी आँखों से संस्थान की प्रगति का अवलोकन किया और संस्थान के प्रबंध संचालक श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) की संस्थान और संचालन के लिये भरपूर सराहना की।

ज्ञानोदय विद्यापीठ की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य यह है कि प्रतिभा सम्पन्न छात्रों को उत्कृष्ट शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिये आवश्यक सभी सुविधायें उपलब्ध कराई जावें, जिससे उनकी प्रतिभाओं को निखारा एवं संवारा जा सके और वे अखिल भारतीय एवं राज्य सेवाओं, उद्योग, व्यवसाय, राजनीति सेवा

एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों में शीर्षस्थ स्थानों पर पहुंचकर अपने दायित्वों को सार्थकता, सफलता एवं समर्पण पूर्वक निवार्ह कर सकें।

ज्ञानोदय विद्यापीठ प्रत्येक छात्र की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों को विकसित कर रही है। प्रत्येक छात्र में मानवीय गुणों का विकास कर रही है जिससे कि वह भविष्य में जन-जन का हितैषी बन सके। प्रत्येक छात्र को श्रेष्ठ एवं शाश्वत जीवन मूल्यों, शांति, नैतिकता एवं प्रकृति प्रेम की शिक्षा दी जा रही है। ज्ञानोदय विद्यापीठ में प्राथमिक शिक्षा से लेकर महाविद्यालयीन शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण का प्रावधान किया गया है। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों के लिये निकट भविष्य में प्रवेश प्रशिक्षण की व्यवस्था की जावेगी। विद्यापीठ में सभी सुविधाओं से सम्पन्न विशाल पुस्तकालय एवं आवासीय परिसर का विकास किया जा चुका है। भोपाल स्थित अन्य संस्थाओं के छात्रों द्वारा भी इन सुविधाओं का लाभ लिया जा रहा है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर किन्तु प्रतिभावान छात्रों को न्यूनतम शुल्क पर अथवा निःशुल्क सुविधायें प्रदान की जा रही है।

विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट से 25 वर्षों में 1500 से अधिक युवक और युवतियाँ एम.बी.ए की परीक्षा उत्तीर्ण कर हमारे प्रदेश, राष्ट्र एवं विश्व के विभिन्न औद्योगिक संस्थानों में सेवा कार्य कर अपना प्रभावी योगदान प्रदान कर रहे है।

ज्ञानोदय लिम्ब्स द्वारा शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिये एक वृहद कल्याणकारी योजना का क्रियान्वयन किया गया है। इस योजना के अंतर्गत विकलांग व्यक्तियों के लिये कृत्रिम अंगों का निर्माण, प्रत्यारोपण एवं विकलांग व्यक्तियों का पुनर्वास एवं सर्वतोमुखी विकास किया गया है। हमें विश्वास है कि नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री राजेश जैन, आई.ए.एस. के सक्षम एवं कुशल नेतृत्व में यह संस्थान चतुर्मुखी विकास के पथ पर आगे बढ़ेगा और पूरे विश्व में जैन संस्कृति के विविध आयामों को विस्तृत करेगा।

राष्ट्रीय एवं सामाजिक उत्थान की दृष्टि से यह आवश्यक है कि हम अपने प्रतिभाशाली होनहार युवकों को इतना समर्थ बनायें कि वे राष्ट्र तथा समाज की प्रगति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। वर्तमान तथा भविष्य की राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को आकलन/मूल्यांकन करते हुये दूरदृष्टि पूर्वक हम ऐसे वट वृक्षों का बीजारोपण करें जो भावी पीढ़ियों के लिये वरदान सिद्ध हों सकें। यह आवश्यक है कि हम दीर्घकालीन एवं अन्ततः फलदायी योजनायें बनाये और पूरी दृढ़तापूर्वक उनका कार्यान्वयन सुनिश्चित करें। आज अपने नवयुवकों की राजनैतिक, प्रशासनिक प्रबंधन एवं न्यायिक क्षमता का सदुपयोग करना अत्यधिक आवश्यक है। हमारे नवयुवकों को प्रतियोगिता से भयभीत नहीं होना चाहिये। यह आवश्यक है कि हमारे नवयुवक, सम्पूर्ण परिश्रम एवं दक्षता के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठे, उत्तीर्ण हो, समाज सेवा के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आगे बढ़े और घृणा को प्यार से तथा पशुबल को आत्मबल से जीत कर उत्कृष्ट सांस्कृतिक परंपराओं को पुनः प्रतिष्ठित करें।

वर्तमान में चारित्रिक पतन और सतत पाश्चात्य अनुगमन युवाओं मे द्वन्द उत्पन्न कर रहा है। शाश्वत जीवन मूल्यों की उपेक्षा हो रही है। सात्विक जीवन के प्रति तटस्थता बढ़ रही है। वरिष्ठों के प्रति अपमान में वृद्धि हो रही है। तनाव, भय एवं असुरक्षा की भावनाओं में वृद्धि हो रही हे। भौतिकता के प्रति आकर्षण में सतत संबर्द्धन हो रहा है और उपभोक्तावाद प्रतिष्ठित हो रहा है। आचार्य विद्यासागर जी एवं उनके संघस्थ मुनिवर प्रमाणसागर जी प्रभृति साधुओं ने ऐसे दूषित सामाजिक परिवेश में युवाओं को सांस्कृतिक मूल्यों की गरिमा एवं पवित्रता के साथ विकास करने की प्रेरणा दी है और उन्हें रचनात्मक नेतृत्व एवं नायकत्व प्रदान किया है। उन्होंने युवाओं की निपुणता एवं कौशल में वृद्धि के लिये ठोस मार्गदर्शन दिया है। उन्होंने स्वयं सदैव जागरूक रहकर उन्हें स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर रखने के लिये प्रोत्साहित किया है। परिणामतः युवा शक्ति

में नये विश्वास एवं नई प्रेरणा की लहरों का संचार हुआ है। उन्होंने युवाओं को सुभाषचन्द्र बोस की चेतावनी जिस देश की तरूणाई सा जायेगी उस देश का भाग्य सो जायेगा को अपने व्यक्तित्व में आत्मसात करने का मूल्य मंत्र दिया है। आचार्य विद्यासागर जी जन-जन के परमेष्ठी तो है किन्तु अनुशासन, समय, शिष्टाचार, सरोकार, पारस्परिक विश्वास एवं साहचर्य की जीवंत प्रतिमूर्ति है। स्वभाव से स्वतः प्रस्फुटित होने वाले इन गुणों के कारण उनके शिष्य एवं श्रोतागण उनके प्रति सहज ही सम्पूर्ण रूप से समर्पित हो जाते है।

यह आवश्यक है कि आचार्य विद्यासागर जी के आध्यात्मिक नेतृत्व में हम आदर्श जीवन शैली अपना कर मानव मूल्यों, आध्यात्मिक आस्थाओं, अनुशासन और सामाजिक सुधार के प्रति दृढ़ता पूर्वक संकल्पित हो। यह भी आवश्यक है कि श्रमण संस्कृति के शाश्वत सिद्धांतों को सुरक्षित रखते हुए हम अपनी शैली में आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा सुस्थापित सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं को समुचित स्थान दें। सम्पूर्ण विश्व में उत्कृष्ट जीवन मूल्यों पर आधारित हमारी पहचान बनी हुई है। अपनी इस पहचान को हम अपनी विशिष्ट एवं वैज्ञानिक जीवन शैली तथा जीवन मूल्यों के द्वारा सुदृढ़ता एवं ठोस धरातम प्रदान करें। श्रमण संसकृति के मूल सिद्धांतों का पूर्ण समादर करते हुए हम अपने अध्यात्म का वैज्ञानीकरण करें। मन, वचन, एवं कर्म की एक रूपता स्थापित कर सुस्पष्ट सामाजिक छवि का निर्माण करें। हम सामाजिक शुद्धिकरण करते हुये ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्रों में नैतिकता की संस्थापना करें।

आचार्य विद्यासागर जी के निर्यापकत्व में नैनागिरि से संबद्ध साधकों और नैनागिरि में हुई समाधियाँ

मुनि क्षमासागर जी की प्रेरणा और आशीर्वाद से सल्लेखनाः समत्व की साधना के संपादन का सौभाग्य हमें (सुरेश जैन) वर्ष 2001 में प्राप्त हुआ था। यह पुस्तिका पं. (डॉ.) दरबारीलाल जी कोठिया की प्रथम पुण्यतिथि 3 जनवरी, 2001 पर स्वर्गीय श्रीमती लक्ष्मीबाई पारमार्थिक फण्ड बीना, म.प्र. द्वारा हमारे अभिन्न मित्र श्री विभव कोठिया जी के विशेष सहयोग से प्रकाशित की गई थी।

इस पुस्तिका की पृष्ठभूमि मुनिवर अजितसागर जी के द्वारा संकलित/संयोजित संल्लेखना : समत्व की साधना (समाधि के तेरह दिन) और उनके अनुभव पर आधारित है। इसमें कोठिया जी की समाधि के संस्मरण संकलित किये गये हैं । इस पुस्तिका में प्रकाशित आचार्य विद्यासागर जी के उद्गार समाधि की संपदा स्वरूप हमें उपलब्ध हुये है। आचार्य विद्यासागर जी ने अपने दैनिक संबोधन में उत्कृष्ट जैन सिद्धांत ग्रंथों से ध्यान एवं परिश्रम पूर्वक चुन-चुन कर 38 प्राकृत की गाथायें , संस्कृत के श्लोक और सूत्र, हिन्दी के रोलाछन्द तथा अपने द्वारा विरचित मुक्तक प्रतिदिन सुनाकर कोठिया जी को उत्कृष्टतम और सफलतम ढंग से समाधि के पथ पर अग्रसर किया है। हम जैसे वृद्ध व्यक्तियों के लिये इसका प्रतिदिन पाठ करना बहुत उपयोगी है।

यह उल्लेखनीय है कि इस लघु पुस्तिका में पण्डित दरबारीलाल जी कोठिया द्वारा लिखित लेख **''जैन दर्शन में सल्लेखनाः एक अनुशील''** और पण्डित दुलीचन्द कोठिया का आलेख **''सिद्धक्षेत्र नैनागिरि से नेमावर तक''** संकलित किये गये है । इस पुस्तिका में 46 विद्वानों और श्रेष्ठियों की विनयांजलियाँ, 51 श्रद्धा पत्रों की सूची तथा देश की प्रमुख 31 संस्थाओं द्वारा

पारित श्रद्धांजलियॉ की सूची प्रकाशित की गई है, जिनसे कोठिया जी के सम्पूर्ण जीवन का संक्षिप्त परिचय प्राप्त हो जाता है। अंत में कोठिया जी का एक अच्छा चित्र और उनकी समाधि के अवसर पर लिये गये छह दुर्लभ चित्र प्रकाशित किये गये है।

मुनिवर श्री अजितसागर जी ने सल्लेखना एवं समत्व की साधना के शीर्षक से प्रकाशित पुस्तिका मई 2020 में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सान्निध्य में हुई समाधि साधकों का विशेष विवरण संकलन कर लेखबद्ध किया है। इस पुस्तिका से लेकर हम मुनिवर क्षमासागर जी, ऐलक सुमतिसागर जी, मुनि समाधिसागर जी, पं. दरबारीलाल जी कोठिया की समाधियों की जानकारी इस आलेख में प्रस्तुत कर रहे है।

मुनिवर क्षमासागर जी, जिनकी दीक्षा नैनागिरि में हुई, मुनिवर सुमतिसागर जी महाराज जिनके गृहस्थ अवस्था के दादाजी श्री नंदकिशोर लोहिया और पिताश्री झलकनलाल जी लोहिया, जो नैनागिरि जैन तीर्थ के अध्यक्ष रहे है, की जानकारी भी सम्मिलित की गई है। नैनागिरि के 30 वर्षों तक अध्यक्ष रहे सेठ शिखरचन्द जी की धर्मपत्नि श्रीमती सरस्वती देवी के पिताजी ब्र. श्री राजाराम जी वर्णी जिन्हें समाधि के अवसर पर समाधिसागर नाम दिया गया था, की समाधि भी नैनागिरि में हुई थी। इसके साथ ही नैनागिरि में जन्में पण्डित श्री दरबारीलाल जी कोठिया सोंरई- बीना की तथा नैनागिरि में हुई साधकों की सल्लेखना का विवरण उद्धरित कर नीचे अंकित किया जा रहा है :-

1. मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज
   समाधि की तिथि-चैत्र शुक्ल-8
   वि.सं. 2072 मार्च 2015, शुक्रवार
   समाधि स्थल- मोराजी सागर, म.प्र.
2. मुनिश्री सुमतिसागर जी महाराज
   समाधि की तिथि-फाल्गुन शुक्ल, 12

वि.सं. 2065, 8 मार्च 2009, रविवार
समाधि स्थल- अशोकनगर, म.प्र.

3. पण्डित श्री दरबारीलाल जी कोठिया, सोंरई-बीना

सोमवार 3 जनवरी, 2000 पौष-दशमीं, वीर निर्वाण संवत् 2526, वि.सं. 2056 दोपहर 3.50 बजे सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर, जिला देवास, म.प्र. में आपकी समाधि हुई। आप न्यायाचार्य, जैन दर्शन के ख्याति प्राप्त राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित थे। आप आचार्य श्री के पास 26 दिसंबर 1999, दिन बुधवार को नेमावर में आये। उसी दिन से आपकी सल्लेखना प्रारंभ हो गई। आपने आचार्य श्री से 9वीं प्रतिमा के संकल्प लेकर समाधिमरण किया। आपकी समाधि के समय आचार्य श्री एवं पण्डित जी की लंबी परिचर्चा हुई थी। वह विभिन्न पुस्तिकाओं में प्रकाशित की गई है।

4. क्षुल्लक श्री चन्द्रसागर जी महाराज

आषाढ़ कृष्ण अमावस्या, वि.सं. 2035, बुधवार, 6 जुलाई सन् 1978 में सिद्धक्षेत्र नैनागिरि जी, जिला छतरपुर म.प्र. में सांय 7.30 बजे आपकी समाधि हुई। यह समाधि 8 दिन चली।

5. श्री समाधिसागर जी (दशम प्रतिमाधारी)

शनिवार, दिनांक 14.08.1982, भाद्रपद कृष्ण दशमी, वि.सं. 2039 को दोपहर 10.55 बजे श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि जी, जिला छतरपुर म.प्र. में 74 वर्ष की उम्र में आपकी समाधि हुई। आपका पूर्व नाम ब्र. राजाराम जी वर्णी था। आपने दसवीं प्रतिमा के व्रत लेकर 22 जून, 1982 को समाधि का संकल्प, अन्न त्याग, आचार्य श्री जी ने आपका समाधिसागर नामकरण किया। 26 जून 1982 को दूध त्याग, 25 दिन बाद छाछ त्याग, 21 दिन बाद जल त्याग पूर्वक समाधि हुई।

6. श्री समतासागर जी (दशम प्रतिमाधारी)

सोमवार दिनांक 18.10.1982 अश्विन शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 2039 को सांय 4 बजे श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि जी, जिला छतरपुर म.प्र. में 83 वर्श की उम्र में आपकी समाधि हुई। आपका पूर्व नाम ब्र. चिरोंजीलाल जैन, विदिशा था। आपके 20 जुलाई, 1982 को दस प्रतिमा सल्लेखना व्रत क्षेत्र न्यास एवं आचार्य श्री ने आपका समतासागर नामकरण 14 अगस्त 1982 अन्न त्याग, एक माह बाद 13 दिसंबर 1982 को छाछ त्याग, 34 दिन बाद 16 अक्टूबर 1982 को जल त्याग पूर्व समाधि हुई।

7. श्री स्वभावसागर जी (दशम प्रतिमाधारी)

मंगलवार दिनांक 02.11.1982, कार्तिक कृष्ण एकम् वि.सं. 2039 को श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि जी, जिला छतरपुर म.प्र. में 93 वर्ष की उम्र में आपकी समाधि हुई। आपका पूर्व नाम श्री बालचन्द्र जैन (महुनावाले) था। आपने 1 अक्टूबर 1982 को दस प्रतिमा ली। आचार्य श्री ने आपका स्वभावसागर नामकरण किया। अन्न त्याग, 31 दिन बाद 2 नवम्बर 1982 को छाछ त्याग, जल त्याग, रात्रि 11.20 पर समाधिमरण।

8. ऐलक श्री सुमतिसागर जी

सोमवार दिनांक 15.11.1982 कार्तिक कृष्ण अमावस्या, वि.सं. 2039 दीपावली को प्रातः 8 बजे श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि जी, जिला छतरपुर म.प्र. में आपकी समाधि हुई। आप 19 सितम्बर 1982 को नैनागिरि जी आये, 20 सितंबर से मात्र छाछ एवं जल, आहार पूर्व से ही लकवा की शिकायत होने के कारण 10 नवम्बर, 1982 को छाछ, जल दोनों ग्रहण में अशक्यता होने से त्याग किया। अंतिम 5 दिन निराहर रहे।

आचार्य वरदत्त प्रभृति पांच मुनिवरों की सिद्धभूमि नैनागिरि के इतिहास में अभिलेखित बाबा दौलतराम जी की समाधि वर्ष 1908-09 में हुई। गत शताब्दि के वर्ष सत्तर और अस्सी के दशक (वर्ष 1978-1987) में आचार्य

विद्यासागर जी के निर्यापकत्व में उपरिलिखित समाधियाँ हुई। इसके अतिरिक्त नैनागिरि से संबद्ध मुनि विश्वात्मसागर जी की समाधि तमिलनाड में हुई। आचार्य वर्द्धमानसागर जी के संघस्थ मुनिवर भविकसागर जी की समाधि 10 अप्रैल, 2013 को नैनागिरि में आचार्य वर्द्धमानसागर जी के निर्यापकत्व में हुई।

9. मुनि विश्वात्मसागर जी

आचार्य विरागसागरजी के संघस्थ मुनि विश्वात्मसागर जी की समाधि वर्ष 2006 में हुई थी। उनके गृहस्थ जीवन का नाम श्री फूलचन्द जैन पुत्र श्री बारेलाल जैन महुना जिला सागर था। उन्होंने वर्ष 2003 में मुनि दीक्षा ली। तमिलनाड में उनकी समाधि हुई। उनके तीन पुत्र-अवधेश कुमार, अतिशय और अविरल है। यह उल्लेखनीय है कि नैनागिरि जी में उन्होंने मंदिर क्र. 50 में भगवान पार्श्वनाथ की विशाल मूर्ति की स्थापना एवं समवसरण मंदिर में मानस्तंभ का निर्माण कराया। उनके पुत्रों द्वारा इसी मंदिर में अत्यधिक मनोरम एवं सुन्दर नवीन वेदी का निर्माण कराया गया है।

10 मुनि श्री भविकसागर जी

इक्कीसवीं शताब्दि के वर्ष 2013 में आचार्य वर्धमानसागर जी के नैनागिरि में शीतकालीन प्रवास के अवसर पर उनके संघस्थ मुनिश्री भविकसागर जी की समाधि दिनांक 10 अप्रैल, 2013 को नैनागिरि में हुई। उनके गृहसथ जीवन का नाम श्री शिखरचन्द्र पापड़ीवाल तथा वह किशनगढ़ के निवासी थे। उनके चार पुत्र-सुरेन्द्र, रमेश, महावीर एवं निर्मल पापड़ीवाल है। वे सभी किशनगढ़ में अपना व्यापार करते हैं।

वरदत्तादि पंच मुनिवरों का यह सिद्ध स्थल नैनागिरि तीर्थ मुनिवरों एवं साधुओं का बहुत बड़ा समाधि स्थल बन गया है। उपरिलिखित सभी आत्माओं को प्रणाम करते हुये, नैनागिरि में विराजे पारम प्रभु से हमारी प्रार्थना है कि सभी आत्मायें सिद्धपथ पर आगे बढ़ते हुये निकट भविष्य में नैनागिरि में स्थित सिद्धशिला से सिद्धत्व प्राप्त करें।

समग्र के चौथे भाग का प्रकाशकीय

द्वितीय सहस्त्राब्दि और बीसवीं शताब्दी की अंतिम तीन दशाब्दियों में परमगुरु आचार्य श्री विद्यासागर जी ने अपनी विश्व-स्तरीय मनीषा, उत्कृष्टतम चारित्रिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से जन-जन को प्रभावित कर उन्हें अपनी ओर सहज ही आकर्षित किया है। उन्होंने अपने ज्योतिपुंज तुल्य प्रभामण्डल से अपने शताधिक शिष्य संतों में से पूज्य क्षमासागर जी को जैन जगत के जाज्वल्यमान प्रकाश-स्तंभ के रूप में सुस्थापित किया है।

अपने साधनामय पवित्र जीवन के पिछले बीस वर्षो से पूज्य क्षमासागर जी अपनी हित, मित एवं प्रिय वाणी के माध्यम से जन-जन को धार्मिक सदभाव और समन्वय तथा अध्यात्म के विज्ञानीकरण एवं विज्ञान के अध्यात्मीकरण का व्यावहारिक एवं प्रभावी संदेश देते आ रहे हैं। उन्होंने जैन संस्कृति के उदारीकरण एवं वैश्वीकरण (भूमण्डलीकरण) में श्रेष्ठतम एवं अनुपम योगदान किया है। उनकी सरल, व्यावहारिक एवं प्रभावी वाणी अल्पकाल में ही आकाशवाणी का स्वरूप गृहण कर आधुनिकतम संचार माध्यमों से विश्व के कोने-कोने से प्रसारित हो ही रहा है।

पूज्य क्षमासागर जी महाराज के सतत निर्देशन एवं अमूल्य मार्गदर्शन में आचार्य विद्यासागर जी की आध्यात्मिक/साहित्यिक लेखनी से प्रसूत गद्य-पद्य रूपी सागर तथा उनकी वाणी से निसृत प्रवचन सागर को समग्र के चार भागों में संकलित किया गया है। समग्र आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की समग्रता का जीवंत प्रतीक है। हमारा विनम्र आग्रह है कि हम समग्र का अध्यापन/ अध्ययन कर अपने शाश्वत नैतिक मूल्यों की संपदा का सतत संरक्षण एवं संबर्द्धन करते हुये अपने सर्वतोमुखी विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ और अपने जीवन को साधना के मंगलदीप से आलोकित करें।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के आशीर्वाद एवं पूज्य मुनि क्षमासागर

जी, समतासागर जी एवं प्रमाणसागर जी एवं एलक निश्चयसागर जी की प्रेरणा से शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं मानव कल्याण से संबद्ध उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये सम्पूर्ण राष्ट्र के हृदयस्थल भोपाल नगर में आचार्य विद्यासागर प्रबंध विज्ञान संस्थान की स्थापना वर्ष 1985 में की गई। इस संस्थान की तीन इकाईयां विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमन्ट, ज्ञानोदय लिम्बस एवं ज्ञानोदय विद्यापीठ अपने सुविकसित विशाल परिसर एवं आधुनिक सुविधाओं में सम्पन्न भवनों में अपनी अपनी गतिविधियां उत्कृष्टतम स्तरों के आधार पर संचालित कर रही है। हमें इस संस्थान के आकल्पन, संस्थापन और संचालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। श्री संतोष कुमार जय कुमार जैन, बैटरी वाले, कटरा बाजार सागर के सहयोग से प्रकाशित समग्र का चौथा भाग आपके हाथों में सौंपते हुये हार्दिक प्रसन्नता है। ज्ञानोदय विद्यापीठ उन्हें इस सहयोग के लिये हार्दिक साधुवाद देती है और उनके वृहत परिवार के लिये मंगल कामनायें समर्पित करती है।

❖ ❖ ❖

आमुख
समग्र का तृतीय संस्करण

आचार्य विद्यासागर जी अपनी सक्षम एवं सफल सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। उनके प्रवचनों की स्वाभाविक उर्वरता के माध्यम से ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास की सुनहरी फसल लहलहाती रहती है। विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं को लांघते हुए उन्होंने प्रायः सम्पूर्ण राष्ट्र में बसे व्यक्तियों को मोक्षपथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने सांस्कृतिक अस्मिता को नई गहराई और विस्तार प्रदान किया है। आज वे जैन संस्कृति के अत्यधिक प्रभावी संत ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के विश्व दूत बन गये है।

आचार्य विद्यासागर जी जैनागम के महत्वपूर्ण सूक्त **मित्ती में सब्ब भूदेषू** को प्रतिक्षण जपते रहते है। उनके हृदय से निसृत प्रेम एवं आत्मीय स्नेह की ध्वनि तरंगे सदैव उनके व्यक्तित्व के चारों और व्याप्त रहती है। उनका विराट आध्यात्मिक दर्शन क्षमा और मैत्री की ठोस आधारभूमि पर स्थित है। उनके द्वारा प्रभावी ढंग से प्रचारित और प्रसारित क्षमा और मैत्री की भावनाये अहिंसक चेतना की जननी है। वे सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक रूप से अहिंसक चेतना को संपूर्ण राष्ट्र में विस्तीर्ण कर रहे है। उनकी शक्ति निस्सीम है और उसका प्रभाव अपिरमेय है। उनके पवित्र मन की अव्यक्त विचार तरंग जन-जन को सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। अहिंसा की उर्वर भूमि पर उन्होंने सर्वत्र, क्षमा मार्दव एवं आर्जव धर्म की जीवंत मूर्तियाँ स्थापित की है। इन धर्मों के सर्वांगीण विकास के माध्यम से उन्होंने अपनी समता की साधना को सिंचित किया है। उनके अतः करण की पवित्रता और निर्मलता से उद्भूत भाव धारा प्राणी मात्र के कल्याण के लिये सतत प्रवाहमान रहती है। उनका व्यक्तित्व विलक्षण, व्यापक, सहज, असीम और आकर्षक है। वे अपने प्रवचनों के माध्यम से जन-जन के कलुषित विचारों को परिष्कृत और परिमार्जित करते हुये राष्ट्र के अभ्युदय,

सुख, शांति और कल्याण के लिये प्रयत्नशील है। वे आधुनिकतावादी, प्रगतिवादी, अध्यात्मवादी एवं आस्थावादी चेतना के शीर्ष पुरुष, मेरूदण्ड एवं भारतीय वैचारिक वैभव के शीर्षस्थ संत है। उनके आध्यात्मिक एवं साहित्यिक अवदान को समग्र में पूज्य क्षमासागर जी द्वारा संकलित किया गया है।

पुरुषार्थ और निश्छल व्यक्तित्व के धनी क्षमासागर जी ज्ञान, ध्यान और तप की जीवंत प्रतिमा है। क्षमासागर जी श्रेष्ठ संत, मनीषी, कवि, चिंतक, प्रभावी प्रवचनकार, मौलिक साहित्य सृष्टा, वैज्ञानिक एवं अन्वेषक है। उनके आचार, विचार एवं व्यवहार की श्रेष्ठता उनके व्यक्तित्व को धवलता एवं गंभीरता प्रदान करती है। उनकी सहज सरल शिशुवत मुस्कान प्रत्येक व्यक्ति को अपनी और आकर्षित करती है। वे उन्मुक्त उपभोक्ता को संयमित उपभोक्ता बनाने में कुशल एवं सिद्धहस्त है। वे अहिंसा, शांति और नैतिकता के स्वरों को नई ऊर्जा, ऊष्मा एवं तेजस्विता प्रदान कर रहें है। वे मनशुद्धि, वचनशुद्धि और कायशुद्धि के साथ ही साथ आजीविका शुद्धि की आवश्यकता सदैव प्रतिपादित करते है। वे आतंरिक कषायों पर नियंत्रण करने का प्रभावी प्रशिक्षण देते है।

नैनागिरि तीर्थ पर आचार्य श्री विद्यासागर जी द्वारा दीक्षित स्वयंसिद्धा दृढ़मति जी अपनी प्रखर और दृढ़ संकल्प शक्ति के आधार पर आध्यात्मिक ऊँचाई पर सफलतापूर्वक बढ़ती जा रही है। उन्होंने अपनी नैसर्गिक ऊर्जा, क्षमता और दृढ़ता से विसंगत परिस्थितियों में भी सकारात्मक सोच से अपनी प्रतिभा का ध्वज दण्ड सर्वत्र स्थापित किया है। अपनी विशिष्ट प्राकृतिक छबि, ममत्व, स्नेह और वात्सल्य से अपनी यात्रा में प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित किया है। लक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती जैसी देवियों को अपने व्यक्तित्व में आत्मसात किया है। अपनी सक्षम, रचनात्मक और सक्रिय ऊर्जा तथा निष्ठा से आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वोच्च और श्रेष्ठतम ऊचाई प्राप्त की है। हमें गर्व है कि छात्र जीवन से ही उनसे, उनके परिवार और अनीता दीदी से हमारे आत्मीय संबंध रहे है।

पौराणिक प्रमाणों आधार पर वरदत्तादि पांच महार्षियों ने भगवान नेमीनाथ के काल में नैनागिरि से मोक्ष प्राप्त किया है। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर भगवान पार्श्वनाथ वाराणसी से यात्रा करते करते नैनागिरि पधारे। नैनागिरि में ईसापूर्व नौवी शताब्दि में उनका विशाल समवसरण (870 ईसा पूर्व से 770 ईसा पूर्व) संयोजित किया गया। अतः इस आमुख के पाठकों से हमारा विनम्र आग्रह है कि पुरुषार्थ सिद्धि के लिये नैनागिरि की यात्रा करें। सर्वार्थसिद्धि के लिये नैनागिरि में स्थित सिद्धशिला की यात्रा करें।

यह सराहनीय ओर अनुकरणीय है कि पूज्य दृढ़मति माताजी के 25 वें पावन दीक्षा वर्ष महोत्सव के प्रेरक प्रसंग पर श्री निर्मल कुमार जैन, अध्यक्ष, पिसनहारी मढ़िया, जबलपुर म.प्र. एवं श्री अजित प्रसाद जैन, रेवाड़ी के सहयोग से समग्र का यह तृतीय संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। उन्हें हार्दिक साधुवाद।

❖ ❖ ❖

बड़े बाबा की प्रतिमा का संस्थापन

पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज के आध्यात्मिक नेतृत्व में उनके संघ की दृढ़ इच्छाशक्ति एवं कुण्डलपुर क्षेत्र में पदाधिकारियों के सतत परिश्रम के परिणाम स्वरूप कुण्डलपुर में भगवान आदिनाथ बड़े बाबा की प्रतिमा निर्माणाधीन विशाल मंदिर में स्थापित की जा चुकी है। छोटे बाबा ने इस विशाल मूर्ति को नया जीवन प्रदान किया है। मंदिर का निर्माण पूर्ण होने पर यह मूर्ति हमें अद्भुत आनंद प्रदान करेगी।

भारतीय संविधान, भारत सरकार और राज्य सरकार के पुरातत्व संरक्षण अधिनियमों की मंशा के अनुरूप ही आचार्य श्री का प्रमुख उद्देश्य मूर्ति का संरक्षण ही है। संरक्षण की संकुचित वैधानिक व्याख्या को विस्तार देते हुए जैन समाज द्वारा नवीन मंदिर की आधारभूमि को भूकंप के प्रभाव से बचाने के लिये वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टि सुदृढ़ किया गया है। भारत सरकार ने अपनी सुस्थापित नीति के अनुसार महाराष्ट्र में स्थित अंजता एलोरा गुफा का संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण किया है। मध्यप्रदेश में स्थित भोजपुर शिवमंदिर का पुनः निर्माण किया है। ओंकारेश्वर में स्थित 24वें अवतार के विष्णु मंदिर को 3 किलोमीटर दूर स्थानांतरित कर संरक्षण किया है। दिल्ली में स्थित हुमांयु का मकबरा का संरक्षण किया है। इसी प्रकार के अनेक पूर्वोदाहरणों के अनुरूप कुण्डलपुर जैन तीर्थ के पदाधिकारियों द्वारा बड़े बाबा की मूर्ति को पुनः स्थापित एवं निकटस्थ उपयुक्त स्थल पर संस्थापित किया गया है। तीर्थ क्षेत्र के पर्यावरण को संरक्षित एवं विकसित किया गया है। नवीन मंदिर में स्थापित करने से मूर्ति के सौंदर्य एवं श्री संबर्द्धन में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

तृतीय सहस्त्राब्दि के मंगल प्रवेश पर मूर्ति संस्थापन के अवसर पर उद्घाटित जैन जगत की आध्यात्मिक शक्ति हमारी रचनात्मकता, पवित्र भावनाओं और अनुपम चरित्र को चिरस्थायी बनाये रख सकेगी। बड़े बाबा की अनसुनी हुई

अतीत की मौन ध्वनियों को सुनकर छोटे बाबा ने इस मूर्ति के संस्थापन हेतु प्रभावी ढंग से प्रेरणा देकर कुण्डलपुर में जैन इतिहास और संस्कृति का महत्वपूर्ण विश्वस्तरीय कीर्तिस्तंभ स्थापित किया है। बड़े बाबा की यह विशाल मूर्ति अब विश्व की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर बन गई है। बड़े बाबा की मूर्ति के संस्थापन और संरक्षण से यह सुनिश्चित हो गया है कि अब यह मूर्ति भूकंप, ग्रीष्म और शीत ऋतु के विपरीत प्रभावों को सहस्त्रों वर्षों तक सफलता पूर्वक झेल सकेगी और हमारी शताधिक पीढ़ियों को अक्षुण्ण रूप से उपलब्ध रह सकेंगी।

एनशियेन्ट मान्यूमेंट एक्ट 1904 के जनक वायसराय लार्ड कर्जन ने बीसवी शताब्दि के प्रवेश पर हमारे देश की पुरातत्व संपदा के वैज्ञानिक संरक्षण की प्रक्रिया का श्री गणेश करते हुये कहा था कि सुन्दरता के मंदिरों के दर्शनार्थियों की हैसियत से मैं उनमें गया हूँ। साथ ही उन्होंने यह प्रश्न उपस्थित किया था कि क्या धर्म के मंदिर के पुजारी के रूप में मैंने उनके संरक्षण और उनके पुनः निर्माण के लिये कुछ किया ? हमें यह उल्लेख करते हुये प्रसन्नता होती है कि इक्कीसवी शताब्दि के मंगल प्रवेश के अवसर पर कर्मवीर बनकर पूज्य विद्यासागर जी ने अपनी असाधारण शक्ति और साहस उद्घाटन किया है और मूर्ति के सफलतापूर्वक संस्थापन द्वारा इस प्रश्न का उपयुक्त एवं प्रभावी उत्तर दिया है। हमें विश्वास है कि भारतीय संविधान, भारत सरकार और राज्य सरकार उनके इस कर्म से ओतप्रोत उत्तर का सम्मान करेंगे।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा मध्यप्रदेश में स्थित खजुराहो के मंदिरों और मूर्तियों एवं सांची के स्तूप को विश्व धरोहर की सूची में सम्मिलित करा लिया गया है। भोपाल के समीप स्थित भीमबैठिका और भोजपुर को इस सूची में सम्मिलित कराया जा रहा है। मैं सम्पूर्ण जैन समाज से विनम्र आग्रह करता हूँ कि हम मिल जुलकर बड़े बाबा की मूर्ति जैसी अपनी सभी महत्वपूर्ण

सांस्कृतिक धरोहर को यूनाइटेड नेशंस एजूकेशनल सोशल एण्ड कल्चरल आर्गेनाइजेशन (यूनेस्को) द्वारा तैयार की जा रही विश्व धरोहर की सूची में सम्मिलित कराने के लिये आगे बढ़ कर ठोस प्रयत्न करें। बड़े बाबा के नवीन मंदिर को दिल्ली के अक्षरधाम में स्थित स्वामीनारायण मंदिर की भांति आधुनिकतम तकनीकों और प्रक्रियाओ से सुसज्जित करें और कम से कम राष्ट्रीय स्तर के आकर्षक और आधुनिकतम पर्यटन केन्द्र के रूप में सुविकसित करें। समीपस्थ वन्य क्षेत्र में जीव-जंतुओं और वनस्पतियों का संरक्षण एवं संवर्द्धन करें और तीर्थंकर वन विकसित करें।

भगवान महावीर ने तीन हजार वर्ष पूर्व इकोलॉजी के वर्तमान सिद्धांतों के अनुरूप जीव जन्तुओं को उनकें प्राकृतिक पर्यावास में रखने की दृष्टि से मोटे दोहरे कपड़े से पानी छानने और छानने के पश्चात् जीव राशि को जल के तल तक करूणापूर्वक पहुँचाने का महत्वपूर्ण सिद्धांत हमें दिया है। आज भी अनेक जैन घरों में इस सिद्धांत का नियमित पालन किया जाता है। इस लेखक के प्रयास से 1980 के दशक में विश्व स्तरीय संस्थाओं ने कपड़े से पानी छानने की प्रक्रिया अपनाने के लिये अनेक परिपत्र विश्व के सभी राष्ट्रों को प्रेषित किये है। यह उपयुक्त प्रतीत होता है बड़े बाबा के मंदिर परिसर में वैज्ञानिक ढ़ंग से पानी छानने की प्रक्रिया एवं इसके आधारभूत सिद्धांत एवं जैन भोजन और उसके प्रभावों का मल्टी मीडिया के माध्यम से प्रस्तुतिकरण करें।

इक्कीसवी शताब्दी ज्ञान की शताब्दी है। इस शताब्दी में किसी भी व्यकित, समाज, एवं राष्ट्र की पहचान ज्ञान से होती है। समय की आवश्यकता के अनुरूप यदि हमने अत्याधुनिक शिक्षा को अपनी समाज के अंतिम पंक्ति के अंतिम सदस्य तक नहीं पहुँचाया तो हम पिछड़ जावेंगे। कृषि युग में केवल भूमि, पूँजी, एवं श्रम की आवश्यकता होती। ज्ञान विशेषज्ञ, ज्ञानवान कर्ता एवं ज्ञानवान व्यक्ति ही हमारे समाज की महत्वपूर्ण पूँजी होगी। ज्ञानवान समाज ही प्रगति के सर्वोच्च सोपान पर स्थित होगा। अतः मेरा विनम्र निवेदन है कि हम इसी प्रकार

की दृढ़ इच्छा शक्ति, संपूर्ण समर्पण और तन, मन, धन से यह सुनिश्चित करें कि हमारी समाज के प्रत्येक परिवार के प्रत्येक पुत्र और पुत्री को राष्ट्रीय स्तर के उत्कृष्टतम एवं अत्याधुनिक शिक्षा केन्द्रों में सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये आवश्यक साधन और सुविधायें प्राप्त हो जिससे कि वह अपना शैक्षणिक लक्ष्य प्राप्त कर सकें। अपनी, अपने परिवार और अपनी समाज की चतुर्मुखी प्रगति कर सके।

तीर्थंकर विशेषांक : नैनागिरि तीर्थ और आचार्य विद्यासागर, 1978

तीर्थंकर विचार मासिक इंदौर के संपादक डॉक्टर नेमीचंद जैन एवं प्रबंध संपादक श्री प्रेमचंद जैन के द्वारा तीर्थंकर वर्ष 8 के अंक 7 और 8 को मिलाकर नवंबर दिसंबर 1978 में श्री नैनागिरि तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर विशेषांक प्रकाशित किया गया था। इस अंक में आचार्य विद्यासागर जी पर केंद्रित दादा नीरज जैन का आलेख **एक और विद्यानंदि** श्रीमती आशा मलैया का आलेख **एक तपः पूत कवि की काव्य-साधना,** श्री अजित जैन का लेख **युवा पीढ़ी का ध्रुव तारा,** उमेश जोशी की कविता **रोशनी का वह चेहरा,** पद्म श्री कैलाश मड़वैया का बुंदेली लोक धुन पर आधारित वंदना गीत **बंदौ रे तीरथ नैनागिरि** और श्रीमती आशा मलैया की कविता **विद्यांजलि** प्रकाशित की गई हैं। हमारे पिता सिंघई सतीश चंद्र जैन द्वारा संकलित आचार्य विद्यासागर जी से सबंधित विविध जानकारी, उनकी गुरु परंपरा और उनके साहित्य की सूची **जीवन की झाँकी : बालक विद्याधर से आचार्य विद्यासागर** शीर्षक से प्रकाशित की गई है।

डॉक्टर नेमीचंद्र जैन के द्वारा 30 अक्टूबर 1978 को नैनागिरि तीर्थ की सिद्ध शिला पर बैठकर आचार्य विद्यासागर जी से भेंटकर **भेंट, एक भेद विज्ञानी से** शीर्षक से स्वाध्याय चर्चा आयोजित की गई। 65 मिनिट तक की गई 12 पृष्ठ की अच्छे और प्राकृतिक माहौल, खामोशियों और अनकहीं फुसफुसाहटों से ओतप्रोत पुनः पुनः पठनीय यह आध्यात्मिक चर्चा इस पत्रिका में प्रकाशित की गई है। नैनागिरि स्थित सिद्ध शिला पर की गई इस चर्चा में डॉ. नेमीचन्द जी के साथ सम्मिलित होकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। इसके साथ ही डॉ. जैन का आलेख **एक तीर्थ यात्रा, जिसे भूल पाना असंभव है** - सम्मिलित है। सचमुच ही हम 42 वर्षों के बाद भी इस महत्वपूर्ण यात्रा का आज भी स्मरण कर रहे है।

तीर्थंकर के इस विशेषांक में **नैनागिरि खुलते हैं जहां अन्तर्नयन** शीर्षक से हमारा (श्री सुरेश जैन आई.ए.एस. का) आलेख प्रकाशित किया गया है। इस अंक में हमारी पत्नी श्रीमती विमला जैन की एक महत्वपूर्ण टिप्पणी **ये गड़बड़ियाँ** प्रकाशित की गई है। विमला जी ने सलाह दी है कि हम तथ्यों का स्वयं खूब सावधान, पूर्वाग्रह मुक्त, स्वतंत्र अध्ययन करें और किसी बहकावें में ना आयें। उनकी यह टिप्पणी आज भी सामयिक और उपयोगी है। इस अंक में अनेक राष्ट्रीय विद्वानों एवं आचार्यों के अनेक महत्वपूर्ण आलेख भी प्रकाशित किये गये हैं।

वर्ष 1975 से 1978 के बीच हमारी पदस्थापना इन्दौर में थी। विमला जी अगस्त 1978 में व्यवहार न्यायाधीश के पद पर पदस्थ हो गई थी। वर्ष 70 का दशक हमारे परिवार के चतुर्मुखी विकास का स्वर्णिम काल था। 5 सितम्बर 1978 को इन्दोर में दूरभाष पर हमें जानकारी मिली कि नैनागिरि में आचार्य श्री गंभीर रूप से अस्वस्थ है। शाम को हम ओर विमला जी भोपाल आये। भोपाल से हमने अपने मित्र डॉ. शिखरचन्द्र लहरी को साथ लिया और नैनागिरि पहुँचे। उनके पिता ब्र. भगवानदास जी लहरी, दमोह वाले, आचार्य श्री की सेवा सुश्रूषा में जुटे थे। यह देखकर हम लोग स्तब्ध हो गये कि वहाँ आचार्य श्री की समाधि की चर्चा चल रही है। क्षुल्लक श्री सन्मतिसागर को सागर से बुला लिया गया है। 6 और 7 सितम्बर 1978 को डॉ. शिखरचन्द्र लहरी ने गुरुदेव का उपचार किया। हमारे पिता सिंघई सतीशचन्द्र जी और माता श्रीमती केशरदेवी जी ने आचार्य श्री को चिकित्सक के बतायें अनुसार आहार दिया। आचार्य श्री स्वस्थ हो गये। नैनागिरि से लौट कर हम लोग भोपाल में डॉ. शिखरचन्द्र लहरी को छोड़ते हुए इन्दौर लौट आयें।

इन्दौर में हमने विमला जी के देवास में प्राध्यापक रहे डॉ. नेमीचन्द्र जैन, श्री मिश्रीलाल जी गंगवाल, राजकुमार सिंह कासलीवाल, देव कुमार सिंह कासलीवाल, बाबूलाल पाटोदी और श्री डी.सी. जैन सी.ए., आदि जन

प्रतिनिधियों और श्रेष्ठीजनों से आचार्य श्री के दर्शन करने के लिये नैनागिरि चलने का आग्रह किया। हमारे आग्रह पर 4-5 नवम्बर 1978 को महावीर ट्रस्ट की बैठक श्री मिश्रीलाल जी गंगवाल की अध्यक्षता में आचार्य श्री के सान्निध्य में नैनागिरि में आयोजित की गई । इन्दौर के उपरलिखित जैन प्रतिनिधियों की यह आचार्य श्री से प्रथम भेंट थी। आचार्य श्री के दर्शन कर वे बहुत प्रसन्न हुये। इसकी चर्चा इन्दौर से पूरे प्रदेश और देश में फैल गई।

डॉ. नेमीचन्द जी से नैनागिरि और आचार्य श्री पर केन्द्रित तीर्थंकर का विशेषांक निकालने हेतु हमने सितम्बर 78 के द्वितीय सप्ताह में निवेदन किया। वे सहमत हो गये। अतः उन्हें इन्दौर से साथ लेकर हम लोग 29 अक्टूबर, 1978 को सागर आये। वहाँ से 30 अक्टूबर को प्रातः श्री संतोष कुमार जी बैटरी वालों के साथ नैनागिरि गये और 30 अक्टूबर 1978 को आचार्य श्री के दर्शन किये और विशेषांक के लिये आवश्यक जानकारी एकत्रित की।

आचार्य श्री विद्यासागरजी से संबंधित डॉ. नेमीचन्द्र जी के आलेख के निम्नांकित उद्धरण मौलिक, तथ्यपरक, वस्तुनिष्ठ, पठनीय और संग्रहणीय हैं -

आध्यात्मिक ''मस्ती से छकाछक खड़खड काया, ऐसी जैसे आग मे विदग्ध स्वर्ण। अभय की जीवंत प्रतिमा। रोम-रोम में आज भी जहाँ- तहाँ विद्याधर, वैसा ही भोलापन, वैसी ही निरीह, निष्काम मुद्रा। सात सुरों के लय-पुरुष, संगीत में गहरी रूचि, कवि, भाषाविद्, दुर्द्धर साधक, तेजोमय तपस्वी। बोलने में मंत्रमुग्धता, आचरण से स्पष्टता, कहीं-कोई प्रचार-कामना नहीं, सर्वत्र सुख, शांति, स्वाध्याय।

वस्तुतः एक महान् मनीषी और तेजस्वी तपोधन से मिलने का सुख ही कुछ और होता है। बिल्कुल अपनी तरह का अनोखा, अकेला।

कुछ ही दूरी तय की होगी कि सुना कोई स्वर पक्षियों के साथ आत्मविभोर है। आचार्य श्री सिद्धशिला पर एकाकी आसीन कोई गाथा गुनगुना रहे थे, अच्छा लगा यह देख कि वे पक्षियों की भाँति स्वच्छन्द, निर्मल, स्वाधीन,

स्वाभाविक, नदी की तरह गतिमान, जल की तरह करूणार्द्र, चट्टान की भाँति अविचल हैं। सिद्धशिला पर पहुँच कर चर्चा आरंभ हुई। भेद विज्ञान से लेकर दिव्यध्वनि तक, तरूणों से लेकर शिशुओं तक आनन्द और अमृत बरस-बरस पड़े। धूप तेज थी, पर महसूस नहीं हुई। डगर कंटकाकीर्ण थी, किन्तु चुभन का अहसास नहीं हुआ। आचार्य श्री चर्चा करते जाते और भीतर गहरे उतरते जाते। वे तरूणः किन्तु शैशव उनका साथ कभी नहीं छोड़ता । शैशव उनकी अनिवार्यता है, वह उन्हें कभी वृद्ध नहीं होने देता, सदा हरा-भरा रखता है।

शाश्वत जैन तीर्थ नैनागिरि से संबंधित डॉ. नेमीचन्द्र जी के निम्नाकिंत शब्दचित्र, कथन,अभिमत और अमूल्य सुझाव उल्लेखनीय हैं :-

यों तो समूची विन्ध्यश्रेणी ही प्रणम्य है, किन्तु भीतर की आँख उघाड़ने वाला नैनागिरि विशेषतः प्रणम्य है। इसकी नैसर्गिक शोभाश्री अद्‌भुत है। बुन्देलखण्ड (विन्ध्येलखण्ड) शौर्य, पराक्रम, पुण्य, पुरूषार्थ की भाग्यशालिनी धरती तो है ही, अध्यात्म-शूरता में भी वह किसी से कम नहीं है। नैनागिरि सिद्धक्षेत्र है, इसे रेशिंदी या रेशिंदेगिरि भी कहते हैं। यहाँ से वरदत्तादि पांच मुनि श्रेष्ठ मोक्ष पधारे थे और यहाँ भगवान पार्श्वनाथ का समवसरण आया था । सारा गिरि-अंचल प्राकृतिक छटा से शोभित है, मनोहारी है। यहाँ 52 जिनालय है -सभी सादा, सुखद, संप्रेरक।

नैनागिरि के सरोवर में एक मंदिर है, जिसे जलमंदिर कहा जाता है। इसी से सटी एक सड़क है, जो रेशंदीगिरि जाती है, जहाँ मूल नायक भगवान पार्श्वनाथ की विशुद्ध लोककला की प्रतीक प्रतिमा प्रतिष्ठित है। प्रतिमा अधिक पुरानी नहीं हैं , किन्तु सर्पाकृतियों में वहाँ की ऑचलिकता प्रतिबिम्बित है। यह बियावान निर्जन क्षेत्र बिलकुल निरापद और निष्कण्टक है। प्रतिमायें भव्य हैं, वीतरागता में जीवंत हैं।

मूलतीर्थ से लगभग डेढ़ किलोमीटर के फॉसले पर वन्य प्रदेश में गहरे एक सिद्धशिला है, जो आपोआप बनी है- स्वाभाविक है, अकृत्रिम है, सुन्दर है,

आकर्षक है। एक ही चट्टान काटकर आसन और छत्र दोनों बन गई है। ढलान की चट्टान स्याह है, आजादी से पहले और उसके कुछ दिनों बाद उपलब्ध खादी-सी खुरदुरी। इस पर उभरी अधिक स्याह रेखायें भूमिति के रेखाचित्रों की तरह बड़ी अदभुत लगती हैं, लगता है जैसे धूप में कोई अमावस्या आ बिछी हो। चरण प्रदेश में नदी है, परिपार्श्व में हरे-भरे वृक्ष हैं। पक्षी चहकते हैं, झींगुर झॉझ बजाते हैं, बंदर किकयाते हैं, हवायें मंद-मंद बहती हैं और एक आध्यात्मिक गूंज नामालूम कहाँ से आकर वातावरण को झनझनायें रहती है।

माना कि आचार्य श्री निर्ग्रन्थ हैं, किन्तु यहाँ उनके वर्षायोग की स्मृति में कोई आश्रम या धर्मशाला बनायी जाय इसकी अपेक्षा तो यही अधिक श्रेयस्कर होगा कि सारे बुन्देलखण्ड का एक केन्द्रीय जैन विद्या शोध ग्रंथालय यहाँ स्थापित किया जाये जो आगे चलकर न केवल मध्यप्रदेश का वरन् सारे उत्तर भारत का एक विशिष्ट अनुसंधान-केन्द्र बने, जहाँ केवल दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ ही संगृहीत न हों वरन् देश-विदेश से पाण्डुलिपियों की माइक्रो फिल्में प्राप्त की जायें और विशेषज्ञों तथा सामान्यों दोनों के लाभार्थ उसे समृद्ध किया जाये। यह योजना कोई छोटी-मोटी योजना न हो वरन् एक सु-विशाल योजना हो जिस पर कम से कम एक करोड़ रूपये खर्च किये जायें। इससे सिद्धिशिला का महत्व बढ़ जायेगा और वह सिद्धिशिला का रूप ग्रहण कर लेगी। इस काम को बुन्देलखण्डवासियों को तो करना ही है, किन्तु इसे सारे देश के जैनों को एक हृदय होकर भी करना चाहिये।

इस यात्रा में इन्दौर से भाई सुरेश जी, जो जैन तीर्थ के न्यासी है और सागर से भाई संतोष जी, जो न्यासी और उपाध्यक्ष है साथ रहे। प्रिय संतोष पूरे संतोषी प्राणी हैं। कम उम्र में साधना और तप की और उनका ध्यान हैं। परिपक्वता ऐसी इतनी है कि सत्तर वर्ष की बूढ़ें में भी चिराग लेकर ढूंढने पर शायद ही हासिल हो, किन्तु हर काम में विनम्र सहयोग, हर स्थिति में सहकार्य।

श्री सुरेश जी के पिता भाई श्री सतीशचन्द्र जी ने वर्षों यहाँ काम किया है, सारा

क्षेत्र ही उनकी अविरल साधना का परिणाम है। उन्होंने निर्जन रातें और सन्नाटें भरे दिन बितायें है, और इसे सब्ज करने में कई दशाब्दियाँ लगाई है। समाज को श्री जैन के प्रति असीम कृतज्ञता का अनुभव करना चाहिये। आज भी वे इसके सर्वांगीण विकास में रूचि लेते हैं और प्रयत्न करते रहते है कि यह तीर्थ भारत का एक प्रमुख तीर्थ बनें।''

तीर्थंकर के इस विशेषांक की 5000 प्रतियां मुद्रित की गई। प्रदेश के प्रमुख नगर इन्दौर से व्यवस्थित ढंग से पूरे देश और विदेश के प्रबुद्धजनों को प्रेषित की गई। प्रारंभिक काल में ही गुरुदेव की कीर्ति तथा जैन तीर्थ नैनागिरि की प्रतिष्ठा को सहज ही पूरे देश तथा विदेश के अनेक प्रमुख नगरों में फैलाने में तीर्थंकर विशेष निमित्त बना।

आचार्य विद्यासागर जी से संबंधित नैनागिरि के तेरह प्रेरक प्रसंग

मुनिवर क्षमासागर द्वारा विरचित और अपने गुरु विद्यासागर जी के जीवन पर केन्द्रित आत्मान्वेषी एक शिशु की सिद्ध यात्रा है। विद्याधर से विद्यासागर बनने की कहानी है। शरद पूर्णिमा के सिद्धाचल तक जाने की यात्रा है। आत्मान्वेषी के पठन से ज्ञानसागर जी के अहं के निःशेष विसर्जन, सम्पूर्ण समर्पण और वीतरागता की पराकाष्ठा की पावन ध्वनि सर्वत्र प्रगट होती है। सुप्रसिद्ध और सशक्त गीतकार मुनि क्षमासागर ने आत्मान्वेषी में गुरुदेव के 18 वर्षों (1978-1995) के 45 प्रेरक प्रसंग सम्मिलित किये है। बुन्देली बोली की लोच और लोक स्पर्श से भरपूर मंजी हुई भाषा में लिखे सभी प्रसंगों से हमने नैनागिरि से संबंधित 13 प्रसंग, जिनकी संख्या विभिन्न स्थलों की तुलना में सर्वाधिक है, लेकर इस पुस्तिका में सम्मिलित किये है। अनुभूति की आर्द्रता से ओतप्रोत सभी प्रसंग जन-जन की आध्यात्मिक प्रगति के लिये प्रासंगिक है, पठनीय है और सतत स्मरणीय है। सभी 13 प्रसंग नीचे उद्धरित किये जा रहे हैं-

1. वीतरागता -मैने सुना है एक दिन आचार्य महाराज रोज की तरह स्वाध्याय में लीन थे। लोग दर्शन करने आ-जा रहे थे, सभी चॉवल चढ़ाते जा रहे थी। इतने में अचानक सभी को चॉवल चढ़ाते देखकर एक बच्चे ने ✲ अपने हाथ में रखी हुई चाकलेट चढ़ा दी। बच्चे के भोलेपन पर सभी हॅसने लगे। बात आई-गई हो गई। इस घटना के स्मरण से आज भी मन उद्वेलित हो उठता है। यदि हम भी ऐसे वीतरागी गुरु को पाकर बच्चों के समान सरलता व सहजता से संसार में प्रिय मालू पड़ने वाली वस्तुओं का त्याग करने के लिये तत्पर हो जायें तो मुक्ति के मार्ग पर चलना कठिन कहाँ है ?

✲ यह बच्चा विकास सिंघई अपने सहयोगियों के साथ अब लंदन में जैन मंदिर का निर्माण कर रहा है। नैनागिरि में संचालित जैन विद्यालय को भरपूर सहयोग दे रहा है।

2. पावन संदेश- वर्षाकाल चल रहा था। हम लोग आचार्य महाराज के दर्शन करते पहुँचे थे। दोपहर मे हमेशा की तरह आचार्य महाराज के प्रवचन हुये। प्रवचन के बाद पार्श्वनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार से बाहर निकालते समय सभी ने देखा कि दीवार के सहारे एक छिद्र में दो सर्प बैठे हैं। आचार्य महाराज की भी नजर पड़ी। वे क्षणभर वहाँ ठहर गये और बोले-सर्पराज ! शांत भाव से निर्द्वन्द्व होकर विचरण करो। पूर्व में किये किसी अशुभ कर्मो के उदय से यह पर्याय मिली है। इसका सदुपयोग करों। अपना आत्म-कल्याण करो। किसी का अहित न हो, इस बात का ख्याल रखो। यह उनकी अत्यंत प्रेम-पगी वाणी थी। मानो यह पावन संदेश था।

दिन बीतते रहे। कई बार लोगों ने प्रवचन के समय उन सर्पों को बैठे देखा। किसी का अहित उन सर्पो के द्वारा नहीं हुआ। यह सब देखकर मेरा विश्वास दृढ़ हो गया कि सचमुच, इसी तरह तीर्थंकर की समवसरण सभा में सभी प्राणी आते होंगे और अपनी-अपनी भाषा में धर्म की बात समझकर आत्महित में लग जाते होंगे। यह नैनागिरि क्षेत्र में भी पार्श्वनाथ भगवान की समवसरण स्थली रहा है जो आज आचार्य महराज के उपदेशों से अनुप्राणित होकर प्राणीमात्र के कल्य ाण में सहायक हो रहा है।

3. अभयदान- चातुर्मास स्थापना का समय समीप आ गया था। सभी की भावना थी कि इस बार आचार्य महाराज नैनागिरि में ही वर्षाकाल व्यतीत करें। वैसे नैनागिरि के आसपास डाकुओं का भय बना रहता था, पर लोगों को विश्वास था कि आचार्य महाराज के रहने से सब काम निर्भयता से सानन्द सम्पन्न होंगे। सभी की भावना साकर हुई। चातुर्मास की स्थापना हो गई।

एक दिन हमेशा की तरह जब आचार्य महाराज आहार-चर्या से लौटकर पर्वत की ओर जा रहे थे तब रास्ते में समीप के जंगल से निकलकर चार डाकू उनके पीछे-पीछे पर्वत की ओर बढ़ने लगे। सभी के मुख वस्त्रों से ढके थे, हाथ में बन्दूके थीं । लोगों को थोड़ा भय लगा, पर आचार्य महाराज सहजभाव से आगे

बढ़ते गये। मंदिर में पहुँचकर दर्शन के उपरांत सभी लोग बैठ गये। आचार्य महाराज के मुख पर बिखरी मुस्कान और सब ओर फैली निर्भयता व आत्मीयता देखकर डाकुओं का दल चकित हुआ। सभी ने बन्दूकें उतारकर एक ओर रख दीं और आचार्य महाराज की शांत मुद्रा के समक्ष नतमस्तक हो गये।

आचार्य महाराज ने आशीष देते हुए कहा कि निर्भय होओ और सभी लोगों को निर्भय करो। हम यहाँ चार माह रहेंगें, चाहो तो सच्चाई के मार्ग पर चल सकते हो। वे सब सुनते रहे, फिर झुककर विनत भाव से प्रणाम करके धीरे-धीरे लौट गये।

फिर लोगों को नैनागिरि आने में जरा भी भय नहीं लगा। वहाँ किसी के साथ कोई दुर्घटना भी नहीं हुई। आचार्य महाराज की छाया में सभी को अभय-दान मिला।

4. सच्चा रास्ता-चातुर्मास में जयपुर से कुछ लोग आचार्य महाराज के दर्शन करने नैनागिरि आ रहे थे। वे रास्ता भूल गये और नैनागिरि के समीप दूसरे रास्ते पर मुड़ गये। थोड़ी दूर जाकर उन्हें अहसास हुआ कि वे भटक गये हैं। इस बीच चार बंदूकधारी लोगों ने उन्हें घेर लिया। गाड़ी में बैठे सभी यात्री घबरा गये। एक यात्री ने थोड़ा साहस करके कहा कि भैया, हम जयपुर से आये है। आचार्य विद्यासागर महाराज के दर्शन करने जा रहे हैं , रास्ता भटक गये हैं, आप हमारी मदद करें। उन चारों ने एक दूसरे की ओर दूखा ओर उनमें से एक रास्ता बताने के लिये गाड़ी में बैठ गया।

नैनागिरि के जल मंदिर के समीप पहॅुचते ही वह व्यक्ति गाड़ी से उतरा और इससे पहले कि कोई कुछ पूछे, वह वहाँ से जा चुका था। जब यात्रियों ने सारी घटना सुनाई तो लोग दंग रह गये। सभी को वह घटना याद आ गई, जब चार डाकुओं ने आचार्य महाराज से उपदेश पाया था। उस दिन स्वयं सही राह पाकर आज इन भटके हुये यात्रियों के लिये सही रास्ता दिखाकर मानो उन डाकुओं ने उस अमृत-वाणी का प्रभाव रेखांकित कर दिया।

5. सजगता- अचानक खबर मिली कि आचार्य महाराज अत्यधिक अस्वस्थ हैं। तीव्र ज्वर है। तमाम बाह्य-उपचार के बावजूद भी लाभ नहीं हो पा रहा। सुनकर मन बेचैन हो उठा। तुरंत ही उनके समीप पहुचने का निश्चय कर लिया। जीवन भर व्यक्ति अपने ऊपर आने वाली सैकड़ों आपदायें सहन कर लेता है, पर किसी रोज जब उसे यह मालूम पड़ता है कि वे चरण पीड़ा से गुजर रहे हैं जिन चरणों में उसने स्वयं को समर्पित किया है, तब वह पीड़ा असहाय हो जाती है। स्वयं को संभालना मुश्किल हो जाता है। जैसे-तैसे अपने को संभालकर रात्रि के अंधेरे में उन तक पहुँचने के लिये यात्रा प्रारंभ करा दी।

रात के सन्नाटे में नैनागिरि के उस सुनसान जंगल से गुजरते वक्त जरा भी भय नहीं लगा। एक समय था जब इस जंगल में दस्यु-दल के आतंक की छाया डोलती थी और आदमी दिन के उजाले में भी इस ओर यात्रा करने से डरता था। आज सब ओर अभय की स्वच्छ, शीतल और पवित्र चांदनी फैली हुई है। यह सब उनकी चरण-रज का प्रताप है।

वहाँ पहुँचकर जब समीप जाकर उन्हें देखा तो लगा मात्र उनकी देह ही रुग्ण है, वे तो आत्मस्थ हैं, स्वस्थ हैं। सेवा मे लगे लोगों ने बताया-अभी कुछ देर पहले ज्वर की असह्य पीड़ा से जकड़ी उनकी देह को सहारा देकर उठाते वक्त उनकी सजगता देखते ही बनती थी। करवट बदलने से पहले उन्होंने बड़ी तत्परता के साथ पिच्छिका से स्थान परिमार्जित किया और पुनः लेट गये। मैं जितनी देर उनके समीप रहा यही सोचता रहा कि ऐसी शारीरिक पीड़ा के बावजूद भी इतनी आत्म-जाग्रति कैसे रह पाती है ?

इसी बीच यह भी मालूम पड़ा कि कल वेदना की तीव्रता इतनी रही कि रोग असाध्य मानकर आचार्य महाराज ने बहुत संयत और शांत भाव से अपने सभी शिष्यों को बुलाकर अपना आचार्य-पद त्याग करने और सल्लेखना लेने की बात सामने रखी। सभी शिष्य चकित और हतप्रभ हो गये। ऑखों में आंसू भरे, सिर झुकायें सब एक ओर हाथ जोड़े रह गये। सब इस सोच में डूब गये कि जाने

अब क्या होगा ? उन क्षणों में आचार्य महाराज की पद के प्रति अलिप्तता और आत्म-कल्याण के लिये स्तुत्य सजगता उनकी उत्कृष्ट साधना का परिचय दे रही थी।

धीरे-धीरे रात बीत गई। सभी ने बहुत उगते सूरज के साथ-साथ उन्हें भी बाहर रोशनी आते देखा। मैंने चाहा कि आगे बढ़कर उन्हें थाम लूँ, पर उनकी मुस्कान में झलकते आत्म-बल के सामने मैं स्वयं ही थम गया। वे देह के विकार को विसर्जित करने जंगल की ओर जा रहे थे। मैं उनके पीछे कमंडलु लिये चलते-चलते सोचता रहा कि क्या कभी ऐसे ही अपने अंतस् के तमाम विकारों को विसर्जित करके आत्म-शुद्धि के लिये मैं भी प्रयत्न कर पाऊंगा ? जो भी हो पर उनका सहारा पाकर लग रहा हैं कि सब संभव है। जंगल से वापिस आते ही मैंने उनके श्री-चरणों में अपना माथा रखा और स्वंय को समर्पित कर दिया।

आज उनकी अस्वस्थता का यह तीसरा दिन था। ज्वर की वेदना और अंतराय कर्म की प्रबलता के कारण पिछले दो दिन निराहर ही बीत गये। इन दिनों पीड़ा से जिस दौर से वे गुजरे हैं उसे देख/सुनकर सभी लोग चिंतित थे। सैकड़ो लोग मंदिर के बाहर प्रांगण में बैठकर णमोकार-मंत्र का स्मरण कर रहे थे। आहार-चर्या से पूर्व शुद्धि कराने के लिये कुछ लोगों ने उन्हें सहारा देना चाहा, पर वे अकेल ही शुद्धि के लिये आगे बढ़ गये। मुझे लगा कि सचमुच, आत्म-शुद्धि के लिये ऐसे ही एकाकी होना होगा। हमें स्वयं ही अपने आत्म-शोधन की तैयारी करनी होगी।

अगले ही क्षण जैसे ही उन्होंने आहार-चर्या के लिये मंदिर के बाहर पहला पग रखा, मैने देखा सभी का मन भर गया। देह रूग्ण होने के बावजूद भी उनका मुस्कुराते हुये आगे बढ़ना, चौके में पहुँचना, और नवधा-भक्ति पूरी होने पर पाणिपात्र में शांत भाव से आहर ग्रहण करना-सभी कुछ सहजता से हुआ, पर लोग सांस थामे, अपलक खड़े देखते रहे और णमोकार जपते रहे। उन संवेदनशील क्षणों में हम सभी ने यह महसूस किया कि हमारा जन्म सार्थक हो

गया है। आचार्य महाराज के खड़ग-धार पर चलने के समान कठिन मुनि-मार्गों पर चलते कदम हमें जीवन भर सच्चाई के रास्ते पर चलने का साहस दे रहे थे।

6. अनुकंपा- सागर से विहार करके आचार्य महाराज संघ-सहित नैनागिरि आ गये। वर्षाकाल निकट था, पर अभी बारिस आई नहीं थी। पानी के अभाव में गाँव के लोग दुखी थे। एक दिन सुबह-सुबह जैसे ही आचार्य महाराज शौच-क्रिया के लिये मंदिर से बाहर आये, हमने देखा कि गांव के सरपंच ने आकर अत्यंत श्रद्धा के साथ उनके चरणों में अपना माथा रख दिया और विनत भाव से बुन्देलखण्डी भाषा में कहा कि हजूर ! आप खों चार मईना इतइ रेने हैं और पानू ई साल अब लों नई बरसों, सो किरपा करों पानू जरूर चानें है।

आचार्य महाराज ने मुस्कुराकर उसे आशीष दिया, आगे बढ़ गये। बात आई-गई हो गई, लेकिन उसी दिन शाम होते-होते आकाश में बादल छाने लगे। दूसरे दिन सुबह से बारिश होने लगी। पहली बारिस थी। तीन दिन लगातार पानी बरसता रहा। सब भीग गया। जल मंदिर वाला तालाब भी खूब भर गया।

चौथे दिन सरपंच ने फिर आकर आचार्य महाराज के चरणों में माथा टेक दिया और गद्‌गद् कंठ से बोला कि हजूर ! इतनो नोई कई ती, भोत हो गओ, खूब किरपा करी।

आचार्य महाराज ने सहज भाव से उसे आशीष दिया अपने आत्म-चिंतन में लीन हो गये। मैं सोचता रहा कि ,इसे मात्र संयोग मानूँ या आचार्य महाराज की अनुकंपा का फल मानूँ। जो भी हुआ, वह मन को प्रभावित करता है।

7. सच्चा अनुग्रह- नैनागिरि में आचार्य महाराज के तीसरे चातुर्मास की स्थापना से पूर्व की बात है। सारा संघ जल-मंदिर में ठहरा हुआ था। वर्षा अभी शुरु नहीं हुई थी। गर्मी बहुत थी। एक दिन जल-मंदिर के बाहर रात्रि के अंतिम प्रहर में सामायिक के समय एक जहरीले कीड़े ने मुझे दंश लिया। बहुत वेदना हुई। सामायिक ठीक से नहीं कर सका। आचार्य महाराज समीप ही थे ओर शांत

भाव से सब देख रहे थे। जैसे-तैसे सुबह हुई। वेदना कम हो गई। हमने आचार्य महाराज के चरणों में निवेदन किया कि वेदना अधिक होने से समता भाव नहीं रह पाया, सामायिक ठीक नहीं हुई।

उन्होंने अत्यंत गंभीरता पूर्वक कहा कि साधु को तो परीषह और उपसर्ग आने पर उसे शांत भाव से सहना चाहिये, तभी तो कर्म-निर्जरा होगी। आवश्यकों में कमी करना भी ठीक नहीं है। समता रखना चाहिये। जाओ, रस परित्याग करना। यही प्रायश्चित है। सभी को आश्चर्य हुआ कि पीड़ा के बावजूद भी इतने करूणावंत आचार्य महाराज ने प्रायश्चित दे दिया।

वास्तव में अपने शिष्य को परीषह-जय सिखाना, शिथिलाचार से दूर रहने की शिक्षा देना और आत्मानुशासित बनाना, यही आचार्य की सच्ची करूणा व सच्चा अनुग्रह है।

8. कर्तव्य बोध- चातुर्मास में पर्युषण पर्व से पहले हम तीन साधुओं की मुनि-दीक्षा सम्पन्न हुई। एक अत्यंत सादगीपूर्ण समारोह में हमें दीक्षा दी गई। हमने आचार्य महाराज के द्वारा दिलाई गई सभी प्रतिज्ञायें दुहराई। जीवन भर उनकी आज्ञा-पालन करने का नियम लिया। दीक्षा लेकर हम उनके पीछे-पीछे पर्वत पर स्थित पार्श्वनाथ जिनालय में पहुँचे। जैसे ही हमने उनके चरणों में माथा टेका, उन्होंने अत्यंत हर्षित होकर हमें आशीष दिया और बड़े गंभीर स्वरों में बोले कि देखा आज जिनेन्द्र भगवान के दिगंबर/निर्ग्रन्थ-लिंग को तुमने अंगीकार किया है। अब इस जिन-लिंग के साथ-साथ अपने अंतरंग परिणामों की संभाल करना तुम्हारा परम कर्तव्य है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ।

आचार्य महाराज का यह कर्तृत्वभाव से मुक्त होकर अपने कर्तव्य का पालन करना, यही अध्यात्म की कुंजी है। अध्यात्म पोथियों या परिभाषाओं तक सीमित नहीं है। आज भी आचार्य महाराज जैसे साधक अध्यात्म को अपने जीवन में प्रतिक्षण जीते हैं।

9. आत्मानुशासन- मुनि दीक्षा के लगभग दो माह बाद ही मैं व्याधिग्रस्त हो गया। आहार में मुश्किल होने लगी। आहार लेते ही वमन हो जाता था। तब आचार्य महाराज स्वयं आहार-चर्या के समय उपस्थित रहते थे। दूर खड़े रहकर भी उनकी अनुकंपा निरंतर बरसती रहती थी। एक दिन आहार प्रारंभ होते ही अंजुली में बाल का संदेह हुआ। सभी ने एक स्वर से कह दिया, बाल नहीं है। शायद अस्वस्थता देखकर लोगों ने झूठ बोला था। मैंने उन संवेदनशील निर्णायक क्षणों में जैसे ही समीप में खड़े आचार्य महाराज की ओर देखा तो वे तत्काल दूसरी और देखने लगे।

मुझे लगा, मानो वे कह रहे हों कि तुम महाव्रती हो। एषणा-समिति तुम्हारा मूलगुण है, निर्णय तुम स्वयं लो। अयाचक सिंह-वृत्ति रखो।

मुझे निर्णय क्या लेना था, बाल था, सौ मैं अंतराय मानकर बैठ गया। वे मुस्कुराये और खूब आशीर्वाद देकर चले गये। पूरा दिन अस्वस्थता के बावजूद भी शांति से बीता।

आत्मीयता के साथ-साथ आत्मानुशासन की शिक्षा देकर आचार्य महाराज ने हम पर असीम उपकार किया।

10. स्थितिकरण- चातुर्मास का समय था। इस बार अध्ययन, मनन के साथ-साथ चार सल्लेखनायें निकट से देखने और अपने जीवन में उनसे शिक्षा लेने का अवसर भी सारे संघ को मिला। बड़ी सजगता और सावधानी का काम था। सल्लेखना साधक की अंतिम परीक्षा है। भावों की संभाल करना और निर्मलता बनायें रखना आसान नहीं है। पूर्वोपार्जित पुण्य, वर्तमान-पुरुषार्थ एवं बाह्य योग संयोग सभी के ठीक-ठीक मिलने पर ही ऐसे कार्य संपन्न होते हैं।

सल्लेखना ग्रहण करने वाले एक साधक के मन में त्याग करने के बाद भी एक दिन आहार के समय सेवफल ग्रहण करने का भाव आ गया। आचार्य महाराज ने सारी बात समझकर निर्देश दे दिया कि इच्छा हो तो दे दो। सेवफल दिया गया,

पर शरीर की अशक्तता के कारण थोड़ा सा ही लिया गया, शेष नीचे गिर गया। साधक का मन इससे बड़ा व्यथित हुआ और आत्म-ग्लानि से भर गया।

उन्होंने आचार्य महाराज के पास पहुँचकर अत्यंत विनम्रता से आलोचना की और जीवनपर्यन्त सभी चीजों का त्याग कर दिया। फिर अंत तक उनका मन शांत व निर्मल बना रहा। उनकी अंतिम सांस महामंत्रोच्चार के साथ निकली। आचार्य महाराज की कृपा और कुशल निर्देशन से उनके भीतर सच्ची विरक्ति उत्पन्न हुई। वे पुनः अपने आप में स्थिर हो गये। आचार्य-महाराज के व्यक्तित्व में समाये श्रेष्ठ निर्यापकत्व गुण को देखकर हम सब श्रद्धावनत हो गये।

11. परम समीप- अहार जी सिद्धक्षेत्र पर चातुर्मास के उपरांत आचार्य विद्यासगर संघ-सहित सिद्धक्षेत्र नैनागिरि आ गये। शीतकाल यही बीत गया। एक दिन अचानक दोपहर में आचार्य महाराज ने बुलाया। मुनि श्री योगसागर जी भी आयें। मैं भी पहुँचा। आचार्य महाराज बोले कि ऐसा सोचा कि तुम दो-तीन साधु मिलकर सागर की ओर विहार करो। वहाँ स्वास्थ लाभ हो जायेगा और धर्म-प्रभावना भी होगी। तुम सभी को अब बाहर रहकर धीरे-धीरे सब बातें सीखनी हैं।

संघ में पहली बार हम लोगों पर यह जिम्मेदारी आई थी, सो हम घबराये कि ऐसा तो कभी सोचा भी नहीं था। हम तो अपना जीवन आचार्य महाराज के चरणों में समर्पित करके निश्चिंत होकर आत्म-कल्याण में लगे थे। कुछ समझ में नहीं आया। गुरु की आज्ञा अनुलंघनीय हुआ करती थी, पर मन को कैसे समझयों ? मन भर आया। हमने कहा कि महाराज जी ! आपसे दूर रहकर हम क्या करेंगे ? कैसे रह पायेंगे ?

आचार्य महाराज गंभीर हो गये। बोले- मन से दूर चले जाओगे क्या ? हमने फौरन कहा कि यह तो कभी संभव ही नहीं। स्वप्न में भी नहीं। तब वे हंसने लगे। बोले कि जाओ हमारा खूब आशीर्वाद है। घबराना नहीं। अध्यात्म में मन लगाना। मेरी आज्ञा में रहना वाला मुझसे दूर रहकर भी मेरे अत्यंत समीप ही है

और आज्ञा नहीं मानने वाला मेरे निकट रहकर भी मुझसे दूर हैं।

आज भी उनसे दूर रहकर भी उन्हें अपने अत्यंत समीप पाते है। कभी दूरी का अहसास नहीं होता। सचमुच गुरु की आज्ञा में रहना ही सच्चा सामीप्य है।

12. कर्तव्य की प्रेरणा- जिनबिंब-प्रतिष्ठा एवं गजनरथ महोत्सव का अयोजन था। अपार जन-समूह के बीच पहली बार आचार्य महाराज ने आर्यिका-दीक्षायें दी। एक ही मंच पर ग्यारह आर्यिका और बारह क्षुल्लक दीक्षायें संपन्न हुई। क्षेत्र की माटी का कण-कण उस दिन महाराज के चरणों में विनत हुआ। सन् 1978 में इसी पावन क्षेत्र पर हमने आचार्य महाराज को अपने चार-पांच शिष्यों के साथ आत्म-साधना में लीन रहते देखा था। आज आठ नौ वर्षो बाद एक साथ छियालीस मुनि, आर्यिका, ऐलक व क्षुल्लक के विशाल परिकर के बीच उन्हें उतना ही निर्लिप्त व आत्मस्थ देखकर मन गदगद हो उठा।

सुबह आचार्य-वंदन के समय अत्यंत भाव-विह्वल होकर हमने कहा कि महाराज जी आज हम सभी के लिये थोड़ा कुछ संदेश दीजिए। उन्होंने क्षण भर हमारी ओर देखकर बड़ी आत्मीयता से कहा कि तुम सभी पुण्यात्मा हो। पूर्व संचित पुण्य के फलस्वरूप एक साथ धर्म-मार्ग पर बढ़ रहे हो। मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति और निवृत्ति का संतुलन हमेशा बनाये रखना। जब प्रवृत्ति करो तो यह मानकर चलना कि सभी एक साथ हैं और मोक्षमार्गी हैं, सो परस्पर सहयोगी बनना, हमारा पहला कर्तव्य है। लेकिन सामायिक के समय सबसे निवृत्त होकर अपने को एकाकी ही मानना और अनुभव करना कि आत्मस्थ होना ही हमारा परम कर्तव्य है। यही हमारा तुम सबके लिये संक्षेप में संदेश है।

सभी ने सुना, मन अत्यंत हर्षित हुआ। उस दिन लगा कि आचार्य महाराज ने जो स्वयं जिया, उसे ही में दिया।

13. सदभाव- पंचकल्याणक पूरे हुये। गजरथ की प्रदक्षिणा होनी थी। दो-तीन लाख लोग क्षेत्र पर उपस्थित हुये थे। यह सब आचार्य महाराज के पुण्य-

प्रताप का फल था। देखते ही देखते यथा समय गजरथ की फेरी संपन्न हो गई ओर महाराज संघ सहित प्रतिष्ठा मंच पर विराज गये। आशीर्वचन सुनने का सभी का मन था।इसी बीच कई लोगों ने एक साथ आकर अत्यंत हर्ष-विभोर होकर कहा कि आज जो भी हुआ, वह अदभुत हुआ है, उसे आपका आशीर्वाद और चमत्कार ही मानना चाहिये।

आज के दिन इतने कम साधनों के बावजूद भी लाखों लोगों के लिये पानी की पूर्ति कर पाना संभव नहीं था। हम सभी व्यवस्था करके हताश हो गये थे। प्रशासन ने चार-पॉच टयूबबैल खोदे थे, किन्तु पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिलने पर वह प्रयास भी निष्फल रहा। टैंकर से पानी की व्यवस्था कहाँ तक पूरी हो पाती, पर जैसे ही गजरथ की फेरी प्रारंभ हुई, गजरथ स्थल के समीप, जहाँ आपके आशीर्वाद से एक ट्यूबबैल खोदा गया था, उसमें खूब पानी निकला। सभी लोगों ने पूरी फेरी होने तक पानी पिया, इस तरह आपके आशीष व कृपा से यह समस्या हल हो गई। चमत्कार हो गया।

आचार्य महाराज ने बड़ी शांति से सारी बात सुनी, फिर अत्यंत निर्लिप्त होकर कहा कि भैया ! धर्म की प्रभावना तो चतुर्विध संघ के द्वारा इस पंचमकाल में निरंतर होती रहेगी, इसमें हमारा क्या है ? जहाँ हजारों-लाखों लोगों की सदभावनायें जुड़ती है वहाँ कठिन से कठिन काम भी आसान हो जाते हैं। भव्य-जीव इस पावन क्षेत्र पर आकर प्यासे कैसे लौट सकते हैं, सभी की प्यास बुझे-ऐसी परस्पर सदभावना ही आज के इस कार्य में सफलता का कारण बनी है, हम तो निमित्त मात्र हैं।

सुनकर सभी दंग रह गये। स्वयं को ख्याति, पूजा, लाभ से बचाये रखने वाले ऐसे निस्पृही आचार्य का समागम मिलना हमारा/सभी का सौभाग्य ही है।

❖❖❖

विलक्षण सूझबूझ के धनी सुरेश जैन आई.ए.एस

❊ राघव जी विदिशा, पूर्व वित्त मंत्री मध्यप्रदेश शासन ❊

कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं हो सकता।
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो ॥

इन प्रसिद्ध पंक्तियों को साकार कर दिखाया विदिशा के तत्कालीन कलेक्टर श्री सुरेश जैन ने सन् 1992 में। विदिशा में स्थित विजया मंदिर प्रक्षेत्र (तथाकथित बीजामण्डल) लम्बे समय से विवाद का विषय था। इस स्थान पर ईद के दिन मुसलमान नमाज अदा कर रहे थे जबकि हिन्दू महासभा का कहना था कि यह प्राचीन काल से मंदिर रहा है अतः इस स्थान को हिन्दुओं को सौंपा जाय। वर्षों तक आंदोलन चला, सत्याग्रह हुये, गिरफ्तारियों हुई, लाठी चार्ज भी हुआ। विवाद को सुलझाने के लिये मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. द्वारका प्रसाद मिश्र ने एक नई ईदगाह बनवा कर विजया मंदिर (बीजा मंडल) में नमाज अदा करना बंद करवा दिया किन्तु मंदिर/मस्तिद का प्रश्न अनुत्तरित ही रहा।

भारत सरकार के पुरातत्व विभाग ने दिनांक 20 सितंबर 1988 को इस प्रक्षेत्र के आंशिक उत्खनन के आदेश जारी किये फिर भी जनवरी 1992 तक किसी भी कलेक्टर ने सांप्रदायिक दंगे की आशंका से उत्खनन कार्य करवाने का साहस नही दिखाया। श्री सुरेश जैन आई.ए.एस. ने जनवरी 1992 को वहाँ की दीवार से उत्खनन कार्य पूरी तैयारी के साथ प्रारंभ कर दिया। किसी वर्ग ने विरोध नही किया। साहसिक निर्णय से पुरातत्व का बहुमूल्य खजाना निरंतर निकलता रहा। वरिष्ठ पत्रकार श्री अशोक मनोरिया ने दैनिक नवभारत के 01.04.1992 के अंक में लिखा यह स्मारक तो विशालतम पुराकोष है विदिशा के प्रसिद्ध इतिहासकार सासंद श्री निरंजन वर्मा ने दैनिक भास्कर के दिनांक 24.031992 के अंक में आक्रांताओं द्वारा बार-बार ध्वस्त विजय मंदिर का उत्खनन आलेख प्रकाशित किया। दैनिक जागरण, दैनिक आचरण, दैनिक

स्वदेश आदि समाचार पत्रों ने भी प्रमुख रूप से समाचार प्रकाशित किये। संवाददाता श्री विनायक सोले ने भी स्वदेश में कुछ सारगर्भित लेख लिखे। यह उल्लेखनीय है कि प्रदेश के सुप्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र स्वदेश ने अपने अंक 23 जनवरी 2020 में श्री विनायक सोले का नया लेख **28 वर्ष पूर्व 23 जनवरी को प्रकट हुआ था** के शीर्षक तथा **दीवार के अंदर दबी निकली हजारों हिन्दू देव प्रतिमायें** के उपशीर्षक से प्रकाशित किया। इस आलेख में सुरेश जी के इस ऐतिहासिक अवदान का निम्नांकित शब्दों में उल्लेख किया गया :-

श्री सुरेश जैन का विदिशा में कलेक्टर के रूप में कार्यकाल केवल चार माह (6 जनवरी 1992 से 10 मई 1992 तक) रहा। कार्यभार संभालते ही उन्होंने आदेश देकर 23 जनवरी 1992 से विजय मंदिर का उत्खनन प्रारंभ कराया। वस्तुतः उत्खनन की अनुमति 20 सिंतबर 1988 को पुरातत्व विभाग ने दे दी थी, लेकिन श्री सुरेश जैन से पूर्व पदस्थ रहे 6 कलेक्टरों ने कानून व्यवस्था बिगड़ने की आशंका व्यक्त करते हुये इस अनुमति को फाइलों में दबाए रखा। श्री जैन ने पदस्थ होते ही साहसपूर्ण निर्णय लेकर उत्खनन के आदेश जारी किये।

श्री सोले ने आगे लिखा है विजयामंदिर उत्खनन के निर्देश देने वाले तत्कालीन कलेक्टर सुरेश जैन ने कहा कि मेरा उद्देश्य मंदिर के रूप में प्राचीन विरासत और इतिहास को प्रकटर कर विदिशा जिले का नाम पुरातत्व की दृष्टि से मध्यप्रदेश के मानचित्र पर अंकित करना है। उत्खनन के दौरान श्री सुरेश जैन ने हिन्दू और मुस्लिम समाज के बीच अविश्वास की दीवार तोड़कर सौहार्द और मेल मिलाप का वातावरण पैदा किया। सभी समाज की भावनाओं की संवेदनशीलता का ध्यान रखकर वर्षों पुराने विवाद का सुखद पटाक्षेप किया।

मेरे राज्य सभा के एक प्रश्न के उत्तर में शासन ने बताया कि उत्खनन में सहस्त्रों की संख्या में हिन्दू देवी देवताओं छोटी बड़ी प्रतिमायें निकली है। दर्शनार्थियों की भीड़ लगती रही। पुरातत्व विशेषज्ञों का यह मानना है कि प्राचीन काल में यहाँ विशाल मंदिर रहा होगा।

अयोध्या में राम जन्म भूमि पर बाबरी मस्जिद एवं विदिशा में विजय मंदिर पर बीजा मंडल दोनों ही काफी साम्य है। विदिशा में विजय मंदिर परिसर का पूर्ण उत्खनन करवाकर विशेषज्ञों से प्राचीन मंदिर का स्केच बनाकर वेसा ही भव्य मंदिर शासन को बनाना चाहिये।

दूसरा ऐतिहासिक कार्य श्री सुरेश जैन ने विदिशा के प्रसिद्ध एवं प्राचीन रामलीला मेला को 16 एकड़ भूमि प्रदान करने का किया। पूर्व में यह निजी भूमि थी जिस पर मेला भरता था। श्री सुरेश जैन ने इस भूमि को सरकार के आधिपत्य में लेकर श्री रामलीला मेला समिति को सौंप दी और भूमि स्वामियों को बदले अन्यत्र भूमि प्रदान की। यह उनकी प्रशासनिक कुशलता का अदभूत नमूना था। मुझे उन्होंने बताया कि कोई कार्य असंभव नहीं होता। आवश्यकता होती है शासकीय नियमों एवं प्रावधानों को अच्छी तरह समझकर उनका सदुपयोग करना। इच्छा शक्ति प्रबल होना चाहिये।

श्री रामलीला मेला समिति के तत्कालीन मानसेवी सचिव श्री रामशंकर मिश्रा एडवोकेट ने समिति प्रतिवेदन में लिखा श्री रामलीला मेला समिति विदिशा श्री सुरेश जैन के अकल्पनीय उदार सहयोग की सदा ऋणी रहेगी। गोवर्धन पीठ जगन्नाथपुरी के जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानंद जी सरस्वती महाराज ने विदिशा मेले में पधारकर श्री सुरेश जैन का अभिनंदन किया।

श्री रामलीला मेला समिति को श्री सुरेश जैन के प्रयासों से अति मूल्यवान 16 एकड़ भूमि प्राप्त हो गई। कलेक्टर श्री रामलीला मेला समिति का पदेन अध्यक्ष है। इसके पूर्व अनेक कलेक्टर आये और चले गये किन्तु किसी ने भी भूमि समस्या का हल निकालने का प्रयास नहीं किया और समस्या ज्यों की त्यों बनी रही। भूमि प्राप्त होने के पश्चात उस भूमि पर करोड़ों रूपयों का निर्माण कार्य अब तक हो चुके है। मेले में दुकान लगाने वाले दुकानदार एवं रामलीला देखने वाले दर्शक अत्यंत प्रसन्न हैं। मेला प्रांगण में अब पचास हजार दर्शकों के बैठने की स्थायी व्यवस्था हो चुकी है।

श्री सुरेश जैन ने तीसरा बड़ा कार्य पं. गोविन्द प्रसाद शास्त्री धर्माधिकारी, अध्यक्ष श्री व्यंकटेश बालाजी मंदिर न्यास के निवेदन पर ग्वालियर स्टेट के इस राजमंदिर के सौंदर्यीकरण हेतु सन्मति पुष्पोद्यान का निर्माण कराया। इस उद्यान के निर्माण से बालाजी के प्रसिद्ध मंदिर का सौंदर्य बहुत बढ़ गया तथा मंदिर की खाली जमीन का सदुपयोग हो गया। अपनी पोस्टिंग की अल्प अवधि में श्री सुरेश जैन ने इस तीन अति कठिन कार्यों के अलावा छोटे मोटे कई कार्य त्वरित निर्णय लेकर क्रियान्वित किये है।

आम तौर पर शासकीय कार्यप्रणाली लालफीता शाही के लिये बदनाम है। किन्तु सुरेश जैन की कार्यप्रणाली दुर्लभ अपवाद रही। उलझनों भरे शासकीय नियमों में से अविलम्ब रास्ता खोजकर उसे अंजाम तक पहुंचाने में श्री सुरेश जैन की विशेषता रही है। मृदुभाषा, शिष्ट व्यवहार, विलक्षण सूझबूझ, कुशल प्रशासक, त्वरित निग्रय एवं शीघ्र क्रियान्वयन, लगन, कर्मठता, उज्वल छवि आदि के कारण वे विदिशा में अति लोकप्रिय कलेक्टर रहे। विदिशा के गौरवशाली इतिहास की छवि को श्री सुरेश जैन ने और अधिक निखारा। इस कारण विदिशा वासी उन्हें विस्मृत कभी नही कर पायेंगे।

नदी के शांत पानी में तो कोई भी नाविक नाव चला लेता है किन्तु तूफान और झंझावात में जो नाव को कुशलता पूर्वक चलाकर किनारे लगा दे वह असाधारण नाविक ही कर सकता है। श्री सुरेश जैन ऐसे ही एक असाधरण नाविक है।

सुरेश जैन द्वारा विदिशा में किये गये कार्य

❊ डॉ. पंकज जैन, विदिशा ❊

प्राचीन काल में दशार्ण देश की राजधानी विदिशा रही है। दो हजार वर्ष से विदिशा जैन संस्कृति का विशाल केन्द्र रहा है। किले अंदर स्थित प्राचीन मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की 400 वर्ष प्राचीन मूर्ति विराजित है। इस प्रतिमा में संवत् 1534 अंकित है। इसी नगर में स्थित उदयगिरि, जो दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ की जन्मकल्याणक भूमि है, पर भगवान नेमिनाथ का समवसरण आयोजित किया गया था। भगवान महावीर का पांचवा वर्षायोग यहीं स्थापित किया गया था। सह सुखद संयोग है कि विदिशा में भगवान नेमिनाथ के समवसरण में विराजमान रहे आचार्य वरदत्तादि पंच महामुनिश्वरों ने नैनागिरि जाकर तपस्या की और नैनागिरि स्थित सिद्धशिला से मोक्ष गये। विदिशा से चलकर भवान महावीर नैनागिरि गये और नैनागिरि (ऋषीन्द्रगिरि-रेशंदीगिरि) में उनका समवसरण आयोजित किया गया।

कर्क रेखा के समीप होने से इस भूमि का विशेष महत्व है। यह उल्लेखनीय है कि नई दिल्ली में कुतुब मीनार के प्रांगण में स्थित 7.21 मीटर ऊंचा लौह स्तंभ उदयगिरि में सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा ईस्वी सन् 402 में बनवाया गया था। यह लौह स्तंभ असाधारण है और धातुकर्म, अभियांत्रिकी और कला में भारतीय कौशल का प्रतीक है। वर्ष 1233 ईस्वी मे सुल्तान इस्तुतमिश इस लौह स्तंभ को विदिशा से दिल्ली ले गया था। सम्राट अशोक के समय से उदयगिरि खगोल विज्ञान के अध्ययन और शोध केन्द्र के रूप में विख्यात रहा है। उदयगिरि खगोल विज्ञान के प्रेक्षणो के लिये भी प्रसिद्ध रहा हैं।

उदयगिरि पर्वत श्रृंखला में स्थित 20 प्राचीन गुप्तकालीन गुफायें हैं, जो हिन्दु और जैन मूर्तियों के लिये प्रख्यात है। यहाँ पर भगवान शीतलनाथ के चरण तथा शिलालेख उत्कीर्ण किये गये है। वर्तमान में अनेक पर्यटक खगोल की दृष्टि से महत्वपूर्ण उदयगिरि जैसी जगहों या वैधशालाओं की यात्रा में दिलचस्पी रखते

हैं। शहर से दूर उदयगिरि जैसे निर्जन स्थानों पर आकाश के नजारों को देखने के लिये स्टार-पार्टियाँ आयोजित करते हैं। इनका लुत्फ उठाते हैं। पूर्ण सूर्य ग्रहण देखने के लिये दूर दराज की यात्रा करते हैं।

विदिशा के कलेक्टर सुरेश जैन के विशेष निवेदन पर आचार्य विद्यासागर जी ने सन् 1942 में पूज्य मुनि क्षमासागर जी, पूज्य मुनि समतासागर जी और पूज्य मुनि प्रमाण सागर जी महाराज को विदिशा में चातुर्मास हेतु अनुमति प्रदान की थी। विदिशा के इतिहास में सर्वप्रथम श्री सुरेश जैन कलेक्टर के सक्षम और कुशल नेतृत्व में विदिशा के पूरे जिला प्रशासन और सभी समाजों ने पूज्य मुनि संघ का प्रभावी ढंग से स्वागत एवं सम्मान किया था, जो आज तक लोगों को याद है।

स्वामी विवेकांनद ने रामकृष्ण मिशन-बैलूर मठ की स्थापना, गंगा जी के तट पर की थी। इससे प्रेरणा लेकर श्री सुरेश जैन ने विदिशा नगर में बहती बैस नदी के किनारे और उदयगिरि की प्राकृतिक सुरम्य श्रृंखलाओं से लगी हुई **56 वीघा भूमि** का चयन स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ किया था और यह भूमि श्री शीतल विहार न्यास के पक्ष में हस्तांतरित कराई थी। वर्ष 1992 में मुनिवर क्षमासागर जी, समतासागर जी और प्रमाणसागरजी ने इस भूमि को अपनी पावन रज से पवित्र किया था। यह भी उल्लेखनीय है कि इसी भूमि पर वर्ष 1998 में पूज्य समतासागर जी, पूज्य प्रमाणसागर जी महाराज ने चातुर्मास किया था। वर्तमान में इस भूमि पर गौशाला चल रही है जिसमें 500-600 पशुओं का पालन किया जा रहा है। सुरेश जैन श्री शीतल विहार न्यास के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

सन् 1055 में प्रतिष्ठित भगवान संभवनाथ की विशाल प्रतिमा श्री सुरेश जैन, आई.ए.एस. कलेक्टर, विदिशा द्वारा सन् 1992 में धर्मपुर के निर्जन वन से उठवाकर नसियॉ को सौंपी गई है। इस सराहनीय कार्य के लिये श्री जैन को पूरी जैन समाज ने उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है और मंदिर में शिलापट लगाई गई है।

श्रीमंत सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन ऐजूकेशन सोसायटी, विदिशा, जिसकी संस्थाओं में 20,000 से अधिक छात्र अध्ययन कर रहे हैं, के सुरेश जी प्रमुख सलाहकार है। उन्होंने इस संस्थान की संपत्तियों के संरक्षण और संस्थान द्वारा स्थापित विद्यालयों के चतुर्मुखी शैक्षणिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।

अपना अमूल्य सहयोग देकर विदिशा के गौरवशाली इतिहास को आगे बढ़ाने विदिशा के लोकप्रिय कलेक्टर रहे। श्री सुरेश जैन का महत्वपूर्ण योगदान है, जिनके अति सफल एवं गौरवशाली कार्यकाल को विदिशा की जनता कभी नहीं भूल सकती है। जैन एवं जैनेत्तर समाज के बीच श्री सुरेश जैन का नाम आज भी गौरव एवं आत्मीयता से लिया जाता है। उनके प्रयास से विदिशा की जनता को अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हुई हैं। अतः श्री सुरेश जैन का विदिशा की जनता के दिलों में सदैव स्थान रहेगा।

❖❖❖

श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस)

जैन तीर्थ नैनागिरि जिला छतरपुर म.प्र., में जन्में श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) एम.कॉम. और एल.एल.बी हैं। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं। जैन रत्न और समाज भूषण जैसी विभिन्न राष्ट्रीय उपाधियों से विभूषित है। सेवानिवृत्ति के पश्चात भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय में मध्यप्रदेश राज्य विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति के अध्यक्ष के पद पर 6 वर्ष तक पदासीन रहे है। मध्यप्रदेश सरकार के वरिष्ठ प्रशासनिक पदों पर सुदीर्घ काल तक अपनी सेवायें प्रदान कर चुके हैं। सरकार के विभिन्न विभागों की विधि संहिताओं के साथ-साथ आप बड़े भाई की पाती के यशस्वी लेखक एवं भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा 2018 में प्रकाशित छंदोदय और 2020 में प्रकाशित बाबा दौलतराम वर्णी की 16 रचनायें के प्रबंध संपादक हैं। आपने अंतराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के अनेक सेमिनारों और ई-संगोष्ठियों में सहभागिता की है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर शोध-पत्रों का वाचन किया है। आपके 100 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। व्यक्तित्व विकास एवं ज्वलंत सामाजिक संदर्भों पर शताधिक लेख और निबंध प्रकाशित हो चुके है।

विभिन्न धार्मिक स्थलों और संस्थाओं के संरक्षण एवं विकास में आपने अत्यधिक सराहनीय सहयोग प्रदान किया हैं। वे अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई के पांच वर्ष तक मंत्री रहे हैं। दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि के अध्यक्ष एवं आचार्य विद्यासागर प्रबंध विज्ञान संस्थान भोपाल के संस्थापक हैं। उन्होंने संस्थापक और प्रबंध संचालक के रूप में इस संस्थान का 25 वर्षों तक सफल संचालन किया है। नैनागिरि और तिन्सी में स्थित जैन विद्यालयों के वे संस्थापक है। उन्होंने अखिल भारत वर्षीय प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर, जीतो मुम्बई और कामयाब दिल्ली के संस्थापन में आधारभूत एवं सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया है। संघ लोक सेवा आयोग आदि की प्रतियोगिता परीक्षा देने वाले छात्रों को सतत मार्गदर्शन दे रहे हैं।